



Issue : XV, Vol. II
UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

IMPACT FACTOR
4.22

ISSN 2229-4436
Sept. 2017 To Feb. 2018

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	Pollens and Allergens - A threat to Humanity Nishikant S. Lokhande	1
2	The Consumption of Crude Oil in Indian Economic Growth Dr. Baljit Kaur R. Oberoi	18
3	A Study Of Symbolism In Girish karnad's Play Tughlaq Anant Janardhan Somuse	23
4	Element of Revolt in Kamala Das's Autobiography - My Story Atish A. Aakade	27
5	E-Libraries in India Pramod M. Ingale	32
6	Social Awareness and Yoga Dr. Abhijit S. More	38
7	Provisions and Challenges for Legal-Literacy in India Prof. Prashantkumar Wananje	43
8	हिंदी और मराठी भाषा का शाब्दिक अंतःसंग्रह डॉ. रमाकांत मोहनराव विठवे	47
9	किशोरावस्थेतील मुलामुलींची व्यावसायिक समस्येसंबंधी जाणीव जागृती एक अध्ययन डॉ. माधुरी बाय. नासरे	50
10	हैद्राबाद मुक्ती संग्रामातील स्त्री कर्तृत्वाचा एक अभ्यास योगेश मधुकर घव्हाण	56

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukherd, Dist. Nanded



Issue : XV, Vol. II

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

IMPACT FACTOR
4.22

ISSN 2229-4406

Sept. 2017 To Feb. 2018

47

8

हिंदी और मराठी भाषा का शाब्दिक अंतःसंबंध

डॉ. रमाकांत मोहनराव विडवे

हिंदी विभाग,

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,

मुकामबाद, जि. नांदेड

Research Paper - Hindi

हिंदी भाषा समुचे विश्व में सर्वाधिक बोली जानेवाली भाषा के रूप में विद्यमान है। हिंदी भाषा अपने आप में एक सामर्थ्यशाली भाषा है। हिंदी भाषा की अनेक विशेषताएँ बताई जाती हैं जैसे ग्रहणशीलता, सहिष्णुता, चेतना आदि। इन्हीं विशेषताओं से ओत-प्रोत हिंदी भाषा का विकास हो गया है। हिंदी भाषा के विकास में अन्य भाषा के साथ-साथ मराठी भाषा का भी योगदान रहा है। मराठी भाषा में प्रचलित अनेक शब्दों का हिंदी भाषा में उपयोग होता है। इसलिए हिंदी और मराठी भाषा का शाब्दिक अंतःसंबंध इस विषय पर शोधालेख लिखने का प्रयास किया है।

अनेक लोगों द्वारा कहा जाता है कि, हिंदी में अब सामर्थ्य कहा रह गया है? हिंदी के शब्द कहीं हैं। ऐसे कई सवाल खड़े करते हैं उनके लिए मेरा कहाना है कि, विज्ञान, तकनीक, विधि, प्रशासन आदि हिंदी के साथ-साथ अन्य भाषाओं के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। हिंदी भाषा के क्षमता पर सवाल खड़े करने वाले यह ध्यान दे कि, भाषा को बनाया नहीं जाता बल्कि भाषा अपने बल पर अपने आप बनती है और हमें बनाने का सामर्थ्य भाषा में होता है। हिंदी भाषा की विशेषता के अंतर्गत ग्रहणशीलता यह एक विशेषता है। हिंदी भाषा ने मराठी भाषा में प्रचलित अनेक मराठी शब्द प्रयुक्त हुए हैं। मराठी और हिंदी भाषा में प्रयुक्त होनेवाले ऐसे कई शब्द हैं जो विज्ञान, तकनीकी, विधि, प्रशासन आदि अनेक क्षेत्रों में उपयोग में लाए जाते हैं।

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



हिंदी भाषा और मराठी भाषा में कई शब्द ऐसे हैं जो दोनों भाषाओं के अंतःसंबंधों को स्पष्ट करते हैं। जैसे अचानक यह शब्द हिंदी में भी प्रयुक्त है और 'अचानक' वही शब्द मराठी में भी प्रयोग किया जाता है। इसी तरह ऐसे अनेक शब्द हैं जो दोनों भाषाओं में उपयोग किए जाते हैं। जैसे - अजयन-अजयन, अर्थात-अर्थात, अनुभव-अनुभव, आकर्षण-आकर्षण, आज-आज, आजकाल-आजकाल, स्मृति-स्मृति, आत्मविश्वास-आत्मविश्वास, आज्ञा-आज्ञा, प्रादोदन-प्रादोदन, इच्छा-इच्छा, उत्तार-उत्तार, उत्तम-उत्तम, उत्साह-उत्साह, उत्सुक-उत्सुक, उपाय-उपाय, एकरूप-एकरूप, ऐक्य-ऐक्य, परिचय-परिचय, कर्मचारी-कर्मचारी, कल्पना-कल्पना, कर्म-कर्म, कामकाज-कामकाज, कायदा-कायदा, कार्यक्रम-कार्यक्रम, कार्यालय-कार्यालय, किमती-कीमती, किराणा-किराणा, कुंड-कुंड, कृपा-कृपा, केवल-केवल, खर्च-खर्च, खास-खास, खुश-खुश, खेल-खेल, खोखो-खो खो, गजरा-गजरा, गणपती-गणपती, गरम-गरम, गाढ़-गाढ़, देश-देश, गुडगुडीगुडगुडी, गौरव-गौरव, ग्राहक-ग्राहक, चपळ-चपळ, चर्चा-चर्चा, चादर-चादर, चार-चार, घास-घास, चित्र-चित्र, चित्रकला-चित्रकला, चित्रपट-चित्रपट, विवडा-विवडा, चूक-चूक, छटा-छटा, छत-छत, छाती-छाती, छोटा-छोटा, जरूरी-जरूरी, जरा-जरा, जंगल-जंगल, जादातर-ज्यादातर, झटपट-झटपट, टेबल-टेबल, ठीक-ठीक, तरुण-तरुण, तंत्र-तंत्र, ताजा-ताजा, तीन-तीन, तू-तू, तृप्त-तृप्त, त्रिवेणीसंगम-त्रिवेणीसंगम, त्रैमासिक-त्रैमासिक, दर्जा-दर्जा, दुकान-दुकान, दूसरा-दूसरा, दूध-दूध, दृष्टि-दृष्टि, दौरा-दौरा, धन्य-धन्य, लक्ष्य-लक्ष्य, आदर्श-आदर्श, नमस्कार-नमस्कार, नाच-नाच, नाटक-नाटक, निमित्त-निमित्त, निर्णय-निर्णय, निश्चित-निश्चित, पट्टा-पट्टा, पत्र-पत्र, पालक-पालक, पाव-पाव, पुस्तक-पुस्तक, पृथ्वी-पृथ्वी, प्रकार-प्रकार, प्रगति-प्रगति, प्रबंध-प्रबंध, प्रयत्न-प्रयत्न, प्रवाह-प्रवाह, प्राण-प्राण, प्रेम-प्रेम, प्रोत्साहन-प्रोत्साहन, फाइल-फाइल, बदल-बदल, बहुता-बहुता, बर्फ-बर्फ, बाजार-बाजार, बाजू-बाजू, बाबा-बाबा, बैठक-बैठक, भयंकर-भयंकर, भरपूर-भरपूर, भाव-भाव, भाषण-भाषण, मधुर-मधुर, महत्त्व-महत्त्व, मार्ग-मार्ग, मार्गदर्शन-मार्गदर्शन, मित्र-मित्र, मूर्ति-मूर्ति, यशस्वी-यशस्वी, रत्न-रत्न, रस्ता-रस्ता, रंगमंच-रंगमंच, रूप-रूप, लयबद्ध-लयबद्ध, वचन-वचन, वर्ष-वर्ष, वाद-वाद, वास्तव-वास्तव, विचार-विचार, विजेता-विजेता, विनोदी-विनोदी, विश्रांती-विश्रांती, शपथ-शपथ, शासन-शासन, सचिव-सचिव, सत्य-सत्य, सभा-सभा, समाजकार्य-समाजकार्य, समाधान-समाधान, संकुचित-संकुचित, संख्या-संख्या, संपर्क-संपर्क, सार्वजनिक-सार्वजनिक, साक्षर-साक्षर, स्थिती-स्थिती, स्वरूप-स्वरूप, स्वार्थी-स्वार्थी, हस्तलिखित-हस्तलिखित आदि।

इसप्रकार हिंदी और मराठी भाषा में उपरोक्त बताए हुए संकेतों शब्द प्रयोग होते हैं।

PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



दो शब्दों का उच्चारण एवं अर्थ लगभग समान होता है लेकिन कुछ शब्द ऐसे भी हैं जो उच्चारण एकजैसा होता है लेकिन अर्थ अलग-अलग होता है। शब्दों की ध्वनी और वर्तनी भिन्न-भिन्न होती है या कुछ शब्दों की समान भी होती है। भाषा के विकास के लिए दूसरी भाषा के शब्दों को अपनाया गया है। दूसरी भाषा के शब्दों का प्रयोग कर ऐसी स्थिति उत्पन्न होती है कि, दोनो भाषाओं में अंतःसंबंध बढ़ता है। हिंदी में मराठी के साथ-साथ कई भाषाओं के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। मराठी और हिंदी भाषा में उच्चारण और ध्वनि समान होने के बावजूद अर्थ में भिन्नता पाई जाती है। हिंदी और मराठी भाषा का अंतःसंबंध गहरा रहा है। क्योंकि दोनों भी आर्यभाषाएँ हैं तथा दोनों की देवनागरी लिपि होने के कारण दोनों में अंतःसंबंधों का गहरापन और भी दृढ़ हुआ है। इस संबंध में मराठी के सुप्रसिद्ध विद्वान डॉ. दामोदर खडसे कहते हैं कि, " भारतीय भाषाओं के साहित्य का आपस में अनुवाद होना आवश्यक है। इसमें हिंदी का प्रभाव क्षेत्र अधिक महत्त्व रखता है। उन्होंने मराठी-हिंदी भाषा का अंतःसंबंध का हवाला देते हुए कहा, दोनो आर्य परिवार की भाषाएँ हैं। दोनों की लिपि एक देवनागरी ही है। महाराष्ट्र उत्तर और दक्षिण को जोड़ने का कार्य करता है।"

हिंदी के कई साहित्यिक हैं जिन्होंने मराठी भाषा का प्रचुर मात्रा में उपयोग किया है जिनमें भारतेन्दु हरिश्चंद्र और हजारी प्रसाद द्विवेदी जी का नाम लिया जा सकता है। इन दोनों हिंदी साहित्यकारों को मराठी भाषा का गहरा ज्ञान था और उसका उपयोग उन्होंने हिंदी साहित्य सृजन करने के लिए किया है। इसके साथ-साथ मराठी भाषिक होते हुए भी माधवराव सप्रे जी ने हिंदी साहित्य की सेवा की है। मूल में मराठी भाषिक होते हुए भी हिंदी में साहित्य सृजन कर हिंदी और मराठी के अंतःसंबंध को गहरा रूप देने का कार्य साहित्यकारों ने किया है। शाब्दिक प्रयोग से भी हिंदी-मराठी भाषा का अंतःसंबंध स्पष्ट होता है और साहित्यिक दृष्टि से भी हिंदी मराठी का अंतः संबंध स्पष्ट किया जाता है।

संदर्भ सूची :-

1. भाषा विज्ञान - भोलानाथ तिवारी
2. भाषा अतः सूत्र आणि व्यवहार - मुरलीधर मानसे
3. भाषा विज्ञान और हिंदी भाषा का स्वरूप-विकास - डॉ. देवेन्द्र प्रसाद सिंह

PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist. Nanded



Issue : XI, Vol. I


IAP

**IMPACT FACTOR
5.60**

**ISSN 2348-5825
April 2018 To Sept. 2018**

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	Studies on Effect of different Culture Filtrates of fusarium species on shoot of Legume R. S. Bajgire	1
2	Physico-Chemical Parameter of Nanda Village Pond in bhokar Tahshil of Nanded District V. B. Rathod, P. R. Totawar	6
3	The Study of Nissim Ezekiel's Philosophy and Psychology R. H. Sagar	12
4	Geopolitical History of Aundh State Dr. S. G. Shinde	19
5	Evaluation of Sports Fitness in Contemporary Situation Dr. R. P. Karanjkar	29
6	The study of Zooplankton Diversity for Indicator Species and Pollution Status of Rena river at Mahapur Dist. Latur Maharashtra D. P. Katore	33
7	वात्सल्य रस के सम्राट - सुरदास डॉ. रमाकांत मोहनराव विडगे	38
8	डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांची धर्मातराची भूमिका योगेश मधुकर चव्हाण	42
9	विदर्भातील जमिनी आणि त्यांचे व्यवस्थापन डॉ. संतोष उध्दवराव घामने	48
10	स्त्री भ्रूणहत्या आणि सामाजिक न्याय प्रा. प्रशांतकुमार वनंजे	57


PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed Dist. Nanded



वात्सल्य रस के सम्राट - सुरदास

डॉ. रमाकांत मोहनराव निजने
हिन्दी विभाग,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुकामबाद, जि. नांदेड

भक्त शिरोमणि महाकवि सुरदास भक्तिकाल के रामुण शाखा के कृष्ण काव्य के प्रमुख प्रवृत्तक माने जाते हैं। हिन्दी साहित्य में कृष्ण भक्ति की अजर अश्व घास को पचाहित करनेवाले भक्त कवियों में सुरदास का स्थान मूर्धन्य है। सुरदास वात्सल्य रस के अप्रतिम कवि कहे जाते हैं। इस संदर्भ में रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं - "वात्सल्य और शृंगार के क्षेत्रों का जितना अधिक उद्घाटन सुर ने अपनी मंद आँखों से किया, उतना किसी और कवि ने नहीं। इन क्षेत्रों का कोना-कोना घेँझोंक आए।" उक्त दोनों रसों के प्रवृत्तक रतिभाव की जितनी मानसिक कृतियों और दशाओं का अनुभव सुरदास कर सके हैं, उतना और कोई नहीं। सुरदास को वात्सल्य के क्षेत्र में अद्वितीय कवि मानते हुये आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन है- "वात्सल्य के क्षेत्र में जहाँ तक इनकी दृष्टि पहुँची वहाँ तक किसी कवि की नहीं।"

सुरदास के रचना-संसार वात्सल्य और शृंगार की चरंगे विविधमुखी है। लगता है कि जिस अभाव के कारण सुरदास की कवि-आत्मा विनय की पदों में बिलखती नजर आती है- जैसी "वात्सल्य एवं शृंगार के आलंबन श्रीकृष्ण के रूप में उसकी पूर्ति होने पर वह उल्लासित और तरंगित हो उठती है।" वात्सल्य रस को शृंगार का ही एक अंग माना गया है। शृंगार के समान वात्सल्य के भी दो मुख्य भेद किया जा सकता है, संयोग वात्सल्य और वियोग वात्सल्य। सुरदास के काव्य में दोनों ही भेदों का वात्सल्य परिपाक की अवस्था तक पहुँचा है।

सुरदास वात्सल्य भाव का वर्णन अत्यंत मार्मिक एवं सजीवता के साथ किया है। सुरदास के अंतर्गत वात्सल्य भाव की यह अनुभूति अत्यंत गहन एवं गंभीर दिखाई देती है। इसलिए सुरदास का वात्सल्य-वर्णन हिन्दी साहित्य क्षेत्र में अनुपम एवं अद्वितीय माना जाता है। तुलसी आदि उच्च कोटी के कवि भी उतना सरस एवं प्रभावोत्पादक वर्णन नहीं कर सके।

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist Nanded



डॉ. हरिवंशलाल शर्मा कहते हैं कि 'सूर का वात्सल्य भाव भी विश्वसाहित्य में अपना विशेष स्थान रखता है' कहकर सूर के वात्सल्य की सराहना की है।

सूरदास का वात्सल्य वर्णन हिन्दी साहित्य की अनुपम विधि है। सूर बाल-लीला एवं वात्सल्य वर्णन में बेजोड़ है इस संदर्भ में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी लिखते हैं- 'बाल-स्वभाव के वर्णन में सूरदास बेजोड़ समझे जाते हैं बालस्वभाव चित्रण में वे एवं तरह का अपनापन अनुभव करने जान पड़ते हैं और ठीक उसी प्रकार मातृ-हृदय का मर्म भी समझ लेते हैं।' सूर ने बालको की सहज मनोगतियों के स्वाभाविक चित्र अंकित करते हुये वात्सल्य के संयोग पक्ष का बड़ा ही मार्मिक एवं मनोहारी वर्णन किया है। माता यशोदा और पिता नंद के मातृ-पितृ हृदय की भावनाओं को अपने पदों में सुंदर माता की तरह गूँव दिया है।

सूरदास ने कृष्ण के बाल विकास के सभी अवस्थाओं को सुंदर ढंग से चित्रित किया है। कृष्ण का जब जन्म होता है, तब कवि स्वयं उस आनंदोत्सव में नंद के घर शामिल हो जाते हैं और कहते हैं-

"ब्रज भयो महर के पूत जब ये बात सुनी।

सुनि आनंदे सब लोग गोकुल गनक गुनी।"

बालक कृष्ण अभी बहुत छोटा है, सूरदास की अंधी आँखें अपने इष्टदेव कृष्ण को पालने में झुलते देखती हैं। माता यशोदा अपने पुत्र को झुला रही हैं-

"यशोदा हरि पालनौ झुलाई।

हलरावे, दुलराइ मल्हावे, जोई-सोई कछू गावे।

मेरे लाल को आउ निंदरिया, कोहे न आनि सुवावे

तू काहे नहिं बेगहिं आवै, ताकौ कान्हा बुलावे।"

माता यशोदा लोरी गा-गाका बालक कृष्ण को सुलाने की कोशिश कर रही है, लेकिन कृष्ण को नींद नहीं आ रही है।

बालक कृष्ण थोड़े और बड़े हुए तो उनकी शारीरिक प्रवृत्तियाँ बढ़ने लगी। घुटनों के बल चलना, अंगुली पकड़कर खड़ा होना, गिर पडना, दुध के दो दांत दिखाई देना आदि। थोड़ा और शारीरिक विकास होने पर बालक कृष्ण धरती पर दो-दो कदम चलने का प्रयास करता है। गिरता है उठता है। बालक कृष्ण की इन सहज गतिविधियों का सूरदास सुंदर चित्रण किया है-

"कान्हा चलत पग द्वे द्वे धरनी।

जो मन में अभिलाष करत ही सो देखत नंदरानी।"

सूरदास ने कृष्ण की बाल छवि के रमणीय चित्रों के अतिरिक्त कृष्ण की बाल सुलन चेष्टाओं एवं विविध क्रिडाओं के भी अत्यंत स्वाभाविक एवं मनोमुग्धकारी चित्र अंकित किये हैं, जिनमें कहीं कृष्ण घुटनों के बल आंगन में चल रहे हैं। कहीं मुख पर दधि लेप करके दौड़ रहे हैं, तो कहीं अपने प्रतिबिंब को निहार रहे हैं। कहीं अपने पैर का अंगुठा पी रहे हैं, कहीं हंस्तते हुये किलकारी भर रहे हैं। इस संदर्भ में निम्न वंशुओं ने सूर की बाल-लीला वर्णन की अकुण्ठ मन से सराहना करते हुए लिखा है- 'जैसा उत्तम और सच्चा बाल चरित्र इस महाकविने लिखा है, वैसा संसार भर के किसी ग्रंथ में हम लोगों ने अद्यावधि नहीं देखा। माता यशोदा से मायून माँगा जाना, माता द्वारा बालक का लालन-पालन होना, माता का समझाना, धोरी गान



के बहाने दूध पिलाना इत्यादी वर्णन ऐसे सच्चे ढंग से कहे गए हैं कि ज्ञान यज्ञता है कि यद्यपि कोई बालक माता के परा खेल रहा है।" कृष्ण कहीं हेराते हुए किलकारी भर रहे हैं। माता यशोदा बालक कृष्ण को चलना सिखा रही है, किन्तु वे अपनी बाल-सुलभ प्रवृत्ति के साथ कैसा अपने हाथ माता को पकड़ते हैं, तथा किरा तरह डगमगा रो हुये आगे बढ़ते इसी सूरदास ने इस तरह चित्रित किया है

"सिखवत चलन जसोदा पैया।

अखराह कर पानि गहावल, डगमगाई भरनी घरे पैया।"

माता यशोदा कृष्ण को नृत्य करने के लिए नन्दा को नृत्य-नृत्यकर बोलती है, लेकिन कृष्ण हठ कर बैठते हैं, जब तो घर दिखती-या वाहिए तभी यशोदा बड़ती थिडिया दिखाकर बालक का ध्यान बँटाना चाहती है लेकिन कृष्ण नन्दा को हाथ में लेने के लिए जिन कर रहे हैं, तभी यशोदा कान में पानी भरकर नन्दा का धिन दिखाती है जैसे-

"जल-फूट आनि पसनि पर सख्यों गहिआयो नन्दा दिखाये।

सूरदास प्रभू हेसि पुराकाने, बार-बार दोड कर जये।"

कृष्ण का पुरा-पुराकर मनखन खाना उनकी जिन्दा का अंग बन गया। एक दिन मन्खन खाते पकड़े गये तो कहने लगे - "मैया में नहीं माखन खायों।" ख्याल पर ये सखा सदे मिलि मेरे मुख लपटायो।"

जैसे-जैसे बालक कृष्ण का शरीर बढ़ता है, तो उसका मान भी विकसित होने लगता है। जब बालक कृष्ण की चोटी बढ़ी नहीं दिखाई देती तब माता यशोदा से फुट बैठते हैं- "मैया कबडि बढ़ेगी चोटी।" एक दिन बलराम ने अपने छोटे भाई को खून शिजाया संख्या को घर आते ही कृष्ण ने माता से बलराम की शिकायत कर डाली इस गोत्रेण पर सूरदास और भक्तजन न्यायकार हैं, जैसे "मैया मोडि दाऊ बहुत खिजायो।"

सूरदास ने उक्त वर्णनों के अतिरिक्त कृष्ण के गो-दोहन के लिए मचलने, गौओं को दुहने गोचारण के लिए वन में जाने की हठ करने, गो-चराने के लिए वन में जाते, वन में माता द्वारा छाछ निजदाने आदि का वर्णन करके वात्सल्य मान की सुंदर अभिव्यक्ति की है।

सूरदास ने अत्यंत सभ्य होकर कृष्ण की बाल-लीला एवं क्रिडाओं की मनोरम झॉकियों अंकित करते हुये वात्सल्य के संयोग पक्ष का अत्यंत मर्मस्पर्शी वर्णन किया है, उसी तरह वात्सल्य के वियोग पक्ष का भी अत्यंत हृदयद्रावक चित्रण किया है।


श्रीकृष्ण के मथुरा गगन पर सूर स्वयं यशोदा के रूप में अपनी आँखों से आंसू बहाते हुये रो रहे हैं, और उनके प्रत्येक शब्द से वात्सल्य का अजस्र स्वांत उमड रहा है, क्योंकि श्रीकृष्ण के मथुरा जाने का समाचार मिलते ही माता यशोदा के हृदय से वात्सल्य का स्त्रोत इस तरह उमड पडता है और माता का रोम रोम यह फुहार उडता है जैसे -

"जसोदा बार-बार यों भाये।

हे कोई बज म हिंू हमारो, चलन गोपाल हि राखे।

कहाँ करे मेरे अंगन गगन को नूप नद्युपुरी बुलायो।

सफलक रूप मेरे पान खान को काज रूप सोई आयो।"



PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tal. Mukhed Dist. Nanded



इन्ते सोने पर भी माता यशोदा की बात कोई नहीं सुनता और श्रीकृष्ण को मथुरा जाने से कोई नहीं रोकता। माता यशोदा का हृदय विभोग जन्म वात्सल्य के प्रबल वेग को सहन नहीं कर पाता। सूरदास ने यशोदा के मातृ हृदय की वात्सल्य गयी झोंकी उसी समय बड़ी तन्मयता के साथ अंकित की है जिस समय मन्द अकेले ही मथुरा से लौटते हैं और माता यशोदा उन्हें द्वारपर अकेला खड़ा देखकर क्षोभ के मारे व्याकुल हो उठती है और पुत्र के बारे में पुछती है -

*जसुदा कान्ह-कान्ह के बुझे।

फूटि न गई तुम्हारी चारों, कैरो मारग सूझे।*

माता यशोदा रात-दिन पागल सी रहती है उसे अपने लाल (कृष्ण) के खान-पान, रहन-सहन आदि की चिंता सता रही है, क्यों कि अपने बिना उसे इस संसार में कोई नहीं दिखाई देता, जो प्रिय पुत्र की आदतों को जानता हो। इसलिए यशोदा अपने लाडिले कृष्ण कि विभोग में व्याकुल है। इसलिए वह पुकार उठती है- जैसे

*संदेसो देवकी सो कहियो।

हैं तो घाम तिहारे सुत की माया करती ही रहियो।*

यहाँ माता के हृदय उक्त कथन में एक सार्वभौम एवं शाश्वत तथ्य का निरूपण हुआ है, जिसमें माता के हृदय की मनोवैज्ञानिक एवं स्वाभाविक झोंकी अंकित की गयी है।

निष्कर्ष :

निष्कर्ष रूप में कहा जाता है कि सूरदास ने वात्सल्य का बड़ा ही हृदयस्पर्शी वर्णन किया है, जिसमें बालोपित घेष्ठाओं एवं क्रिडाओं के अतिरिक्त मातृ-हृदय का भी बड़ी ही, मनोरम व्यंजना हुयी है। वात्सल्य भाव की भक्ति सर्वोपरि मानी गयी है। वात्सल्य भक्ति में मातृहृदय की सरल एवं स्वाभाविक परिणति के दर्शन होते हैं। इतना ही नहीं सूरदास के इस वात्सल्य वर्णन में तन्मयता एवं स्वाभाविकता के साथ मनोवैज्ञानिकता और सरलता है। इसमें सहज आकर्षण और हृदय को आकृष्ट करने की पूर्ण क्षमता है। इसमें शिशु जीवन की एक उत्साह एवं उमंग भरी शाश्वत झोंकी अंकित है। इसलिए, सूरदास को वात्सल्य रस के संसाट कहा जाता है।

संदर्भ संकेत :-

- 1) आचार्य रामचंद्र शुक्ल - सूरदास
- 2) डॉ. अमय शुक्ल - भक्तिकाल और हिन्दी आलोचना
- 3) हजारी प्रसाद द्विवेदी - सूरसाहित्य
- 4) डॉ. माधव सोनटक्के, डॉ. सुकुमार भंडारी - मध्यकालीन काव्य
- 5) मिथ बंधु - हिन्दी नवरत्न
- 6) डॉ. राजेश्वर प्रसाद चतुर्वेदी - भ्रमरगीर सार
- 7) सूरदास - सूरसागर
- 8) डॉ. हरिवरण वर्मा - मध्यकालीन काव्य

(Signature)

Kale J.P.



Pathri Taluka Shikshan Prasarak Mandal's
**KATRUWAR ARTS, RATANLAL KABRA SCIENCE &
B. R. MANTRI COMMERCE COLLEGE,**

Manwath – 431 505 Dist. Parbhani
(NAAC Reaccredited 'B' Grade with 2.65 CGPA)

University Grants Commission, WRO, Pune Sponsored

Two Days National Seminar

ON 21 & 22 APRIL, 2017

Issues of Farmers' Suicides in India: Past, Present and Future

Special Issue of an International

**SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR
INTERDISCIPLINARY STUDIES**

IMPACT FACTOR SJIF (2015) – 5.403

Chief Editor

Principal Dr. A. B. Chindurwar

Editor

Dr. T. V. Munde

Editorial Board

Dr. K. B. Patole

Dr. S. K. Shinde

Dr. Sharda Raut

Dr. P. S. Landage

Sunita Kukade

V. P. Jadhav

Dr. C. P. Vyas

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed, Dist. Nanded



Copyright © Authors, APRIL 2017

ISSN - 2278 - 8768

ISSN-ISSN 2278-8768 (2017) - 4-168

Special Issue on Issues of Farmers' Activities in India : Past,
Present and Future

APRIL 2016, 2017 Volume - 4, Issue - 07

Disclaimer: We do not warrant the accuracy or completeness of the information, text, graphics, links or other items contained within these articles. We accept no liability for any loss, damage or inconvenience caused as a result of reliance on such content. Only the author is the authority for the subjective content and may be contacted. Any specific advice or help is given in any content is the personal opinion of the author and is not necessarily subscribed to by anyone else.

Warning: No part of this book shall be reproduced, copied, or translated for any purpose whatsoever without prior written permission of the Editor. There will be no responsibility of the publisher if there is any printing mistake. Views and opinions expressed in this volume special issue are belong to each author. Legal aspect is a disclaimer provided only in favor of Editor in Chief for the Special Issue on Issues of Farmers' Activities in India: Past, Present and Future.



SCIENTIA RESEARCH JOURNALS

G-10/07/14, Gurgaon Road, Gurgaon, F-100-11,
Sector-14, Gurgaon, Haryana, India, 122002,
Website: www.srjournals.com
E-mail: srjournals@gmail.com

PRINCIPAL
Savitri Devi, Srivastava
Principal, Gurgaon



55	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या: काल, आज आणि उद्या Dr. V. T. Kokkar & Dr. K. B. Patole	198-201
56	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या हे भारतीय अर्थव्यवस्थेचे अपयश प्रा. विनायक जाधव	202-207
57	शेतकरी आत्महत्येची कारणे डॉ. प्रसन्नजीत रामकृष्ण गवई	208-209
58	भारतातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येचा चिकित्सक अभ्यास डॉ. एस. टी. सामाले	210-212
59	शेतकरी आत्महत्या कारणे व उपाय डॉ. तायनाथ व्ही. पी	213-217
60	महाराष्ट्रातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येची कारणे व उपाय योजना प्रा. जयश्री जयतीर्थ स्वामी	218-219
61	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या: एक समाजशास्त्रीय अभ्यास अन्सारी एस. जी.	220-222
62	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्यारोखण्यासाठी उपाययोजना Dr. B. K. Shinde & Dr. K. B. Patole	223-225
63	अस्वस्थ बळीराजाचं प्रतिबिंब: शेतकरी आत्महत्या डॉ. राजाराम केरबा पाटील	226-228
64	यवतमाळ जिल्हा शेतकरी आत्महत्या कारणे प्रा. एस. पी. बडवाईक	229-231
65	भारतातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येचे समाजशास्त्रीय विश्लेषण प्रा. डॉ. भगवान डोंगरे	232-235
66	मराठी कादंबरीतील शेतकरी जीवनदर्शन : एक दृष्टिक्षेप प्रा. डॉ. विठ्ठल हरिभाऊ जंबाल	236-238
67	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : एक अभ्यास प्रा. डॉ. अमित रामलींग कवठाळे	239-240
68	भारतातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : एक दृष्टिक्षेप जितेंद्र पांडूरंगराव काळे	241-242
69	शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या डॉ. कागदे बी. बी.	243-244

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed. Dist. Maharashtra



६८.

भारतातील शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या : एक दृष्टिक्षेप

जितेंद्र पांडूरंगराव काळे

अर्थशास्त्र विभाग प्रमुख, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुकामबाद ता. मुखेड जि. नांदेड

प्रस्तावना :

भारत हा कृषिप्रधान देश असून भारतीय अर्थव्यवस्था ही कृषीवर आधारित आहे. भारतातील ६५% लोकांचा प्रमुख व्यवसाय शेती आहे. शेती व्यवसाय हा निसर्गाच्या पाण्यावर अवलंबून असल्यामुळे शेतकऱ्यांना कोरडा दुष्काळ, ओला दुष्काळ, उशिरा पाऊस, अवकाळी पाऊस, गारपीट इत्यादीसुलतानी आसमानीसंकटांचा शेतकऱ्यांना सामना करावा लागत आहे. शेतीहा भारतीय अर्थव्यवस्थेचा कणा मानला जातो. परंतु शेतीही सद्यःस्थितीत पर्यावरणाच्या असंतुलनामुळे अर्थव्यवस्थेचा हा कणा खिळखिळाहोत घाललेला दिसून येत आहे.

शेती व्यवसायासाठी लागणारे आवश्यक मांडवल शेतकऱ्यांकडे उपलब्ध नसते. त्यामुळे बरेचसे मांडवल हे कर्ज रूपाने घेतात. हे मांडवल उभारताना शेतकऱ्यांना आपली शेती गहाण/तारण ठेवून कर्ज मिळवावे लागते. अशा पद्धतीने कर्जरूपाने मिळविलेल्या मांडवलाद्वारे शेतकरी आपली शेती करतो. परंतु शेतीही निसर्गावर अवलंबून असल्यामुळे शेती व्यवसायातील मांडवल परत मिळेलच याची शाश्वती शेतकऱ्यांना नसते. भारतीय शेतकरीहा निसर्गाच्या लहरीपणामुळे कर्जरूपी घेतलेले मांडवल परत करू शकत नाही. त्यामुळे शेतकरी कर्जबाजारी होत आहे. भारतीय शेतकरी निसर्गावर अवलंबून असल्यामुळे तो कर्जातच जन्मतो, कर्जातच मरतो आणि कर्जातच मरतो आहे. त्यामुळे आजही शेतकऱ्यांची अवस्था दयनीय आहे. त्यामुळेच शेतकऱ्यांच्या आत्महत्या आजही मोठ्या प्रमाणात दिसून येत आहेत.

उद्दिष्ट :

शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येचे स्वरूप स्पष्ट करणे हे उद्दिष्टसमोर ठेवून सदरील शोधनिबंध तयार करण्यात आला आहे.

संशोधन पद्धती :

प्रस्तुत शोधनिबंध दुय्यम तथ्य संकलनाच्या आधारे करण्यात आला आहे.

रुथ कवनच्या मते, "स्वतःच स्वतःची जीवनलीला संपविणे म्हणजे आत्महत्याहोय."

इन्सायक्लोपिडिया ऑफ ब्रिटानिकाच्या मते, "स्वतःचे जीवन स्वईच्छेने जाणीवपूर्वक संपविणे म्हणजे आत्महत्याहोय."

आत्महत्या करणारा स्वच्छेने जाणीवपूर्वक आत्महत्या करतो. जेव्हा एखादी कमकुवत मनाची व्यक्ती आर्थिक, सामाजिक आणि राजकीय कारणातून निर्माण झालेल्या नैराश्यातून अकाली आपली जीवनयात्रा संपवितो तेव्हा त्याला आत्महत्या असे मानले जाते. शेतीमधील नवीन तंत्रज्ञानामुळे उत्पादन खर्चात झालेली वाढ, शेतीमालाला हमीभाव नाही व शेतकऱ्यांवरील वाढलेला कर्जाचा डोंगर या अनेक कारणांनी शेतकरी अडचणीतसापडलेला दिसून येतो.

भारताच्या नॅशनल क्राईम रेकार्ड ब्युरोच्या रिपोर्टनुसार सन २०१० मधील एकूण आत्महत्या १३४५९९ एवढ्या झालेल्या असून त्यापैकी १५९६३ आत्महत्या शेतकऱ्यांनी केलेल्या आहेत. सन २०११ मध्ये एकूण आत्महत्या १३५५८५ पैकी १४२०७ आत्महत्या शेतकऱ्यांच्या होत्या. सन २०१२ मध्ये १३५४४५ आत्महत्यांपैकी १३७५४ आत्महत्या शेतकऱ्यांनी केल्या आहेत.

अपर्याप्त सिंचनक्षमता, अक्षम पतपुरवठा, जमिनीचे वाढते तुकडीकरण यामुळे कृषी उत्पादकतेचा वेग मंदावलेला आहे. त्यामुळे शेतीवर अवलंबून असणाऱ्यांचे जीवन दुर्बल बनले आहे. पिकाचा वाढता खर्च, पुर, ओला-



कोरडा दुष्काळ, भारनियमन, बोगस वि-बियाणे, कमी बाजारभाव यामुळे शेती करणे कठिण झाले असून शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येसह घटक जबाबदार असल्याचे म्हटले आहे. शेतीशिवाय इतर उत्पन्नाचे साधन नाही. त्यामुळे शेती नापीक इ पाती कीते आत्महत्या करित असतात. यात व्यसनाधीनता, आरोग्याचे प्रश्न, मुला-मुलींच्या शिक्षणाचा खर्च यामुळेही प्रश्न अधिक गंभीर बनत घालता आहे.

“ज्या शेतकऱ्यांनी आपल्याला जगविले आहे, त्यांच्यावर आत्महत्या करण्याची वेळ गावी हे भारतासारख्या कृषिप्रधान देशालाशोभादायक नाही. म्हणून कोणत्याही शेतकऱ्याची आत्महत्याहा देशाचा अवमान आहे असे मानूनच या समस्येकडे पाहिले पाहिजे.”

अनेक वर्षांपासून शेतकऱ्यांच्या आत्महत्याहोत आहेत पण शासनाला समाजाला हे थांबविता आलेले नाही. त्यामुळे शेतकऱ्यांची कर्जातून मुक्तता करण्यासाठी त्यांना राष्ट्रीयकृत बँकाकडून अल्पदरात दीर्घ मुदतीचा पुरवठा करण्यात यावा. जलसिंचनाच्या सुविधा पुरेशा प्रमाणात पुरविणे आवश्यक आहे. विक्रीव्यवस्था सुधारून आधुनिक शेती कौशल्याचा वापर केला गेताजेणेकरून शेतकऱ्यांच्या समस्या सुटू शकतील आणि शेतकरी खऱ्या अर्थानेसमृद्ध बनू शकेल.

निष्कर्ष :

- १) कर्जबाजारीपणा हा मुख्य घटक शेतकऱ्यांच्या आत्महत्येस कारणीभूत ठरलेला दिसून येतो.
- २) निसर्गाच्या अनियमितपणामुळे शेतकऱ्यांचे जीवन दयनीय झाले आहे.
- ३) शेती उत्पन्नावरील खर्च जास्त व उत्पन्न कमी अशी विसंगती दिसून येते.
- ४) शेतमात्वाला हमीभाव नसल्यामुळे शेतकरी आर्थिकसंकटातसापडलेला आहे.
- ५) शेतीपूरक व्यवसायाच्या अभावामुळे उत्पन्न कमी आढळते.
- ६) कर्जमाफीसारख्या तात्पुरत्या सोयीऐवजी कायमस्वरूपी उपाययोजना कराव्यात ज्याने बळीराजा सुखीहोऊ शकेल.

सारांश :

शेतकऱ्यांच्या जमिनी या निसर्गावर अवलंबून असल्यामुळे दुष्काळ, कमी उत्पादन, कमी दर्जाचा माल, मालाला कमीकिंमत, मालाला हमीभाव नाही, शेतकऱ्यांच्या बाजारपेठविषयक समस्या अशा अनेक समस्यांना शेतकऱ्यांना तोंड द्यावे लागत आहे. यातूनच शेतकऱ्यांचा कर्जबाजारीपणा वाढत जाऊन जीवनातील असुरक्षितता वाढून शेतकरी आत्महत्येकडे झुकू लागला आहे. कृषीवरील अवलंबित्व कमी करण्याची गरज असून वेगवेगळ्या उपाययोजनांद्वारे शेतकऱ्याला या दुष्टचक्रातून बाहेर काढणे गरजेचे आहे. त्याशिवाय शेतकरी आत्महत्या थांबणार नाहीत.

संदर्भ :

भारतीय अर्थव्यवस्था - डॉ. सी.स्मिता कोंडेवार-कोटलवार, अरुणा प्रकाशन, लातूर, २०११

Encyclopedia Britannica

Accidental Death & Suicide in India-The National Crime Record Bureau Reports of २०१२-१३

साधना, ४ ऑक्टोबर २००८

Kale J.P.

ISSN: 2394 5303

Impact
Factor
4.002(11/11)

Printing Area™
International Research Journal

January 2018
Issue-37, Vol-01

01



आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका

प्रिंटिंग एरिया

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages
January 2018, Issue-37, Vol-01

Editor

Dr. Babu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor

Dr. Ravindranath Kewat

(M.A. Ph.D.)

Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Babu Ganpat.



Reg.No.U74129 MH2013 PTC 251205
Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post Limbaganesh, Tq Dist Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell 0758805/695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyawarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyawarta.com

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukamhadi Tq. Shahad. Dist. Nand.



27) आर्थिक स्वावलंबन आणि बचतशीचे महत्त्व जितेंद्र पांडुरंगराव काळे, ता.मुखेड जि.नांदेड	118
28) मानवी हक्क व महिला सक्षमीकरण संदर्भातील भारतीय कायदे प्रा. भाणिकराव एम. कवरके, गाडेगांव (तेल्हारा), जि अकोला	121
29) जैन दर्शनाचा विश्वव्यापक तात्विक दृष्टीकोन प्रा.डॉ.सखाराम यशवंतराव गोरे, ता.मुखेड जि.नांदेड (महाराष्ट्र)	124
30) उस्मानाबाद जिल्ह्यातील सोयाबीन पिकाखालील क्षेत्र: एक भौगोलिक अभ्यास प्रा. शिरमाळे महेबुबपाशा बाबूमीयाँ-डॉ. वाघमारे नामदेव	128
31) अनुवादितसाहित्य व सृजनात्मकसाहित्य साम्यभेद प्रा. डॉ. नितेश एकनाथराव लोंढे, परभणी	131
32) भारतीय सन्दर्भ में विकास एवं आधुनिकीकरण डॉ० रकेश प्रताप शाही, कुशीनगर	134
33) दशावतारचरितम् महाकाव्य में वर्णित महात्मा बुद्ध का चरित्र डॉ. रामप्रकाश शर्मा-बिन्दु देवी, राजस्थान	138
34) विकास का आधार असंगठित क्षेत्र विकास की मुख्य धारा के हाशिए पर:..... - पूनम यादव, लखनऊ	140
35) समकालिन हिंदी गुजलों में दलित एवं सर्वहारा वर्ग के शोषण का यथार्थ चित्रण प्रा. किरण आत्माराम चव्हाण, जि.जलगाँव	147
36) दूरदर्शी जागरूक राष्ट्रभक्त नेता:डॉ.बाबासाहेब अंबेडकर डॉ. सुरेश तावडे, जलगाँव (महा)	152
37) किसान आन्दोलन उत्तर प्रदेश के सन्दर्भ में डॉ० अजय कुमार, उत्तर प्रदेश	157
38) मैदानी क्षेत्रों में बागवानी में समन्वित कीट पीडक प्रबन्धन डॉ० बिन्द्रा बिहारी सिंह, औरैया (उ०प्र०)	164
39) स्वतंत्रता से पूर्व भारत में विदेशी पूँजी निवेश दिनेश कुमार यादव, हण्डिया, इलाहाबाद	168



आर्थिक स्वावलंबन आणि बचतीचे महत्त्व

जितेंद्र चांदूरंगराव वडाळे
अर्थशास्त्र विभाग एचयूए,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
धुळे-यावद ता. धुळे जिल्हा वारेड

प्रस्तावना :

व्यक्ती किंवा कुटुंबाला होणाऱ्या उत्पन्नाचा दोन प्रकारे उपयोग केला जातो. एकूण उत्पन्नातील काही भाग उपभोगावर खर्च केला जातो; तर बचती भागाची बचत केली जाते. एकूण उत्पन्नातील जो भाग उपभोगावर खर्च केला जात नाही, तो भाग म्हणजे बचत होय. कॅम्ब्रिज बचतीच्या संदर्भात म्हणतात की, 'उपभोगावर खर्च झालेली रक्कम उत्पन्नातून घेऊ केली असता जी रक्कम शिल्लक राहते ती रक्कम म्हणजे बचत होय.' म्हणजेच किन्सची संकल्पना स्पष्ट करताना बचत = उत्पन्न - उपभोग खर्च होय अशी संकल्पना किन्स मांडतो.

राष्ट्रीय उत्पन्नाचा एक मोठा भाग बचतीकडे वळविला व त्याची गुंतवणूक केली तर देशातील उत्पन्न पातळी वाढते. त्याचबरोबर विकासासाठी एक भक्कम पायाही रचला जातो. यासाठी मोठ्या प्रमाणात बचत करणे आवश्यक असते. कारण बचत जेवढी जास्त तेवढी गुंतवणूक व भांडवल निर्मिती अधिक हे लक्षात घेणे महत्त्वाचे आहे. भारतातील उत्पन्नाचे स्त्रोत बहुतांशी अनिश्चित स्वरूपाचे असल्यामुळे बचत प्रक्रिया ही एखाद्या आपात प्रतिबंधक यंत्रणांसाठी भूमिका पार पाडते. कारण दारिद्र्याचे दुष्टचक्र अत्यंत अल्प प्रमाणातील बचत, अल्प प्रमाणातील गुंतवणूक आणि तुटपुंज्या रोजगाराच्या संधी ह्यादींवर योग्य मात करण्यासाठी भारतामध्ये बचत आणि गुंतवणूक या दोन्हीमध्ये योग्य प्रमाणात वाढ होणे

आवश्यक आहे

आर्थिक स्वावलंबनासाठी बचत

देशातील विविध वयवर्गीय वर्गासाठी व आर्थिक स्वावलंबन प्राप्त करण्यासाठी बचतीचा दर वाढवणे आवश्यक आहे, असे पण अर्थशास्त्रज्ञांनी व विशेषज्ञांनी वेळोवेळी स्पष्ट केले आहे. देशात बचत दर पातळीची कोटिकोटिक घटक, सामाजिक क्षेत्रातून होणारी बचत आणि खासगी क्षेत्रातून होणारी बचत परिणामकारक ठारते. बचतीच्या व्यवस्थाबाबत एम.एन. खिणन म्हणतात की, "बचत केवळ दुष्घातकांवर अचलवून असलेल्या शिवाय बचत करण्यासाठी करण शकित आहेत, बचत कोणत्या सुविधांच्या माध्यमातून केली जाते यावर बंध कडी अचलवून असते." या पुष्पीतलावर मानव हजारो वर्षांपूर्वी निर्माण झाला. त्यांच्या पुढे प्रश्न फक्त जगण्याचा होता. त्यातूनच तो उद्योग विचार करायला लागला. या उद्योगाच्या फळातूनच त्याने फळांघी, पान्याची बचत करण्यास सुरुवात केली. शेतीतील उत्पन्नावर तो बचत करित असे. परंतु या एकाचसाध्या शतकात हाच मानव अक्षय्याची बचत करतो. तो पैसाची करू लागला. आपल्या संपत्तीचा संघय करू लागला. आपल्या उदरनिर्वाहासाठी मानवाने बचतीचे महत्त्व ओळखले आहे.

बचतीचे प्रकार

बचतीचे अनेक प्रकार सांगता येतील ते असे -

धरगुती बचत - कोणताही व्यक्ती आपल्या बचत करीत असतो. तो एखाद्या धरगुती वस्तू खरेदी करून बचत करील किंवा मुलीच्या लग्नासाठी, मुलांच्या शिक्षणासाठी, म्हातारपणासाठी त्याच्या भावंड्यासाठी बचत करीत असतो. व्यक्तीने केलेल्या बचतीसंदर्भात किंवा धरगुती बचतीसंदर्भात प्रा.ए.बी. साबळे म्हणतात की, "व्यक्ती आपल्या प्राप्तीचा काही भाग उपभोगावर खर्च न करता शिल्लक टाकतात. या शिल्लकी उत्पन्नात धरगुती किंवा वैयक्तिक बचत असे म्हणतात." व्यक्तीच्या या धरगुती बचतीतून खणयोग्य निधीचा पुरवठा होत असतो. सामान्यपणे व्यक्तीच्या बचती आणि व्याजदर यांचा सर्वादेशाचा संबंध असतो. व्याजदर वाढला तर व्यक्ती आपल्या बचती वाढवतील आणि व्याजदर कमी झाला तर व्यक्तीच्या बचतीत घट होईल. परंतु साबळेच व्यक्ती बचत करतील असे नाही. भारताचे



असलेल्या देशात प्रत्येकाने ३१२ रुपयांचा विभा कडकता तर ल्यातून सावर्जनिक बचत होते आणि देशाला व नागरिकांनाही फायदा होतो. ही योजना आल्यानंतरही ३१२ रुपयांत नव्हे तर १२ रुपये भरूनही विभा कडकता घेईल. अशी योजना सावर्जनिक हितासाठी मोठी सरकारने अंमलात आणली आहे.

भविष्यकालीन तरतुद

भविष्यकालीन जीवनात कोणत्याही प्रकारच्या अडचणींवर मात करण्यासाठी बचत केली जाते. एकूण उत्पादन खर्च करून जी काही शिल्लक राहते त्या शिल्लकेला बचत असे म्हटले जाते. बचतीचे स्वरूपही बचत करणाऱ्या व्यक्तीच्या, शासकीय कर्मचाऱ्यांच्या इच्छाशक्तीवर व त्याच्या उत्पन्नावर आणि तो कोणत्या सोयी-सुविधांच्या माध्यमातून बचत करतो यावर अवलंबून असतो. कोणतीही गोष्ट इच्छोशिवाय होत नाही. त्यामुळे बचत करण्यासाठी प्रांजळ इच्छाशक्ती असणे महत्त्वाचे आहे. या बचतीच्या स्वरूपासंदर्भात एम.एल. झिगन असे म्हणतात की, "बचत करण्यासाठी व्यक्तीची इच्छाशक्ती ही महत्त्वाची आहे. जर व्यक्ती किंवा शासकीय कर्मचारी बचत करत नसेल तर तो काहीही शिल्लक ठेवत नाही. बचत करण्यासाठी त्याची इच्छाशक्ती ही महत्त्वाची आहे." देशातील कुटुंब बचत करण्यास का प्रवृत्त होतात, याची अनेक कारणे आहेत. वृद्धापकाळाची सोय, हुंडा पद्धती, तात्पुरती बेकारी उद्भवल्यास बचतीचा वापर करणे, आजारपण व इतर अनपेक्षित दुर्घटनांची तरतुद करणे, उच्च शिक्षण, जंगम मालमत्ता खरेदी करणे यासाठी भारतीय कुटुंब बचत करण्यास प्रवृत्त होतात. साहजिकच अशी बचत करण्यासाठी त्यांना आपल्या उपभोग खर्चावर नियंत्रण ठेवावे लागते. कुटुंब आणि देशाच्या अर्थव्यवस्थेच्या दृष्टीने बचतीचे महत्त्व व उपयोगिता लक्षात घेवून लोक कोणत्या स्वरूपात भविष्यकालीन परिस्थितीसाठी बचत करतात याचा चिकित्सक पद्धतीने अभ्यास करण्यात आला आहे.

समारोप :

बचत म्हणजे उत्पन्नाचा काही भाग जो उपभोगावर खर्च न करता बाजूला ठेवलेला असतो. बचतीचा उत्पन्नाशी खुपच जवळचा संबंध आहे. केन्सच्या मानसशास्त्रीय दृष्टिकोनातून असे समजते की,

जसजसे उत्पन्न वाढत जाते तसतसा उपभोग खर्च कमी होत जातो. याचा अर्थ बचत वाढत जाते असा प्रकारे आर्थिक स्वायत्तवनासाठी विविध प्रकारच्या मागांनी बचत अथवा गुंतवणूक करता येते. हाच आद्य निर्धारण सिद्धांत आहे. यावरून समाजाची उत्पन्नाची पातळी किती आहे हे कळून येते. यासंदर्भात बचत व गुंतवणूक समानतेचा विचार करणे आवश्यक आहे.

संदर्भ :

- १) ठक्कर के.एच., स्थूल अर्थशास्त्र, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर, १९९४, पृ.११३
- २) झिगन एम.एल., समष्टि अर्थशास्त्र, वृंदा प्रकाशन, दिल्ली, २००४, पृ.१२९
- ३) सावळे ए.बी. व भोयर व्ही.एस., समष्टि अर्थशास्त्र, श्री मंगेश प्रकाशन, नागपूर, १९९२, पृ.१४१
- ४) माहोरे रा.य., समष्टि अर्थशास्त्र, हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई, २००३, पृ.१६३
- ५) सावळे ए.बी. व भोय व्ही.एस., उपरोक्त पृ.१४१
- ६) माहोरे रा.य., समष्टि अर्थशास्त्र, हिमालय पब्लिशिंग हाऊस, मुंबई, २००३, पृ.१६३
- ७) झिगन एम.एल., समष्टि अर्थशास्त्र, वृंदा प्रकाशन, दिल्ली, २००४, पृ.१२७

□□□

आंतरराष्ट्रीय बहुभाषिक शोध पत्रिका
प्रिंटिंग एरिया
Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Maharambad Tal. Mukhed, Dist. Nanded



३३	संतोष शिवाजी शास्त्री	दूर शिक्षण केंद्रांची वृत्ति	१४२-१५५
३४	सौम्यता शिवाजी शास्त्री	अनुसंधान व शिवाजी शास्त्री शास्त्री	१५६-१५८
३५	भा. डॉ. शिवाजी शास्त्री	अर्थशास्त्रातील शिवाजी शास्त्री : विशेष संस्कृत संशोधन लेख	१५९-१६५

“संतोष” या मासिकाचे प्रतिष्ठित झालेले सर्वे सुख संकल्प, संकल्प शिवाजी शास्त्री यांच्या संकल्पनांवरून झालेले आहे. या मासिकाचे प्रतिष्ठित झालेले सर्वे सुख संकल्प शिवाजी शास्त्री यांच्या संकल्पनांवरून झालेले आहे. या मासिकाचे प्रतिष्ठित झालेले सर्वे सुख संकल्प शिवाजी शास्त्री यांच्या संकल्पनांवरून झालेले आहे.

हे विषय धार्मिक, भाष्य, सुख, संकल्प शिवाजी शास्त्री यांच्या संकल्पनांवरून झालेले आहे. हे विषय धार्मिक, भाष्य, सुख, संकल्प शिवाजी शास्त्री यांच्या संकल्पनांवरून झालेले आहे.



३४

जागतिकीकरणातील दलित कविता : विशेष संदर्भ नंतर आलेले लोक

प्रा. डॉ. बालाजी खराबे

मराठी विभाग प्रमुख, विवेकानंद महाविद्यालय, मुक्रामाबाद जि. नांदेड.

प्रस्तावना

जागतिकीकरणाने उदारीकरणाने आणि खाजगीकरणाने भारतीय समाजासमोर अनेक आव्हाने उभी राहिलेली आहेत. यामुळे अनेक प्रश्न निर्माण झाले आहेत. मानवी समाज त्याची नितीमता, ममता, माणुसकी, कुटुंबवत्सलता, बंधुत्व, समानता यापासून हरघडी दुरावत चालला आहे. त्यांच्या जगण्याचे, व्यवहाराचे, भावभावनांचे यांत्रिकीकरण होत आहे. चंगळवादाने भोगवादाने, नवनवीन सुखसाधनांनी त्याला धावण्यास मजबूर केले आहे. केवळ पैसा आणि पैसाच सर्वस्व झाला आहे. त्याच्या हव्यासामुळे त्याचे कौटुंबिक जीवन, भावबंध, प्रेमभावना आदिताण सामाजाभिमुखता उद्ध्वस्त होत आहे. त्याची प्रत्येक हाचचाल घडपड घड्याळ्याच्या काट्यानुसार यंत्रवत होत आहे. म्हाताऱ्या आईबापाची उठबस करण्यास बायको-पोरांना पुरेसा वेळ देण्यास त्यांच्या सुख-दुखात सामील होण्यासाठी त्याला पुरेसा वेळ मिळत नाही.

अशा या जागतिकीकरणाच्या बदलत्या मानसाचे नेमके चित्र उघडे करणारा, जगण्यातील वास्तवाला भिडणारा आणि त्याला आपल्या कवितेचे नायकत्व बहाल करणारा ऐशीनंतरचा मोठ्या ताकदीचा कवी अरुण काळे आहे. त्यांची कविता गावकुसाबाहेरील वंचितांच्या वस्तीतून आणि अभावप्रस्तेतून आली. इतर दलित कवीप्रमाणे विद्रोह, जातीयता, माणसातील दाम्भिकता नोंदवत आली. हिंसेला गाडून अहिंसेची शेती फुलवत आली. जागतिकीकरणातील मानवाच्या जगण्याची नोंद घेणारी ठरली.

दलित कविता

दलित कविता ही मराठी साहित्यात आता एक प्रस्थापित झालेली वस्तुस्थिती आहे. ती दलित साहित्य ही एक व्यापक वस्तुस्थिती आहे. ती दलित साहित्य या एका व्यापक वस्तुस्थितीचा भाग आहे. दलित कवितेच्या संदर्भात म.सु. पाटील लिहतात की "दलित साहित्याची निर्मिती ही आपल्या सांस्कृतिक विकासाच्या दृष्टीने अतिशय महत्त्वाची गोष्ट आहे. दलित कविता हा त्या प्रवाहाचा एक मध्यवर्ती भाग आहे. धगधगत्या अनुभवाचे सामर्थ्य आणि प्रतिमता दलित कवितेत एकवटलेली दिसते." हे प्रतिभेचे सामर्थ्य दलित कवितेच्या माध्यमातून उलगडून दाखविण्याचा प्रयत्न म.सु. पाटील यांनी केला आहे. तर दलित कवितेच्या संदर्भात महेंद्र भवरे म्हणतात की, "दलित कविता ही विसाव्या शतकातील वाङ्मयीन आणि सांस्कृतिक वस्तुस्थिती आहे. समाज आणि संस्कृती यातूनच साहित्यनिर्मितीतील प्रेरक शक्ती मिळत असते. दलित कवितेचा उदय स्वातंत्र्योत्तर काळात झालेला असला तरी दलित साहित्याची पायाभरणी डॉ. बाबासाहेब आंबेडकर यांनी सुरु केलेल्या वृत्तपत्र आणि साप्ताहिकातून झालेली पहावयास मिळते. मात्र दलित कविता खऱ्या अर्थाने उठावदार झाली ती



प्रश्नच उद्भूत नही. सामाजिक न्यायाची संरक्षणा ज्या मूलभूत मान्यतेवर म्हणजे समता, सहयोग, नीती, मातृभाव, समाज यावर आधारित आहे.” म्हणजेच जागतिकीकरणाचे व्यक्तीच्या जीवनावरील परिणाम आणि होत असलेली सामाजिक न्यायाची दुरुवस्था यान्वत नवता जागतिकीकरण हे मूठपरांना विकासाची संधी वाटत असली तरी जगभरातील बहुसंख्य जनसमुहांसाठी हे आभासी विकासचे भीषण वास्तव सिद्ध होत आहे. जागतिकीकरणाच्या संदर्भात अरुण कांबळे म्हणतात की, “देशात सद्या सहा लाख ग्यांमध्ये पिण्यायोग्य पाणी नाही. सराब पाण्यामुळे दहा लाख बालके दरवर्षी मरण पावतात. तीस कोटी लोक अर्धपोटी जगतात, २९ लाख बालके कुपोषणामुळे दगावतात. जगाभये भारतात सर्वात अधिक म्हणजे पाच लाख लोक दरवर्षी क्षेय येणजे मरतात. मलेरियामुळे दरवर्षी वीस लाख लोक मरतात. जगातले ९४% कुष्ठरोगी भारतात आहेत. सव्याशे कोटीच्या देशात फक्त दहा कोटी लोकनाच चांगल्या शौचालयाची सुविधा आहे. भारतात दरवर्षी बारा लाख महिला बाळंतेपणात वा त्या काळी मरतात. ऐंशी टक्के भारतीय महिलांच्या रक्तत हिमोग्लोबिन कमी आहे. आरोग्याचे हे असे चित्र आपल्यासमोर आहे. दलित, आदिवासी, भटके व अन्य गरीब या दूरस्थेचे बळी उरतात.” याचा अर्थ असा की व्यक्तीच्या मूलभूत गरजा आणि त्यांना प्रतिष्ठापूर्ण सन्मानाचे जीवन जगण्यासाठी जागतिकीकरणात नाही. अरुण कांबळे यांचे ‘नंतर आलेले लोक’ आणि ‘मत्सेवतेचे गावकुस’ हे दोन कवितासंग्रह सर्वहरा जगाचे भीषण वास्तव व्यक्त करण्याबाबत महत्त्वपूर्ण आहेत. समकालीन आभासी विकास काळी सामाजिक न्यायाचा प्रश्न मांडणारी अरुण कांबळे यांची कविता सामाजिक न्यायाच्या स्थितीचा वेध घेताच दिसते.

जागतिकीकरण व नंतर आलेले लोक

जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेतून मानवी जीवनासमोर तसेच नैसर्गिक पर्यावरणासमोर अनेक भीषण समस्या निर्माण झाल्या आहेत. मानवी भावविघ्नालाही प्रचंड हादरे बसत आहेत. इतिहास, संस्कृती व मूल्यविचार इ. चा सोयीनुसार गरजेपुरता अर्थ प्रतिपादन करून एक प्रकारे त्यांचा विपर्यास चालविला आहे. जगाला देण्यात आलेले बाजारपेठीय रूप, नैसर्गिक साधनसंपत्तीचा अन्विष्ट वापर आणि माणसाला करण्यात आलेला मुलाम ग्राहक यामुळे मोठ्या प्रमाणात शोषण वाढले आहे. याकरीता माहिती तंत्रज्ञानाचा करण्यात येणारा वापर वाढला. विकासाच्या वेगडी बाजू समोर करून शोषकाचा अमनावीय चेहरा तपविला जाऊ लागला. सामान्य माणसांच्या बाजूने या प्रक्रियेचे विश्लेषण करणारे अर्थशास्त्रज्ञ, विचारवंत, कवी, कलावंत मात्र निर्माण झालेतया संक्रमाला दूर करण्यासाठी वास्तव पुढे करीत होते. यामधील कवी अरुण कांबळे एक होते. जागतिकीकरणाच्या प्रक्रियेविषयी जनमानसात निर्माण करण्यात आलेले संग्रम आणि त्याचे स्वरूप अरुण कांबळे उलगडतात. अरुण कांबळे ‘नंतर आलेले लोक’ या कविता संग्रहातील तु मदरबोर्डे माझ्या संगणकाचा या कवितेत लिहीतात की,

“आता या आयटीच्या युगात
दलितांनी डि-लिट करण्यासाठी
नवनवीन सॉफ्टवेअर येताहेत
आणि प्रोथॅम छराब करण्यासाठी
सोडले जाताहेत, विधाणू

तरीही तुम्ही अॅन्टी-व्हायरस खबरदारी

पुन्हा पुन्हा करतोय त्यांना पराभूत''

या प्रत्येक काळाचे प्रश्न वेगळे असतात. सव्याचे स्वरूप वेगळं असतं, आगुणं वेगळी असतात. छं म्हणजे विषाणू कायमच असतात. सजीव आणि निजीव अशा दोन्हीमध्ये तो वर्तमानुवर्षे निदरित रूढ रम्यतात. पेशी दुबळ्या झाल्या की विषाणू सजग होऊन सजीवांची त्पणं प्रकट करतात. जाणविकरणात सुद्धा एक व्यवस्था दस्तांवर वेगळ्या प्रकारे गुलामी सादत आहे, परंतु या परिस्थितीत एखाद्या जेनेटिक सुसंस्तरं नित्य नूतन आक्रमण डॉ. बानासाहेब अंबेडकरांनी शोपितांच्या तळाता पुरवलेय याचा अस्फारण प्रत्यय या कवितेतून येतो. पुढे अमण कळले 'माहितीचे माहितगार' या कवितेत लिहितात की,

"तर, ऐका 555

आस्ते रे आस्ते 55 माहितीच्यासे

आस्ते रे आस्ते 55 माहितीच्यासे

हे अभयवस्तानो आहे का माहित

या माहितीच्या शतकात

माहितीची नाही संस्कृती?

इतिहासावर विषाणू अना कुर्निकोवा

डोकं माहित चेहरा गायब

हे कल्प नाहीत डिस्कवर

जंतूची पूर्ण हिस्टरी, जीव गायब,

तुम्ही इयं नसल्याचे बनतात प्रोब्रॅम

दडपून भारतात माहिती नसल्याची

तुमचे महानायक

तुमचे महाकवी

तुमची अहिंसा आणि शून्य

पडद्याच्या बाहेरचे लोक आणि समाज''

आजच्या माहिती तंत्रज्ञानाच्या युगात कुर्निकोवा सारखी आपल्याला माहित असते ती या नावाची टेनिस खेळाडू ती उत्तम होतीच, परंतु त्याहीपेक्षा तिच्या देखणेपणासाठी ती अधिक प्रसिद्ध होती. तिच्या खेळपेक्षा तिला खेळताना पाहण्यासाठी लोक गर्दी करत. प्रसारमाध्यमांचा ससेमिण तिच्यासाठी कायम असे. तिच्या प्रेम प्रकरणांच्या चर्चा होत. जाहिरात माध्यमांचा तिच्यावर जाहिरातीत काम करण्यासाठी कायम दबाव. खेळण्यापेक्षा कैक पटीने अधिक पैशांचं प्रलोभन जाहिरातीत. तरीही जाहिरातीत अॅना कुर्निकोवा कोण? तर एक खेळाडू एक अत्यंत देखणी टेनिस खेळणारी या ताणात हद्दहद्द खेळाडू संपली.



जाहिदातीची दुनिया विजयी. संगणकत विषाणू सोदून त्याची सगळी संख्या बंद करण्यासाठी वे कडी प्रोग्रॅम मेलनं येतात. त्या मेलमध्ये अशा सुंदर बाया अश्लील छायाचित्रांचं आणि यांचा गापर भरपूर केस जातो. अंत कुर्निकोवाचा असा वापर झालाय पुष्कळ. व्हायरस, सोदण्यासाठी इतिहासावर विषाणू अॅना कुर्निकोवा.


समारोप

जागतिकीकरणाची झिंग आणि माहिती तंत्रज्ञानाचा हंगामा व या साऱ्यात गरिबांनी गरिबी किंवा शोषितानं शोषण नष्ट होण्याऐवजी तो गरीब अन शोषितच नष्ट केसा जातोय. ही जाणीव 'नंतर आलेले लोक' या माध्यमात अमलेली प्रधान जाणीव आहे. ही जाणीव व्यक्त करण्याचा अरुण काळे यांचा पवित्र संत तुकारामासारखा ऐक्य आणि कर्म मेळ्यासारख्या रेकॉडे सवाल करणारा आहे. त्याची भाषा मात्र खास आजची आणि जागतिकीकरणाआधी माहिती तंत्रज्ञानाच्या जल्माची आहे!

शोषकाशी लढण्यासाठी त्यांचीच हत्यारं वापरण्याचा हा पवित्र वेळ आहे. मदरबोर्ड, संगणकीय पडदा, मल्टिमिडिया वी बोर्ड, हे महाजाल एक इंद्रजाल, इनकमिंग आऊट गोइंग, निंदो २००० ठपरीकरणाची सायबर खिंड, सफोकरण अॅन्टीव्हायरस, प्रोग्राम अपडेट, माहिती तंत्रज्ञानाचं कोळीत, प्रेमाचं जागतिकीकरण, सायबर कॅफे, आयटीचा रेडलाईट एरिया, पृथ्वीचा हे, ई-सख, ई-चॅक, वॉटर किंगडम, इतिहासावर विषाणू अॅना कुर्निकोवा, मी संगणकाला देतो कमांड असे अनेक नव्या बोलीतले शब्द, संज्ञा, संकल्पना, चिन्ह यांना अरुण काळे आपल्या भाषेत घेऊन त्यांना जागतिकीकरणात उजेड देतात व जागतिकीकरणात मानवीमूल्याची चिकित्सा करतात. म्हणून जागतिकीकरणात सुद्धा दलित कवितेने आपले स्वतंत्र अस्तित्त आणि अस्मिता जोपासली हे 'नंतर आलेले लोक' च्या माध्यमातून दिसून येते.

संदर्भ ग्रंथ सूची

१. पाटील म. सु., दलित कविता व दलित साहित्याचे सौंदर्यशास्त्र, पद्मार्णव प्रकाशन, पुणे, २०१०, पृ.क्र. १२.
२. गवरे महेंद्र, दलित कविता आणि प्रतिमा, लोकवाङ्मय गृह, मुंबई, २०१२ पृ.क्र. ०१
३. कित्ता, पृ.क्र. ०१.
४. कित्ता, पृ.क्र. ०२.
५. डोळस अविनाश, आंबेडकरी विचार आणि साहित्य, साकेत प्रकाशन, औरंगाबाद, १९९४, पृ.क्र. १०.
६. तेलतुम्बडे आनंद, सामाजिक न्याय आणि जागतिकीकरण लोकवाङ्मयगृह मुंबई, २०१०, पृ.क्र. १०.
७. वांबळे उत्तम, जागतिकीकरण आणि दलितांचे प्रश्न, सुगावा प्रकाशन, पुणे २००२, पृ.क्र. १३.
८. काळे अरुण, नंतर आलेले लोक, लोकवाङ्मयगृह, मुंबई, २००८, पृ.क्र. ३७.
९. कित्ता, पृ.क्र. ७२-७३.


 प्राचार्य, स्वामी विवेकानंद शास्त्रालय,
 मुकामबाद त. नंदेड ज. नंदेड.

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Shastralyaya
 Mukramabad Tq. Mukhed. Dist. Nanded



CONTENTS OF MARATHI PART - II

अ. क्र.	लेख आणि लेखकाचे नाव	पृष्ठ क्र.
१	नेपोलियन बोनापार्टचे वाचन डॉ. व. ना. पांचाळ	१-३
२	महाराष्ट्र राज्य मार्ग परिवहन महामंडळ, औरंगाबाद विभागाची एकूण उत्पन्न प्रवृत्ती घोसले रमती विस्तारराव	४-६
३	आर्थिक सुधारणोत्तर काळात मराठी-भाषीत महाराष्ट्र भाषीण बंकिनी प्रगती डॉ. अमिता डी. बनकर	७-१५
४	महाराष्ट्रातील मनोरंजनाचे योजनेतर्गत अनुसूचित जमातींची रोजगाराची स्थिती : एक अभ्यास विश्वंकर पंजाब तायडे	१६-१९
५	मराठी वृत्तपत्रातील अग्रलेखानेचे लक्ष्मू शेळके मनेष लक्ष्मू शेळके डॉ. दिनकर माने	२०-२२
६	दिलित साहित्याचे स्वरूप आणि साठोसठी दलित कविता प्रा. डॉ. बालाजी खराबे	२३-२८
७	समकालीन जगण्याचे नाते सांगणारे स्वरूपन : दगडफोड्या प्रा. डॉ. मारोती अंबादासराव गायकवाड	२९-३५
८	महाराष्ट्रातील भटक्या जाती जमाती: समस्या आणि उपाययोजना प्रवीण र. वैष्णव	३६-३९
९	सरकारने पटनात्मक नितिमतेचे पालन करणे आवश्यक आहे डॉ. राजेंद्र बंडू शेजुळ	४०-४७
१०	पाली साहित्यातील प्रज्ञा, शील करुणाच्या आचरणाने स्त्री सशक्तीकरण शक्य संदीप वामन हिवराळे	४८-५०
११	भिल्ल लोक कथांमधील स्त्री व्यक्तितरेखा प्रा. डॉ. योगिता देवगिरीकर (कथले)	५१-५३
१२	आदिवासी समाजाची टळक लक्षणे प्रा. डॉ. गोवर्धन बजरंग लांब	५४-६०



६. दलित साहित्याचे स्वरूप आणि साठोत्तरी दलित कविता

प्रा. डॉ. कल्पजी खारबे

विभागप्रमुख, मराठी विभाग, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुकामबाद, जि. नंदेड

प्रस्तावना

दलित साहित्याची चळवळ भारतातील आर्थिक, राजकीय, धार्मिक आणि सांस्कृतिक पार्श्वभूमीवर जन्माला आली. भारतात विषमतेने कवचभे घेर केले होते आणि आपल्या खोबीच्या तत्त्वज्ञानाला प्रतिष्ठाही प्राप्त करून घेतली होती. त्यामुळे झेगत्याही प्रकारच्या परंपरागत अस्मिंख्य पौराणांनी आपले विशाल रूप कायमने रुजवले होते. त्याला वेद, पुराण, महाभारत, रामायण खतून पाठवळ प्राप्त झाले. मराठी वाङ्मयावर या सर्व घटकांचा परिणाम झालेला होता. त्यामुळे मराठी वाङ्मय विश्वीत अनुभव विश्वापत्केडे जाऊ शकले नाही.

दलित साहित्याने मराठी वाङ्मयाला आणि परंपरागत मराठी मानसिकतेला जायबंद करणाऱ्या विकृत मूल्य संकल्पनांना खेदण्यस प्रारंभ केला आणि माणसाच्या जगण्याला आणि जीवनाला नाकारणारे तत्त्वज्ञान उलयून टाकण्यास आरंभ केला. एकूण मानवी जीवनातील खऱ्या अनुभव विश्वाच्या अविष्करणस सुरूवात झाली. माणुसकीपासून वंचित राहिलेल्या आणि परभूततेच्या परतयेत आयुष्याची अनेक वर्षे घालवलेल्या समाजजीवनाचे आक्रंदण दलित साहित्यातून आविष्कृत होऊ लागले. माणसातून माणुसकीची गरज आहे, हे पहिल्यांदा दलित साहित्याने मराठी साहित्याला सांगितले. ज्यांच्या वाट्याला आत्मतिरस्कर आणि परभूतता याशिवाय काहीही येऊ शकले नाही आणि हजारे वर्षांपासून गुदमरलेले, नजरअंदाज केलेले स्वास दलित साहित्याने प्रतिष्ठेच्या शिखरावर पोहोचविले.

माणसातून प्रतिष्ठा मिळवली पाहिजे. अलक्षीत जीवनानुभव अक्षर झाले पाहिजेत. याचा ध्यास दलित साहित्याला आहे. ज्यांच्या वाट्याला असंढपणे दुःख, दैन्य, दारिद्र्य व शोषण, परभूतपणा याशिवाय काही येऊ शकले नाही. त्यांच्या जगण्याचे स्वास दलित कवींनी व लेखकांनी निर्णयव्या आकृतीबंधातून खेदंतपणे रेखाटलेले आहेत. दलित साहित्य मानवी जीवनाच्या उभारणीसाठी आवश्यक असणाऱ्या मूल्य संकल्पनांना मांडणारे आणि मानणारे साहित्य असल्यामुळे ते मानवतावादी साहित्य म्हणून जगासमोर आले. दलित साहित्याने मराठी वाङ्मयाला कथा, कविता, कादंबरी, नाटक आणि आत्मकथा या विविध वाङ्मय प्रकारतून निर्णयव्या अनुभवांची विलक्षण ताकद दाखवून दिली आहे. त्यातून मराठी साहित्याच्या विश्वात मोलाची भर पडली आहे. म्हणून दलित साहित्याचे स्वरूप आणि साठोत्तरी दलित कविता या अनुषंगाने या शोधनिबंधामध्ये चर्चा करण्यात येणार आहे.

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed, Dist. Nanded

दलित साहित्याचे स्वरूप

दलित साहित्य निरुद्ध्या अनुभव विश्वामुळे आणि मूल्यापिरीत प्रेरणांमुळे मराठी वाङ्मयापेक्षा वेगळे ठरले आहे. मराठी वाङ्मयातून आलेले साम्य विषय निवृत्तीत पद्धतीने रेखाटलेले आहेत. त्याला एक प्रकारची मर्यादा पडली होती याच अनुभव याचकांना येऊ लागला हे सत्य आहे. दलित जाणिवांच्या साहित्य लेखनाला प्रारंभ आंबेडकरांच्या चळवळीच्या पूर्वी झाले होते. या लेखनाला सामाजिक संदर्भ होते, परंतु त्याला खरे सामर्थ्य डॉ. बाबासाहेब आंबेडकरांच्या उदयानंतर आले हे प्रत्यक्ष सत्य आहे. दलित साहित्य भारतीय शोषण संरचना नकारते. त्याचबरोबर अन्याय, अत्याचार, अप्रसंगता या विषय सद्बोध प्रणालीला नाकारते आणि परिवर्तनीय गिनारपारेचा अंगीकार करते.

दलित साहित्यातून आलेले सामाजिक, उच्चमैत्री, आर्थिक आणि सांस्कृतिक जीवन व्यवतीव्रत पातळीवर व्यक्त होते, परंतु ते सामाजिक जीवनाचे रूप घेऊन आकार घेते. दलित साहित्यातील व्यवतीव्रतापेक्षा अनुभव समाजाचा हुंकार म्हणून येतो. तो अनुभव आत्मनिष्ठेतून समूहनिष्ठेकडे जातो. दलित कलकृतीतील जीवन एका व्यवतीव्रते उभत नाही तर ते समूहाचे होते. त्यामुळे त्याला सामाजिक संपर्काचे रूप येते. त्याचे प्रतिबिंब दलित कथा, कविता, नाटक, कादंबरी, आत्मचरित्र या वाङ्मय प्रकारातून दिसून येते.

दलित कविता किंवा अन्य कोणताही वाङ्मय प्रकार मी करून समूहाकडे जातो. अशा प्रकारची शक्ती आणि सामर्थ्य फक्त दलित साहित्यालाच प्राप्त करता आले असे प्रथमपणे जाणवते. मराठी साहित्याला हा सर्व प्रकार वेगळा होता. मराठी वाङ्मयामध्ये जे अनुभव कधीच येऊ शकले नाहीत किंवा जाणीवपूर्वक त्याचे रेखाटन केले नाही अशा अनुभवांना दलित साहित्याने चिरंतन केले. या साहित्यातून सामाजिक क्रान्तीची जाणीव प्रकट झाली. सामाजिक संघर्शाच्या प्रक्रियेला प्रारंभ झाला. माणुसकीच्या लढाईला आरंभ झाला. समाजातील अन्याय मूळ तत्त्वज्ञानास कडाडून विरोध केला आणि जगाला सुखमयतेकडे घेऊन जाणारा बुद्ध्याचा मानवतावाद दलित साहित्यातून रेखाटला. अन्याय करणारे तत्त्वज्ञान घेऊन दिले. पूर्वापार चालत आलेल्या परंपरा किंवा चालीरिती नाकारलेल्या आहेत. कारण निकोप समाजनिर्मितीची ताकद त्यात नाही, असे दलित कवींना मनापासून वाटते.

दलित कविता

दलित साहित्याचा पहिला हुंकार म्हणून दलित कवितेकडे पाहिले जाते. तरा त्याचा निर्देश केला जातो. मराठी वाङ्मयाला नवे रूप प्राप्त करून देण्याचे कार्य दलित कवितेने केले आहे. पारंपरिक मराठी कविता ज्या नियमात अडकलेली आहे, त्याला छेदण्याचे काम दलित कवितेने केले आहे. मराठी समीक्षा शास्त्राचे अपुरेपण जगसामोर दलित कवितेने उभे केले. दलित कविता माणसाचे गाणे गाते. तिला माणुसकीची गरज वाटते. ती भविष्याकडे आणि भोवती घडणाऱ्या घटनांकडे अतिशय डोळसपणे पाहते. जगाचे सम्यक आकलन करते. तिच्या अस्तित्वाविषयी प्रख्यात दलित साहित्यिक डॉ. गंगाधर पानतावणे म्हणतात की, 'दलित कविता या मातीत जन्मलेली कविता आहे. म्हणून ती अस्सल मराठी कविता आहे. भारतीय



जीवनाची ती सहज सुंदर अभिव्यक्ती आहे. महणजेच दलित कविता मूळ भारतीयांची रचना आहे. त्यामुळे तिला अंगभूत सादर आणि साधर्म्य प्राप्त झालेले आहे. ती जिवंत रूपात अभिव्यक्त झालेली आहे.

साठोत्तरी दलित कविता

१९६० नंतर दलित कवितेच्या सव्या महत्त्वाचा प्रारंभ झाला. त्यातील अत्यंत प्रभावी आणि प्रतिभावान कवी म्हणून नामदेव बसाल, यशवंत भगोहर, अर्जुन हांगले, केशव भेषाम, कवच निंबाळकर, प्रबुद्ध सफळळे इत्यादी कवी ओळखले जातात.

नामदेव बसाल:

नामदेव बसालची कविता मराठी कवितेत आणि दलित कवितेच्या इतिहासात महत्त्वाचा टप्पा समजला जातो. मराठी कविता ज्या परंपरेत आशयसूक्त अडकून पडली होती ती परंपरेत नियमात कवच फसलेली होती. अशा वातावरणात बसालाची कविता जन्माला आली. गोलपीठा या काव्यसंग्रहामुळे नामदेव बसाल यांनी कवी म्हणून सर्वदूर मान्यता मिळाली. मराठी विश्वात आणि सभ्यतेत जे विश्व कवी दिसले नाही अशा अपरिचित अनुभवांचे निरिच्छे पदर जगासमोर उभे केले. जे मराठी वाङ्मयात अपरिचित होते त्यांनी आपल्या कवितेतून समाज जीवनाचे यथार्थ आकलन आणि अवलोकन केले हे जाणवते. देशात स्वतंत्र मिळाले, परंतु या देशातील उपेक्षित दलित म्हणून माणूस अजूनही गुलाम आहे. त्यामुळे कवी नामदेव बसाल म्हणतात की,

'१६ ऑगस्ट एक संशयस्पद महत्त्वय भगोहर
स्वातंत्र्य कुठल्या गाढवीचं नाव आहे
रामराज्य झाल्या घरात आपण राहतोत
उदगम विभ्रस, उंची, संस्कार, संस्कृती
कंचा मूलभूत अर्थ स्वातंत्र्याचा'

अशा अनेक कवीतांतून भारतीय समाज जीवनातील निरिच्छे प्रश्न आणि समस्यांचे जीवंत चित्रण आलेले आहे. मराठी कवितेने अस्पृश्य ठेवलेले समाज विषय आणि आशय नामदेव बसाल यांनी प्राधान्याने मांडले आहेत. त्यांची कविता या विश्वाची खरी कथा आहे. माणसाच्या जगण्याचे श्वास आहे. अनंत वर्षापासून उंचीत राहिलेल्या मनातील धग नामदेव बसालाची कवितेच्या माध्यमातून व्यक्त केलेली आहे.

बाबूराव बागूल :

बाबूराव बागूल सर्वश्रेष्ठ दर्जाचे कथाकार म्हणून ओळखले जातात. कथेबरोबरच त्यांनी काही कविताही लिहिलेल्या आहेत. बाबूराव बागूलची कविता नवसमाज निर्मितीसाठी जीवनातील कोणत्याही संघर्षात कवटाळते. सामाजिक, आर्थिक, शैक्षणिक आणि सांस्कृतिक परिवर्तनाला कवेत घेते. एकूण मानवी जीवनावरील अडक बंदेमुळे त्यांची कविता सामाजिक जागृतायण ठरते. भारतीय समाजातील असाध्य प्रश्नांमुळे बाबूराव बागूल अतिशय दुःखी होऊन म्हणतात की,

PRINCIPAL

Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded

‘ज्यांनी चूक केली इतं जन्म घेण्याची

त्यांनीच ती सुपारली पाहिजे

देश सोडून अथवा भीषण युद्ध करून.’

आपल्या जीवितान्या उदारतासाठी आणि प्रतिष्ठेकरिता स्वतःच लढण्यासाठी सिद्ध झाले पाहिजे. कारण जीवित राहण्यासाठी संघर्षाशिवाय दुसरा पर्याय नाही हे समूहाचे दुःख नानुभव नागुलांनी नेमक्या शब्दात पकडले आहे. आपल्या सभोवतीच्या विषम जगात आकार आणि रूप देण्यासाठी संघर्ष हाच एकमेव मार्ग आहे. नानुभव नागूल माणवावर प्रचंड प्रेम करतात. तरीही ते संघर्षाला कटाक्षतात. कारण त्यांना यंत्रितान्या जीवितान्या उदार महत्त्वाचा वाटतो.

चामन निंबाळकर :

चामन निंबाळकर यांचे गावकुसाबाहेरील कविता आणि मन्मूद असे दोन काव्यसंग्रह प्रकाशित झालेले आहेत. गावकुसाबाहेरील समाजाच्या अंतरमनातील यातनांची मालिका त्यांच्या कवितेतून येते. भारतीय समाजाने मानवाला कुरूप केलेले आहे. त्यामुळे कविते दुःख वाटते. शब्दांचे वैभव रेखाटताना चामन निंबाळकर म्हणतात की,

‘शब्दांनीच पेटतात घरे, दारे, देश आणि माणसे सुद्धा

शब्द विझवतात आगही, शब्दांनीच पेटलेल्या माणसांची’

निंबाळकरांची कविता सहजपणे आपल्या व्यथा, वेदना आणि दुःख व्यक्त करते. त्यातून सुटू इच्छिणाऱ्या मनांची घालमेल ते नेमकेपणाने शब्दात पकडतात. या प्रकारचे द्वंद्व त्यांच्या कवितेतून येते. दलितांच्या जीवनातील विविध प्रश्न आणि त्यातून अस्तित्वात आलेले भयावह जीवन याचे प्रभावी चित्रण त्यांच्या कवितेत येते. निंबाळकरांच्या कवितेसंदर्भात यशवंत मनोहर म्हणतात की, ‘प्रतिकूलतेतून वाट काढण्याचे सामर्थ्यही तिच्यात आहे. युगाच्या मांडीचे ठोके युगाच्या माथेतून व्यक्त करण्याची लक्षणीय ताकद निंबाळकरांच्या कवितेत आहे.’ अश पद्धतीचे गौरवोदगार यशवंत मनोहर यांनी त्यांच्या कवितेबद्दल काढले होते.

केशव मेश्राम :

केशव मेश्राम हे दलित चळवळीतील आघाडीचे कवी, कथाकार आणि कादंबरीकार म्हणून ओळखले जातात. त्यांचा उत्खनन हा काव्यसंग्रह प्रकाशित आहे. ग्रामीण आणि शहरी जीवनाचा मिलाप त्यांच्या कवितेतून प्रकटलेला आहे. समाजाचे अत्यंत नुकसान कसे झाले आहे, माणूस कसा अपवित्र ठरला आहे यामुळे ते अत्यंत प्रशोभकपणे आणि उपरोधाने एक दिवस परमेश्वराला या कवितेत लिहितात की,

‘प्रेम करणारी माय माऊली

एक दिवस मी परमेश्वराला

आईवरून शिवी दिली.’



केशव मेश्राम हे साप्ताहिक ज्ञान असलेले कवी आहेत. त्यांना चारतऱ्हे उल्लेख घेण्याची जगण आहे. त्यांनी कविता अनेक जाणिव्यांनी समृद्ध आणि सशक्त झालेली आहे. त्यांनी कविता परिवर्तनाची जगण करते. त्यामुळे ही कविता विद्रोहाने बोट घेऊन अविष्कृत होते.

दया पवार :

दया पवार हे या पिढीतील प्रमुख कवी होते. कोंढवाडा, पाणी कुठून उल्लेख काई हे दोन कविता संग्रह त्यांनी प्रकाशित झालेले आहेत. या देशात दलितांना साप्ताहिक जीवनातही प्रतिष्ठा मिळवू नवी आणि साहित्यातही त्यांनी योग्य विवरण झाले नाही. मराठी साहित्य आणि महाकाव्याने दलितांच्या जीवनाविषयी आणि त्यांच्या अस्तित्वाविषयी कोणत्याही प्रकारचा उल्लेख केला नाही. त्यामुळे दया पवार छिन्न होऊन म्हणतात की,

हे महाकवे

तुला महाकवी तरी कोण म्हणावे

हा अन्याय अत्याचार वेशीवर टांगणारा

एक जरी श्लोक तुला असतास

तर तुझे नाव काळजावर बरेच ठेवले असते."

परंपरेच्या विरोधी अतिशय कडकट भाषेत कवी आपली प्रतिक्रिया नोंदवते. हिंदू मानसिकतेने जगासमोर प्रश्नांचे अनेक जाळे निर्माण केले. दलित समाज त्यात कायमचा बुडाला महाकाव्याची निर्मिती सुद्धा त्यान मानसिकतेतून झाली आहे. परंपराशरणात कवीला मान्य नाही. माणूस दया पवार नवमूल्यांचा आग्रह धरताना, परंतु त्याला दुराग्रहाचा आणि द्वेषाचा स्पर्श होत नाही. उलट मानवी जीवनाच्या उत्पापनासाठी ते प्रयत्नशील आहेत हे माननीय सूत्र त्यांच्या कवितेतून येते.

यशवंत मनोहर :

यशवंत मनोहर यांचे दलित साहित्यात खूप मोठे योगदान आहे. दलित कवितेच्या इतिहासातील प्रमुख कवी म्हणून ते प्रसिद्ध आहेत. दलित कवितेतून व्यक्त झालेल्या विद्रोहाला अधिक व्यापकत्व देण्याचे कार्य यशवंत मनोहर यांनी केले आहे. नकारातून विद्रोहाकडे जाणारी आणि अनुभवांच्या अससलतेला जोपासणारी कविता मनोहर लिहिताना मानवी जीवनाला संपन्न करणारी समग्र शोषणस्थळे जगासमोर उभी करतात. या संदर्भात डॉ. योगेंद्र मेश्राम म्हणतात की, 'पाखांड्यांना सावली प्रकाशाने त्यांचे अंतःस्थ आभाळच फाडून चिंध्या चिंध्या करणारा अफाट विद्रोही मनोहरांच्या प्रत्येक कवितेतून ओळी ओळीतून शब्दासारखा, वाहताना दिसतो.' भारतीय समाजव्यवस्थेतील समाजमूत्र मानवाला ष्ट्याळ करणारे आहे. आयुष्याला सुरंग बनवणारी विचार प्रणाली बदलत आहे. माणूसकीला पेटवणारे परंपरेचे ओझे हजारे वर्षांपासून कार्यरत आहे. अनेक पिढ्यांना तारत करणाऱ्याची पाप करणारी व्यवस्था म्हणून जगात सर्वत्र ओळखली जाते. अशा अन्यायी, जुलमी व्यवस्थेला कवी नाकारतो आणि पुढे यशवंत मनोहर लिहिताना की,

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded

'भारतीय परंपर्यांनो दिवलेअर केरेस्त्या गुलागीतारखी

जीवनाची सर्वपंडतत्वज्ञाने पुरावी लग्नील.

सर्व बेरजा कशा होऊ शकतात

कडू भागाकारही करावे लग्नील

उगीच दिर्घायु ठरलेले सम्यगीत अज्ञय

आबच्या उजेडात चाळवे लग्नील

मंद लुकाढणाऱ्यांवर मनःपूर्वक मुंकाणा

संतापाच्या इतरही जाग मंडाच्या लग्नील.'

भारतीय परंपरेचा काळ इतिहास ज्या तत्त्वज्ञानावर उभा आहे त्याचा भागाकार झाला पाहिजे. आपल्या जीवनाचा आणि भविष्याचा आपण स्वतःत शोष घेतला पाहिजे. त्यातून नवा मार्ग अस्तित्वात आला पाहिजे. नीर्ण रुढी, परंपरांना आणि अनादारी विचार विश्वांना मूठमाती मिळाल्या पाहिजे, असा परखड विचार यशवंत मनोहर व्यक्त करतात.

समारोप

दलित साहित्याने मराठी वाङ्मयाला अनेक विविध आयाम प्राप्त करून दिले आहेत. दलित साहित्य मराठी वाङ्मयातील एक प्रमुख प्रवाह आहे. दलित कविंनी मराठी कवितेचा प्रवाह विस्तृत केला आहे. साठोत्तरी दलित कवीने मराठी वाङ्मयाला नवे अनुभवविश्व आणि अभिव्यक्ती सामर्थ्य दिले. दलित कविता मनुष्याच्यासाठी आसुसलेली आहे. कारण तिला अमंगलतेचा तिटकारा आहे. नियतीवाद, परंपरावाद याचा ती धक्कार करते. त्या विरोधात विद्रोह पुकारते. मनुष्य जीवनाला कलंकित करणारे धर्म, तत्त्वज्ञान नाकारते. हजारो वर्षांपासून होत आलेल्या प्रतारणेला प्रभावी उत्तर म्हणजे साठोत्तरी दलित कविता आहे.

संदर्भसूची

1. मेश्राम योगेंद्र, दलित साहित्य उदगम आणि विकास, मंगेश प्रकाशन, नागपूर, १९९८, पृ. ६२
2. फडके भालचंद्र, दलित साहित्य: वेदना आणि विद्रोह, सुविद्या प्रकाशन, पुणे, १९८९, पृ. १२३
3. मनोहर यशवंत, आवेडकरवादी साहित्य, भीमरत्न प्रकाशन, नागपूर, १९९९, पृ. १७५
4. किता, पृ. १७८
5. किता, पृ. १७९
6. मेश्राम योगेंद्र, उपरोक्त, पृ. ८५
7. पवार दया, कोंडवाडा, मेहता पब्लिशिंग हाऊस, पुणे, १९९९, पृ. १०
8. मेश्राम योगेंद्र, उपरोक्त, पृ. १२३
9. किता, पृ. १२४

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय
मुकामबाद ता. मळेड जि. नांदेड



ISSN 0976-0377

RNI. MAHMUL02805/2010/33461

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

**Editor In Chief
Dr. Balaji Kamble**

**PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed, Dist. Nanded**



RNL MAHMUL02805/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
3.42

ISSN 0976-0377

Issue : XV, Vol. I, Jan. 2017 To June 2017

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author (s)	Page No.
1	Emerging Challenges of Banking Sector	Dr. Dileep S. Arjune	1
2	Narcissist Dimension of Women Identity in Henry James Novel	R. S. Dokade	5
3	समकालीन हिंदी कहानियों में दलित एवं सामाजिक चेतना	डॉ. जानअहेमद के. जे.	10
4	हिंदी उपन्यास की वर्तमान स्थिति और आदिवासी चिन्तन	डॉ. अर्जुन शंकरराव कसबे	15
5	जवाहर रोजगार योजना प्रशासन : कभी खुशी कभी गम	डॉ. गंगणे जीवन सुदामराव	20
6	व्यवस्थापन शास्त्राचा विकास ..	एम. बी. राठोड	26
7	ग्रामीण विकासाविषयी महात्मा गांधी यांचे विचार	डॉ. आर. डी. जाधव	35
8	नगरपालिकेचा इतिहास	आश्विन गुरुनाथराव हावा	40
9	दर्याबाई निंबाळकर	डॉ. आर. एम. साळुंके	44
10	महात्मा फुले यांचे शैक्षणिक विचार व कार्य	डॉ. हनुमंत भुमकर	51


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed, Dist. Nanded



RNI.MAHMUL02805/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
3.42

ISSN 0976-0377

Issue : XV, Vol. I, Jan. 2017 To June 2017

5

NARCISSIST DIMENSION OF WOMEN IDENTITY IN HENRY JAMES NOVEL

R. S. Dokade

Dept. of English

Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Mukramabad, Dist. Nanded

2

Research Paper - English

ABSTRACT

Henry James is known as the 'architect of the modern novel' and a legendary master because he attained a particular maturity in his literary works. Mary Wollstonecraft quoting Load Bacon has suggested that the best works and those of greatest merit for the public have proceeded from the unmarried or childless. James's faith in the integrity of art is by now a part of received tradition of James' criticism. He tried to carve universal truth from his limited experience. Perhaps the solitary introspecting bachelor's observations made his approach life realistically.

Henry James's American heroines have some special characteristics. They are nineteenth century women with different status in the society from the one observed today. Woman in the nineteenth century assisted her husband in his business, particularly in farming the land and trade with the other countries. After civil war she was given independence to some extent. Education made her aware of lacunas in herself which she tried to express freely. Her views about the status of woman in the society made the other women aware of the need for equal status with men. We can safely conclude therefore that Henry James today enjoys a reputation that has stood to the

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



RNI MAHMUL02805/2010/33481

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
3.42

ISSN 0976-0377

Issue : XV, Vol. 1, Jan. 2017 To June 2017

7

Narcissism makes one thing about one's self. A narcissist, who has knowledge, does not become unsuccessful in life. But the narcissist with innocence is an utter failure in life and judgment. Their very ego blinds them and makes them think about themselves. The fact that narcissism is a well defined process of identification, in which the ego is regarded as an absolute end the subject takes refuge from himself in it. Many other attitudes authentic or inauthentic are met with in woman. But it is true that conditions lead woman more than man to turn towards herself and devote her love to herself.

Isabel has thirst for knowledge and craves for wisdom. James has taken her to Europe to fulfil her thirst and craving. Knowledge and wisdom thrive and prosper in Europe in a better manner than in America. Isabel is very much proud of her personality. She has been described as a self centred adolescent from the beginning of the novel.

Isabel's knowledge is meager and ideals are inflated. Her confidence is innocent and dogmatic. She has exacting and indulgent temper. She possesses curiosity and fastidiousness and has desire not only to look well but if possible even better.

She holds that a woman ought to be able to live by herself, in the absence of exceptional thirstiness and that it is perfectly possible to be happy without a society of a more or less coarse minded person of other sex. It often seemed to Isabel that she thought too much about herself; "you could have made her colour any day in the year, by calling her a rank egoist." Isabel's nature had, in her conceit a certain garden like quality, a suggestion of perfume and murmuring boughs of shady bowers and lengthening vistas, which made her feel that introspection was after all, an exercise in the open air, and that a visit to recesses of one's spirit was harmless when one returned from it with a lapful of roses.

Isabel has all the good qualities i.e. Convictions, values, wisdom, morality, tastes, behaviour to be explained by her situation. The fact that transcendence is denied her keeps her as a rule from attaining the loftiest human attitudes. She was very critical herself. It was incidental to her age, her sex and her nationality, but she was very sentimental as well as there was something dryness that set her own moral fountains flowing. Isabel has a system and an orbit of her own. It tells her other things besides things which both contradict and confirm each other. Isabel lacks self realization in her actual life and in spite

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded



test of time. James has projected women characters better than other novelists. His foresight makes him raise woman's status and her views about independence.

Key words : Narcissist, interdependent and innocence

Introduction :

Born in New York city in 1843, Henry James turned himself restless personality because his father kept the family for a long time on move. In his earlier life, he did not belong to any social group. He became an observer and turned into a solitary wanderer. American men of letters have criticized James as an alien. The attack can be defended by pointing out that the men and women in his fictional world are taken from the American scene. His heroes and heroines have a flaw i.e. innocence, innocence of the new world. One way of looking at James's novels would be to say that James wanted Americans to be aware of this flaw.

James's views about woman and her independence helped him in getting followers. He was succeeded by Edith Wharton. She was an active protagonist of woman's freedom who dealt with similar themes in her novel. These two novelists have sown seeds of woman's liberation in 19th century and four years after James's death i.e. in 1920 women succeeded in achieving full independence. The present paper examine the heroines of Henry James novel 'The portrait of lady' written in 1880 and was published in 1886. the from a narcissist point of view.

Isabal Archer:

The Narcissist Henry James' portraits of Venuses and Dianas have not been well carved and painted. He has not succeeded in making these women characters perfect. Perfection is Godly quality and it is not a human attribute. James has characterized adolescents because his mind was preoccupied with an adolescent whom he loved but could not save from nature's clutches. James has portrayed an adolescent with independent mind and spirit who adheres to morals and manners inherited from her American parents. Isabel, the American adolescent, projects all the good qualities of the new world through her own behavior in the old world i.e. Europe where women as well as men give less importance to them. *She goes in search of independence in the large spectrum of Europe.*



of it she imagines herself superior to European lovers. It is the ambitions self which is responsible for her marriage to a sterile dilettante. It is a peculiar situation which compels her to yield and forget herself while marrying Osmond.

Isabel's three suitors, Lord Warburton, Ralph and Casper Goodwood do not like her egocentric nature. Though they are enchanted by her beauty, grace and elegance, they fail to win her favour. They could not study the nerves of the lady to erase herself. These suitors could not find out and judge the subjects of her liking and her aim of setting on a sail. She behaves in a strange manner and rejects the offers of three loitering suitors, who, according to her opinion will not act as flatterers after marriage. So she has found a better man who has been described by her as has no money, no names, no importance, no property, no title, no honors, no houses, nor reputation nor brilliant belongings of any sort. It is the total absence of these things that pleases me.

Isabel marries Osmond because she is egocentric and to fulfil her ego she thinks he is a better choice than the other three suitors. She thinks that she will be above to establish her superiority and supremacy over him. She possesses all those qualities which Osmond does not possess and with these qualities she thinks she would be able to enjoy independence which is a very strong impulse in her, and will be able to behave in the society as an independent lady. She thinks she could not have enjoyed the same with her other suitors. She proves to be a very successful lady in coming out of the whirligig of love of these suitors and does to yield to their riches, characters and conventions and the other qualities. Isabel Osmond marriage is not a marriage of two souls. They are like two poles of the earth which can never meet but it is a marriage of imagination and reality. Isabel's true self could not get any pleasure in Osmond's house which was the house of darkness, the house of dumbness, the house of suffocation.

Isabel and Osmond are the egocentric persons though their approaches to life are different. Osmond's nature and behavior is not liked by Isabel because she observed sudden change in it. James makes her go according to her American ideology and morals and tries to give a different turn to the novel which is a unique quality that of projecting his ideal woman of the ideal world.

PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



Conclusion :

Isabel sticks herself to morality but her decisions are not proper because she is always in the world of dreams. Whatever ideas Isabel possesses about herself are bestowed on her by the fortune and James himself writes about it. Isabel has misjudged herself and her views about life. She does not care for the suitors and relatives when they try to pass their experienced comments on and about the person she favours, quite often her comments, on the other hand are full of inexperience and ignorance. Isabel gains husband but losses independence which she had valued too much because of eagerness and ignorance. She was very happy and free before marriage. After marriage she becomes uneasy, restless and frustrated. The ego before marriage is lively and over shadowing which does not allow her to respect the words of elders, friends and sympathizers. She turns into a frustrated Narcissist after marriage. In the final scene of the novel James reveals by illustrating Isabel's motives which because too expressly sexual. She does possess confidence in her chastity in the presence of Warburton and Casper at Garden court. She leaves Garden court for Rome and Osmond. Henry James's heroine, Isabel Archer of *The Portrait of a Lady* has all the characteristics of a Narcissist woman.

References :-

- 1) Henry James (ed.) *The Portrait of a Lady* (Delhi Oxford University Press, 1981), p.55.
- 2) Simone de Beauvoir, *The Second Sex* (Harmondsworth: Penguin Books Ltd., 1984), pp. 641-42.
- 3) Quentin Anderson, *The American Henry James* (New Jersey: Rutgers University Press, 1957), pp.187.

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed. Dist. Nanded

3



ISSN 2229-4406

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS



EDITOR IN CHIEF
Dr. BALAJI KAMBLE

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



Issue : XV, Vol. VI

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

IMPACT FACTOR
3.18

ISSN 2229-4406
Sept. 2017 To Feb. 2018

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No
1	V.S. Naipaul's A Bend in the River as a Postcolonial Novel of Disillusionment Dr. Sanjay S. Tamgadge	1
2	Man-Woman Relationship in the Short Stories of Jeffrey Archer R. S. Dokade	6
3	Jain Philosophy Archana Zodape, Dr. Vinod Indurkar	14
4	A Comparative study of Selected Motor Ability Between Hockey and Football Players Dr. S. R. Dhondge	20
5	नारी उत्थान के परिप्रेक्ष्य में भारतीय समाज सुधारकों का योगदान डॉ. संतोषकुमार गुंडप्पा गाजले	24
6	रविन्द्रनाथ के नाटकों में व्याप्त अध्यात्म - जीवन : एक परिश्लन डॉ. शोभा नारायणराव ढाणकीकर	36
7	महिला बचत गटासाठी विविध उद्योग व्यवसायातील संधी व्ही. व्ही. निंबाळकर	39
8	माध्यमिक स्तरावरील शालेय विद्यार्थ्यांना गणित हा विषय पारंपारिक व संबोध साह्यता (Concept Attainment) प्रतिमानाद्वारे अध्यापन करून त्याची परिणामकारकता तपासणे अल्का के. जैन	44
9	यमुना पर्यटन मधील स्त्री-दुःखाची सामाजिकता डॉ. उनमेष शेंकडे	51
10	विडी उद्योगातील महिला कामगार : भारतीय संविधान, विविध अधिनियम एक समाजशास्त्रीय अभ्यास डॉ. डी. एम. दामावले	55

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



2

Man-Woman Relationship in the Short Stories of Jeffrey Archer

R. S. Dokade
Dept. of English,
Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Mukramabad, Dist. Nanded


Research Paper - English

ABSTRACT

The present research paper tries to explore man-woman relationship in the short stories of Jeffrey Archer. It is considered as one of the most important socio-cultural issues in the modern British society. The socio-cultural construct of any society is directly proportional to the moral values, behavior and attitude of men and women of that particular society. Jeffrey Archer is a master in depicting these socio-cultural issues through his short stories. The present research paper is an analysis of two short stories from the Short-story collection 'The Collected Short Stories'. The researcher would like to explore ethical and unethical sides of man-woman relationship of the modern British society in particular and modern global society in general.

Keywords: man, woman, relationship, society, culture, ethics, behavior etc.

The socio-cultural construct of any society is the result of man-woman relationship of that particular society. Though all the relationships like filial relationship, conjugal relationship and sibling relationship are at the core of human life, man-woman relationship is considered as the most important human relationship. Since the ages, this relationship


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhad. Dist. Nanded



has been focused by many writers and tried to depict the socio-cultural norms of the particular society. The ancient literature tried to focus the ideal man-woman relationship whereas the modern writers portrayed a genuine picture of this relationship. Now-a-days, the remarkable impact of industrialization, globalization and urbanization is seen on the man-woman relationship.

Jeffrey Archer, one of the most popular short story writers of the present era, has depicted man-woman relationship with his unique style. The women in the modern society are very much educated and liberated so they have all the right to decide their relationship with the men. They are not subsidiary or slaves of men as said by P. Ramamoorthy. He says: "Man's relationship with woman is most often the bond that exists between a master and a slave." (115). Their social, cultural, economic and political role in the modern society is notable and praiseworthy. Jeffrey Archer has not only praised his male/female characters but also satirized them in the present socio-cultural scenario of the British society. He has also explored the psychological and emotional mindset of his characters that are responsible for their desires and actions. It can be said that the moral or immoral behavior of his characters can be analyzed on the socio-cultural background of the particular society.

The present research paper is an attempt to generalize the characteristics of man-woman relationship in the modern society with the help of two short stories from the short story collection 'The Collected Short Stories'. Not for Sale and One-Night Stand are the two short stories undertaken for this study. Though this volume comprises thirty-six short stories, the present research paper considers only these two short stories because they focus man-woman relationship in particular.

'Not For Sale' is a story of Sally Summer who was deeply in love with Tony (Antonio Flavelli). Sally had won numerous prestigious prizes for her paintings during her school days but the time had come when she had to decide whether to continue with painting as a profession or accept an appointment as a school teacher or work with an advertising agency. Her parents knew that their daughter had a great talent but they didn't want to waste her talent just on painting. She convinced her parents by saying, "One year, and one year only. After that, if the paintings aren't good enough, or if no one shows any interest in exhibiting them, I'll be realistic and look for a proper job" (329). Sally's this




proposition clearly shows the mindset of modern society and women living in it.

She painted almost twenty-seven canvases during that year and kept them in the folder. By the end of year, she went to London, along with her paintings, to meet the owners of art galleries. She met Simon Bouchier and showed him his paintings. He liked the canvases painted by Sally and promised her that he would put her paintings in his art gallery for an exhibition. Tony, who was present at that time, was introduced to Sally by Mr. Bouchier. Sally met Tony on another occasion when she was visiting other art galleries. Tony invited Sally for dinner and after which they planned to visit Hockney Exhibition. At dinner, Tony praised Sally's beauty and her talent as a painter. They had champagne and dinner together. Tony declared that he had made the excuse of Hockney Exhibition just to meet her. Sally blushed and made no remarks.

To reveal the psychology of modern British society, Archer has introduced the character of Natasha in the story. Sally met Natasha at Simon's art gallery who was a popular painter of that time. Simon told Sally that Natasha usually announces her personal affairs or exposes her private relationships with men of royal families before her painting exhibition and that was the sole reason behind her popularity. Sally didn't like the idea very much but she praised the beauty of Natasha and remarked that Natasha was more like a model than a painter. Tony who was with Sally also praised the beauty of Natasha. As Simon finalized the date of Sally's painting exhibition, she was very happy. She spent that whole day with Tony. They had coffee together at Tony's house. Tony kissed Sally and congratulated her on her success. Sally wanted to go out of his house but he kept on kissing her passionately. They established sexual relationship on that day. Sally telephoned her parents and communicated the date of her painting exhibition. Before she could button her dress, Tony again took her in his arms and they made love for another time. Tony was the fourth man with whom she had sexual relationship. It was an ecstasy moment for her. She could not think of her past lovers as it was so passionate and sensuous experience with Tony.

For next few months, Sally used to paint pictures and visit Simon in the London. After his appreciation, she used to have lunch with Tony. They used to spend their rest of the day loving each other. Sally used to catch her last train to Sevenoaks. As Sally wanted


PRINCIPAL

Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad Taluk, Mukhed District



to spend more time with Tony, later on, she used to stay with him overnight and used to catch a morning train. Just two days before her exhibition, she finished her last painting and handed over to Simon. He praised her paintings and assured her that they would be able to sell half of her paintings before the end of exhibition. Simon also assured that her painting exhibition would be covered by his friend from Press Association. He advised her that she could use Natasha's tactics for sale of her paintings but she didn't appreciate his suggestion. Tony promised her that he would like to buy her painting- *The Sleeping Cat That Never Moved*.

On the exhibition day, Sally saw Natasha and Tony walking towards exhibition. She could not bear this trauma and ran out of gallery. While crossing the road, a van dashed Sally and she fell down. After couple of days, she woke up in the hospital with a broken leg suspended to pulley. A nurse told her that she saw her picture in the newspaper. Sally didn't understand anything and wanted to know more about picture. At the same time, Simon entered her room and kissed her plastered leg. He told her that it was Mike who took her picture when Natasha was bending down over her unconscious body in the street. The picture was published in almost all the newspapers with a quote "The most outstanding young artist of our generation. If the world were to lose such a talent..." (348). He also added that all her paintings were sold overnight with the news. Sally became very happy and asked him whether Tony had bought her painting of *The Sleeping Cat That Never Moved*. Simon regretted and said that it was bought by a serious collector. Simon asked her to make another forty paintings for Spring Exhibition. Sally's parents entered when Simon was leaving her room. Her mother asked her whether he was Tony and Sally replied, "Good Heavens no, mother ... This is Simon. He's far more important. Mind you, I made the same mistake the first time I met him." (349).

In this way, Archer has touched man-woman relationship in the modern society. He has criticized the ethical values of this generation through the characters of Sally, Tony and Natasha. Tony represents those men of the society who prefer to enjoy sexual relationships with women; without bothering their love and emotions. Natasha represents the women who want to remain in the news or gossips by any means while Sally epitomizes the women who are honest in their profession and relationships. Simon is that gentle



character who knows his business and doesn't want to poke in private relationships of his customers or artists.

'One Night Stand' is another story taken for this study. The researcher wants to compare these two short stories to find out the certain characteristics of man-woman relationship. 'One-Night stand' is the story of two friends Michael Thompson and Adrian Townsend. It highlights their relationship with Debbie Kendall. Michael and Adrian met each other at the age of five and became best friends. They completed their primary education at the same school and secured their places in Durham University. Both opted English as their major subject. They enjoyed English, tennis, cricket, good food and girls during their undergraduate life. To talk about their sexual life, writer says, "Whenever Adrian came across a girl that Michael took an interest in or vice versa, whether she was an undergraduate or a barmaid, the one would happily exaggerate his friend's virtues. They spent three idyllic years in unison at Durham..." (351).

After their graduation, Michael joined the BBC as a trainee while Adrian was signed up by Benton and Bowles, the international advertising agency as an accounts assistant. They started living together in one flat and enjoyed their bachelorhood for next five years. They also married in one week with the girls of their own choices. They respectively gave birth to three children at yearly intervals. Michael had two sons and one daughter while Adrian had two daughters and one son. Marriage didn't interrupt their friendly relationship. They used to spend weekends together playing cricket or football. They also used to have weekly lunch or dinners together.

After the tenth wedding anniversary, both acquired higher positions in their respective jobs. One day, Michael declared his affair with a tall, well-built blond fair worked as a shorthand typist and Adrian, after a week or so, fell in love with a journalist. They had their different tastes so they never stood against each other in the girls' selection. Their marriages didn't suffer because of their love affairs.

Once, Michael's television company assigned him a job to edit an ABC film about living in New York for the consumption of British viewers. He was asked to fly to United States and carry out the job assigned. Adrian also arranged his business trip to New York at the same time. He requested his company that he wanted to carry out a


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Mandad



URA

ISSUE : XV, Vol . VI

UNIVERSAL RESEARCH ANALYSIS

IMPACT FACTOR
3.18ISSN 2229-4406
Sept. 2017 To Feb. 2018

11

research on Anglo-American Tobacco Company. Both enjoyed their week in New York. On the eve before their departure from New York, a party was organized to view Michael's edited film- An Englishman's View of the Big Apple. They spotted Debbie Kendall in the party at the same time. Both of them liked her and thought of spending last night with her. They approached to her and introduced themselves. Debbie was ABC floor producer on the evening news. She was divorced and had two children. Both men admired her and served her throughout the party. Just to outdo one other, they spoke about the shortfalls of other but that led them nowhere. In the late night, they escorted Debbie to her home. She kissed both men on their cheeks and entered her apartment. When they came back to their hotel room, they felt sorry for their ill-cultured behavior. Since they were returning to London on the following day, they decided that whosoever comes first back to New York, would try his luck on Debbie.

For the next many days, they tried to find out numbers of reasons to go back to New York but no one succeeded. It was Adrian who got the first chance to fly to United States but he was accompanied with his wife. He was unable to drop in New York and see Debbie. When Michael got a chance to cover President's address on the union of states, Adrian suggested Michael's wife that she could fly with her husband as British Airways had reduced the airfare for a couple. But Michael's wife denied saying that her school would not allow her mid-term break and she had a great fright for air travelling.

When Michael reached to Washington, he called Debbie and fixed a dinner appointment with her. After his work in the Washington, he flew to New York and booked a double-bed room in the hotel. In the evening, he went to Debbie's home and picked her up for dinner. He had booked a table in one of Debbie's favorite restaurants. No sooner did he place his order of wine, he started appreciating Debbie's beauty. He also asked her about her ex-husband. She replied that he fell in love with a twenty-two year old blond and left his thirty-two year old wife. On which, Michael said, "Silly man. He should have had an affair with the twenty-two year old blond and remained faithful to his thirty-two year old wife" (357). Debbie was surprised to hear Michael's opinion about husband-wife relationship. Then instead of falling in other worldly matters and debates, Michael expressed his love towards Debbie.



After champagne, dinner and coffee, Michael paid the bill and they walked hand-in-hand towards Carlyle theatre. It was eleven o' clock and Bobby Short struck first string of his musical chord. Michael and Debbie had champagne while listening the music. Michael kissed Debbie twice during the show. At twelve o' clock, the music concert got over and both walked towards Debbie's flat. Debbie invited him for a coffee and he readily accepted it. When Debbie came with the two cups of coffee, Michael kissed Debbie on her lips. He kept on kissing Debbie very passionately. Debbie broke away from him twice but he took her in his arm and held her firmly. Debbie, then, led him to her bedroom and undressed herself. Michael was stunned to look at the beautiful naked body of a thirty-two year old lady. They made love to each other two times during the night. Michael woke up at seven o'clock in the morning and kissed Debbie on her forehead. They made morning love very gently without forgetting the pleasures they had during last night.

Michael went in bathroom and had a hot shower bath. Debbie prepared breakfast for him. After breakfast, she had a bath and appeared in a very beautiful dress. She drove him to his hotel room where he packed up his luggage, paid the bills and joined Debbie in her car. On the way to airport, they talked about the political issues, without mentioning anything from the last night. Her car came to the halt at Pan Am terminal. She parked her car and joined Michael in the waiting room. As soon as Michael's flight was announced, he moved towards the 'Passengers Only' gate. He kissed Debbie and thanked her for the wonderful evening. Michael was unable to express his feelings and did not want to embarrass Debbie with his words. Finally Debbie said,

"... my friends all told me when I got divorced to find myself a man and have a one-night stand. The idea sounded like fun, but I didn't like the thought of the men in New York thinking I was easy. So when I met you and Adrian, both safely living over three thousand miles away, I thought to myself, whichever one of you comes back first..." (363).

The end of the story reveals that it was not Michael's but Debbie's one-night stand. Jeffrey Archer is very intelligent in narrating the experiences of modern men and women through his stories and 'One Night Stand' proves to be one of his best stories he has ever produced. Michael and Adrian's friendship has been glamorously portrayed by



the writer and reveals the true nature of human relationship. Their marital life, in a traditional sense, is also healthy and up to mark. Debbie, who is a divorced lady, knows her social boundaries and behaves according to the norms of it, but her one-night stand can be considered as an immoral act on the ethical and socio-cultural grounds.

The setting of 'Not for Sale' is London, United Kingdom while the setting of 'One-Night Stand' is London, UK and New York, United States. Apparently, the man-woman relationship depicted in both the stories is almost similar and carries a single thread i.e. love relationship. Sally Summer, who had four lovers in the past, was deeply involved in Tony and was faithful to him but she could not tolerate Tony accompanying Natasha at art gallery. In the second story, Debbie, who was a divorced lady, spent a night with Michael on the suggestion of her friends and declared that it was her 'One-Night Stand' and not of Michael's. To view Michael and Adrian from the ethical and socio-cultural point of view, it can be said that their characters are immoral because they, though married, wished to fulfill their sexual desires out of their conjugal status. To apply the same norms, it can be said that Tony possesses immoral relationship with Natasha. Finally, it can be said that the modern women are equal to men. They select their partners as per their own wish and live happily in the chosen relationship.

References :-

- 1) Archer, Jeffrey. *The Collected Short Stories*. New York: St. Martin's Paperbacks, 1998.
- 2) Ramamoorthy, P. "My Life is My Own: A Study of ShashiDeshpande's Women" *Feminism and Recent Fiction in English* Ed. Sushila Singh. New Delhi: Prestige, 1991.

e- sources:

- 3) <http://jeffreycher.co.uk/>
- 4) https://en.wikipedia.org/wiki/Intimate_relationship



ISSN 2250-169X

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education For All Subjects

VISION

RESEARCH REVIEW




PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhamabad

CHIEF EDITOR
DR. BALAJI KAMBLE



Issue : XV, Vol. I
VISION RESEARCH REVIEW

IMPACT FACTOR
4.75

ISSN 2250-169X
June 2018 To Nov. 2018

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	A Study of HR Management Practices in Co-Operative and Private Sugar Industries In Maharashtra Region and Western Maharashtra Amar Annarao Gadade, Dr. R. D. Gaikwad	1
2	The Theme of Indianness in Jejuri by Arun Kolatkar Dr. R.E. Solunke	9
3	Manjukapur's feminist stance in the portrayal of Man-Woman Relationship in Her Novels Geeta V. Waghmare	16
4	Mother-Daughter Relationship In Modern Kannada Poetry R. S. Dokade	20
5	लातूर जिल्हयातील साखर कारखान्यांचा अभ्यास प्रा. आर. के. खोकले	30
6	आदिवासी व गैरआदिवासी विद्यार्थ्यांच्या सामाजिक समायोजनाचे चिकित्सक अध्ययन डॉ.आर.एल.निकोसे, विनोद वा. गेडाम	38
7	नक्षलवाद निर्मूलनातील महाराष्ट्र शासनाची भूमिका डॉ. हनुमंत भुमकर	46
8	शेतकरी राजा कविता संग्रहातील शेतकरी जाणीवेची कविता डॉ. उन्मेष शोकडे	56
9	अनुसूचित जातीच्या समस्यांचा समाजशास्त्रीय अभ्यास डॉ. डी. एम. दामावले	60



PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



Issue : XV, Vol. I
VISION RESEARCH REVIEW

IMPACT FACTOR
4.75

ISSN 2250-169X
June 2018 To Nov. 2018

4

Mother-Daughter Relationship In Modern Kannada Poetry

R. S. Dokade

Dept. of English,

Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Mukramabad, Dist. Nanded

Research Paper - English

A mother's love for her child is like nothing else in the world. It knows no law, no pity, it dares all things and crushes down remorselessly all that stands in its path. (1)

-Agatha Christie

The image of mother in Indian literature is represented as the ideal and considered as next to God. She is also said to be the first teacher for her children. Woman struggles in the context of present society to find and preserve her identity as wife, mother or daughter and most important of all, as human being. She has to think going beyond the socially determined roles of wife, mother and daughter and find out her real identity. Woman experiences a superior position only in her relationship with her children, especially with her daughters.

This chapter focuses on mother-daughter relationship in the context of patriarchal society and how this relationship is portrayed by women poets in their poetry. It is interesting to note that in the poetry of modern Kannada women poets of 90, the mother-daughter relationship comes to the focus. This chapter mainly explores the patriarchal norms inherited by the mother and imposed on the daughter and also the familial-social traditions and myths and lore's influence on woman which makes their life


PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



deteriorated.

In Indian literature as well as the psychoanalysts have depicted the stories which tells about father-daughter and mother-son relationship but there are less works done on the mother-daughter relationship.

Feminists in the West have worked on the mother-daughter relationship to provide harmony and support to this special relationship which is significant to all women. Nancy Chodorow stresses the differences in the girl's and boy's pre-Oedipal and Oedipal experiences because of their relationship to the mother, who is the primary care-taker. Chodorow's theory underlines the continuing the identification that a daughter experiences with her mother in the psychological development. In contrast, the boy achieves a sense of identity by means of separation and autonomy from the mother. The mother, as the primary socializer, perceives her daughter as an extension of her own self, thus encouraging skills of empathy, tolerance and nurturing in the process of her daughters, socialization. As a result, in coming to care for a girl, women try to recreate and reproduce the pre-Oedipal attachments and symbiotic bonds they first maintained with their own mothers. This is what she calls "the reproduction of mothering." (2)

Radical feminists tried to explore the practices that surround sexuality and mothering. The radical group of feminists did not hold the view that the biological act of women giving birth to children accounts for the subordination of women. On the contrary, they assigned women's inferior status to the cultural construction of sexuality, mothering and nurturing. As long as women continue to be assigned the duty of mothering, they will remain inferior according to the radical feminist group.

In the 1970s two feminists Dorothy Dinnerstein and Nancy Chodorow argued that women differ from men in any society because they are raised by their mothers to conform to a specific image of woman that pervades society. They also said that mothers raise boys and girls according to different patterns.

Nancy Chodorow hopes for a world in which an individual's behavioral traits are not gender- defined: that is, a world beyond gender. Judith Butler in her work *Gender Trouble* states that gender or the identity of woman is a fiction.



Mary Wollstonecraft in her book *A Vindication of the Rights of Woman* states that women are told from their infancy, by the example of their mothers, that a little knowledge of human weakness, justly termed cunning, softness of temper, and outward obedience, help them get the protection of man.

Mothers treat boys as little men; they keep them at a distance, they encourage them to go out and play competitively, and they discourage expression of emotion. Girls are treated in exactly opposite ways; they are kept in the house, discouraged from engaging in competitive play, taught how to mother dolls and deal with emotional relationships.

A mother plays a big role in the family. Throughout her life she struggles to construct her identity. Abiding by the patriarchal norms she tries to satisfy the roles assigned to her by tradition. It is the quality of endurance and sense of sacrifice which she makes for the family and which gives her the respectable position in the family.

Ideologically, motherhood gains strength from the elevated myth of mother Goddess but, in all reality, it demands of her the sacrifice of all her ambitions, liberty and identity for the sake of a happy family.

The nation and the earth are also called Mother India and Mother Earth respectively. So, any discussion of maternal figure includes the discussion of mother India. From an individual biological body she becomes the maternal body of independent India. Novadaya period which comes in the pre-independence era, we find many male poets writing poetry on mother India.

The Webster's New World Dictionary defines mothering as the work or skill of a mother in raising a child or children. (3) The concept of motherhood conceived by the male restricts woman's quest for wholeness. In discussing about mother-daughter relation Adrienne Rich writes:

The cathexis between mother-daughter essential, distorted, misused- is the great unwritten story. Probably there is nothing in human nature more resonant with charges than the flow of energy between two biologically alike bodies, one of which has lain in amniotic bliss inside the other, one of which has labored to give birth to the other. (4)

Mothers and daughters experience strong bonding and are inhibited because of the devaluation of females in Indian culture. Females do not strengthen or enhance their

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Mandad



lineage and therefore are undervalued. In traditional families women are taught from their infancy to know their place in the society and to accept their fate as 'other' within culture.

Roopa Hasan in her poem "Ammanaguvudendare" (5) (Becoming a Mother) portrays the dedication of a mother towards her family. In the traditional family the mother teaches her daughter to be dutiful in her in-law's home. The poet personifies butter. She takes the domestic examples to show the amount of patience a mother has and how she sacrifices her ambitions and desires for the sake of the family.

When women are assigned the role of the mother they do not demand privileges equal to men. They feel happy in their role of mother to protect their families. Mothers nurture and provide emotional support to their daughters. Identity of a woman is judged by her role but not as a human being equal to man in the patriarchal society.

Luce Irigaray, a psychoanalyst, states in her essay, "And the one doesn't stir without the other," (6) that the daughter becomes the image of the mother and without the daughter the mother's life becomes impossible. She sees herself as the guarantor of her mother's life, "If I leave you, you lose the reflection of life, of your life." (p.66).

Mamta Sagar in her poem, "Mother and Me", sees herself as the reflection of her mother:

I am exactly like my mother
thin body, bony fingers,
dark circles below the eyes;
within, a heavy heart
loaded with cares; a mind
beset with thought it can't
quite carry; and on the surface
A smooth smile.
I am like my mother exactly;
her tears flow is my eyes. (7)

The poet uses metaphors such as 'dark circles', 'loaded heart' and 'smooth smile' which tell about the plight of woman. The daughter here is shown as the one on whom the same patriarchal norms are imposed. The daughter is told to carry traditions and



conventions. But a mother should suffer the norms of a patriarchal society for the sake of her family. Even though woman becomes a victim of the male dominated society, as mother she wears a 'smooth smile' on her face for her children.

To satisfy the condition of patriarchy, a woman has to confront the requirements of being a "good mother" identified by social norms. Vaidchi in her poem "My Mother's Sari" explains how her mother is ideal for her.

Folds tucked into a knot
a mysterious treasure - house of meanings
the pretty yellow Madhura saree
with its green border of blooms
..... the queen was perhaps like my mother.
Endless is my mother's saree
the more I wrap it around me,
the more it grows,
I remember becoming a midget once
trying to measure it,
trying to drape it.
I unfold it and envelop myself in it
uttering with a long sigh
the word 'Amma' -
a word that remains forever fresh
however worn with use.(8)

In Indian tradition the mother is shown as wearing sari which plays a crucial role in producing and claiming her motherhood. The poet expresses the view that a woman becomes complete in her life only when she becomes a mother. There is no equivalent word to amma (Mother) and her joy knows no bounds when she hears her child call her amma.

Feminism emphasizes the need for the inclusion of women's experience in literature and focuses on mothering, which has traditionally been considered as a feminine virtue in particular nurturance and compassion. Modern day feminism typically celebrates virtues

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabadd To Mukhed Dist. Nanded



traditionally perceived as feminine.

Daughters and mothers frequently share a deep bond which may be characterized as closeness and intimacy. This closeness and intimacy continues to be shared throughout the lives of women from the time when a daughter is born to the time the mother is dead.

Woman seeks to be emancipated, her aim is to be a whole human being. Woman's quest for identity is a recurrent theme in women poetry. Pratibha Nandakumar in her poem "Watching Rain with My Daughter" portrays the plight of a mother and daughter. She points out that both mother and daughter share the same feelings because they belong to a common gender.

Two pairs of hand grip the window bars
one a tender silky soft, the other hard
and full of Knuckles
Two pairs of eyes staring at the drops
Flashes of lightning and dark despair
Long ago I watched rain with my mother
I was all thrill and she strangely silent and lost
Hot and cold droplets falling on my hand
Some from the rain and some from her eyes.
And much water flown down the time lane
all changed along with season
The taught body loosened to make way
to rainbow and thunder storms.
Once again the rain brings us to the window
My little one sits happy playing with cool drops
Unafraid, her fingers do not reach out seeking mine
Her father's shadow is but only smiling at a distance. (9)

Words like 'Window panes' and 'Handful of Knuckles' symbolize a person behind the bars. The poet ironically portrays a picture of a woman standing behind the window panes and surrendering to the norms of tradition and convention. 'The hot and cold tears' speak about the woman who has been silenced. The mother, at times, imposes exactly



her own fate on the girl and sometimes she, on the contrary, forbids the child from resembling her. Here, the mother feels pity for her daughter who is still young. Beauvoir says that the real inconsistency arises when the girl grows old and when she wishes to be independent. Examining the strange relation between mother and daughter she writes:

This seems to the mother a mark of hateful ingratitude; she tries obstinately to checkmate the girl's will to escape; she cannot bear to have her double become an other. The pleasure of feeling absolutely superior which men feel in regard to women - can be enjoyed by woman only in regard to her children, especially her daughters; she feels frustrated if she has to renounce her privilege, her authority. (10)

In scriptures and myths woman is depicted either as a goddess or a sub-human creature, never as a complete human being. There is a great difference between the idealized concept of woman in Indian myths and scriptures and her actual situation in life. She enjoys a very high status and is known as Durga and Lakshmi. A high status is accorded to woman, showing woman's power.

Savita Nagabhushan in her poem "Mother" compares the mother to Durga. She portrays the rebellious nature of woman; the more atrocities men commit on women the more tolerant she grows and the more rebellious she becomes. Woman has lot of potentiality to become rebellious. Men being aware of women's power try to subdue her. According to the poet all women should fight for their rights and if women are treated on par with men there will be no inequality in the world.

The truth of Lord Durga is not hidden even by a brave person
Even the Vedas and scriptures tell about her
Still, she can tear the stomach of a demon
I am a part of her
Carrying the debt of her. (11) (Translated by Researcher)

The mother-daughter's special attachment is reinforced by their common gender and experiences. Sukanya Maruthi in her poem "Soliloquy of a Devadasi's Daughter" laments on being her daughter and portrays the picture of society. She struggles to find her identity in this patriarchal society.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



Where can I search
For my lost mornings
When the darkness of the evening
Has spread at noon itself?
In the pen of the teacher
Who filled the father's place
With my mother's name?
Where can I search
For my lost mornings?
In the fiery looks
Of street dogs that
Stopped me from moving?
On tongues of people
Who sinned and transferred
Their sins to me?
Enough of this life on earth
The blame and the humiliation
Why does the roaring ocean not
Open its belly and swallow me? (12)

The poet who is frustrated on account of the ill-treatment that she received from the society seeks solace in death. From the above poem we can learn that in the event of failing to establish an identity of her own, a woman prefers life to death. A woman craves for salvation, where she can free herself from the bitter experiences. Freeing herself from the captivity of the social symbols prescribed by traditional society, she becomes reflective and takes a serious look at herself.

The presentation of mother in Indian literature indicates the ideal role she plays in the family. This ideal status is assigned to her and she is expected to serve the family as a slave, without any privilege. Vaidehi in her poem "Namuna Hiriyaru Yaru Kedu Magale ..."(Listen Daughter, Who Our Ancestors Are), explains to her daughter the plight of woman, as wife in the traditional family.




Simone de Beauvoir tells about the daughter who has to follow the same set of feminine rules that are assigned to the mother by the society in her book *The Second Sex*:

Some women feel their femininity as an absolute curse; such a woman wishes for or accepts a daughter with the bitter pleasure of self-recognition in another victim, and at the same time she feels guilty for having brought her into the world. Her remorse and the pity she feels through her daughter for herself are manifested in endless anxieties; ... she hopes to compensate for her inferiority by making a superior creature out of one whom she regards as her double; and she also tends to inflict upon her the disadvantages from which she has suffered. (13)

The lack of love, the feeling of insecurity and the absence of emotional support make female poets rebel against the normative social codes of conduct. They question the existing social codes. Through their poetry women's conscious-raising voice struggles to assert their femininity, they get to the root of existence and give vent to kind of female subjectivity which refuses to reconcile and identify itself with the patriarchal and male dominated society. In their own silent ways, women revolt and show their hostility and acquire inner strength which leads them on to the path of revolution against injustices of all kinds.

References :-

1. <http://www.love-quotes-and-quotations.com/mother-and-daughter-relationships.html>. 30/06/2011.
2. Boynton, Victoria Malin Jo. (ed), *Encyclopedia of Women's Autobiography*, Volume II: K - 2, Greenwood publishing Group, 2005.p.408.
3. Agnes Michael. (ed), *Webster's New World College Dictionary*, New Delhi: Wiley India.2007.p.940.
4. Adrienne Rich, *Of Woman Born: Motherhood as Experience and Institution*, II Edition. New York: W.W. Norton 198, p. 225-226.
5. Roopa Hasan, "Ammanaguvudendare", Kadaligestondu Bagilu, Bellary: Lohiya Prakashan, 2010. (p.28).
6. <http://www.jstor.org/stable/3173507>.12/06/2011.


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist. Nanded



7. http://www.kritya.in/05/En/poetry_at_our_time5.html.07/08/2011.
8. http://www.poetryinternational.org/piw/cms/cms/cms_module/index.php?obj_id=14738.03/04/2011.
9. http://www.pocmhunter.com/i/ebooks/pdf/prathibha_nandakumar_2006_5.pdf. p.98. 30/01/2011.
10. Beauvoir, Simon de. *The Second Sex*, London: Vintage Classics. 1979.p.534.
11. Savita, Nagabhushan. "Mother", Darushan. Lohiya Prakashana. 2005. (p.15).
12. Maruthi, Sukanya. "Soliliquy of Devadasi's Daughter", in Dr.S.Sreenivasan, (ed), *Journal of Literature and Aesthetics*. Kerala: Jan-Dec.2008.p.274.
13. Beauvoir, Simon de. *The Second Sex*. London: Vintage Classics .1979.p.533.



RNI. MAHMUL02805/2010/33461

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

*UGC Approved International Registered & Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects*



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

**Issue : XVII, Vol. X
Year -IX (Half Yearly)
(Jan. 2018 To June 2018)**

Editorial Office :
'Gyandeept',
R-9/139/6-A-1,
Near Vishal School,
LIC Colony,
Pragati Nagar, Latur
Dist. Latur - 413531.
(Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
09423346913, 09637935252,
09503814000, 07276301000

Website
www.irasg.com

E-mail :
interlinkresearch@rediffmail.com
visiongroup1994@gmail.com
mbkamble2010@gmail.com
drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
Jyotichandra Publication,
Latur, Dist. Latur.-413331
(M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
Research Guide & Head, Dept. of Economics,
Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
Professor, Dept. of History & Classics,
University of Alberta, Edmonton,
(CANADA).

Dr. Huen Yen
Dept. of Inter Cultural
International Relation
Central South University,
Changsha City, (CHINA)

Rajendra R. Gavhale
Head, Dept. of Economics,
G. S. College,
Khamgaon, Dist. Buldhana (M.S.)

Dr. Laxman Satya
Professor, Dept. of History,
Lokhevan University, Loheavan,
PENSULVIA (USA)

Bhujang R. Bobade
Director, Manuscript Dept.,
Deccan Archaeological and Cultural
Research Institute,
Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Dr. Nilam Chhangani
Head, Dept. of Economics,
SKNG College,
Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
Vice Principal
PSGVP's Mandals College,
Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Dr. Balasaheb S. Patil
Head, Dept. of Economics,
CKT College,
Panvel, Dist. Raigad (M.S.)

Veera Prasad
Dept. of Political Science,
S. K. University,
Anantpur, (A.P.)

Dr. Dilip S. Arjune
Head, Dept. of Economics,
JES College,
Jaina, Dist. Jaina (M.S.)

CO-EDITORS

Dr. C.J. Kadam
Head, Dept. of Physics
Maharashtra Mahavidyalaya,
Nilanga, Dist. Latur (M.S.)

Ambuja N. Malkhedkar
Dept. of Hindi
Gulbarga, Dist. Gulbarga,
(Karnataka State)

Johrabhai B. Patel,
Dept. of Hindi,
S. P. Patel College,
Simaliya (Gujrat)

Dr. Balaji S. Bhure
Dept. of Hindi,
Shivjagrus College,
Nalegaon, Dist. Latur (M.S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tq. Mukhed. Dist. Nanded



RNL MAHMUL02R05/2010/33461

Interlink Research Analysis


IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue: XVII, Vol. X, Jan. 2018 To June 2018

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	The Role of Credit Rating in Capital Market Investment Decision Making Dr. A. J. Raju	1
2	Frustration and Anger of Jimmy Porter in John Osborne's Look Back in Anger Ankush V. Shinde	6
3	India: Strategic Challenges and Responses Bharatbhushan W. Balbudhe	10
4	Legal Validity of Buddhist Marriages Dr. K.S. Waghmare	23
5	'जान से प्यारे' एकांकी में चित्रित वर्तमान समाज की वास्तविकता डॉ. प्रविण कांबळे	29
6	स्त्री वर्गाचे आर्थिक व सामाजिक प्रश्न डॉ. टी. ए. मोरे	32
7	महाराष्ट्रातील पाण्याची समस्या आणि उपयुक्त जलसाठा - एक अभ्यास डॉ. बालाजी ग्यानोबा कांबळे	37
8	हैदराबाद मुक्तिसंग्राम भरत माधवराव मुस्कावाड	45


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



RNI MAHMUL02805/2016/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue : XVI, Vol. X, Jan. 2018 To June 2018

45

हैदराबाद मुक्तिसंग्राम

भरत माधवराव मुस्कावाड

इतिहास विभाग,

स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,

मुक़ामाबाद, जि. नांदेड


8

Research Paper - History

प्रस्तावना:

इंग्रज भारतात व्यापारी म्हणून आले आणि विविध युक्त्या - प्रयुक्त्या योजून भारताचा भाग वसाहतवादी वर्धस्वाखाली आणला त्याचा परिणाम असा झाला की, भारताचा तीन पंचमाश भाग प्रत्यक्ष इंग्रजांच्या राजवटीखाली आला उर्वरित दोन पंचमाश भागावर संस्थानिकाची राजवट राहिली असे असले तरी या संस्थानिकावर इंग्रजांचे नियंत्रण होतेच. परिणामी अनेक छोटी - मोठी संस्थाने भारतात मोठ्या प्रमाणात स्वतःचे अस्तित्व टिकवून होती. यांपैकीच एक म्हणजे हैदराबाद संस्थान होय. हैदराबादचे हे संस्थान आकाराने एखादया युरोपीय देशाएवढे होते ब्रिटिशांचे सार्वभौमत्व व अधिपत्य मान्य करण्याच्या अटीवर हैदराबाद संस्थानामध्ये निरंकुश एकाधिकारशाही प्रचलित होती. स्वरूप

हैदराबाद हे संस्थान भारतातील ब्रिटिश राजवटीच्या शेवटापर्यंत टिकलेले सर्वात मोठे एकमेव स्वायत्त संस्थान होते. सध्याचा तेलंगणा, मराठवाडा, उत्तर कर्नाटक आणि विदर्भाचा काही भाग या हैदराबाद संस्थानामध्ये मोडत होता. इ.स. १७२४ ते १९४८ या कालावधीत हैदराबाद संस्थानावर निजाम वंशाची सत्ता होती. या कालावधीत सात निजाम होऊन गेले. मोगल काळात प्रशासनाच्या सोयीसाठी खानदेश, वज्हाड, औरंगाबाद, विदर, विजापूर व हैदराबाद या सुम्यात दक्षिण भारताची विभागणी करण्यात आली होती. या सहा सुम्याचा कारभार पाहण्यासाठी मोगल सम्राट फरूखशियर याने इ.स. १७१३ मीर कमरुददीन निजाम उल मुलक फिरोजजंग खान खानानघिन कुलीखान यांची दक्षिणेचा सुभेदार म्हणून नियुक्ती केली. परंतु औरंगजेबाच्या मृत्युनंतर मोगल सम्राट कमकुवत असल्याने मीर कमरुददीन याने ३१ जुलै १७२४ रोजी दक्षिणेत स्वतंत्र राज्याची स्थापना करून हैदराबाद ही राजधानी बनविली. मीर कमरुददीन यास मोगल सम्राट महमदशहाने 'आसिफजाह' हा किताब दिल्याने यांचे घराणे आसिफजाह नावाने ओळखण्यात येते. इ.स. १९११ ते १९४८ या कालखंडात मीर उरमानअली खान हा निजाम सत्तेवर होता. त्यावेळी


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed. Dist. Nanded



RNI MAHMUL02805/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue : XVI, Vol. X, Jan. 2018 To June 2018

46

हैदराबाद संस्थानचे एकूण क्षेत्रफळ ८२३१४ चौरस मैल होते. तर इ.स. १९४१ च्या जनगणनेनुसार १.६३.३८.५३४ एवढी या प्रदेशाची लोकसंख्या होती या लोकसंख्येमध्ये ७०% हिंदू, १८% दलित, ११% मुस्लिम व १% इतर जनता होती. मात्र ८५% पेक्षा जास्त मुस्लीम लोक नोकरीमध्ये होते. प्रत्येक खात्यात उच्च पदस्थ अधिकारी हे मुस्लिम होते. एखादया राष्ट्राप्रमाणे हैदराबाद संस्थानाची उभारणी निजामाने केली होती. पोरट, टेलिग्राफ, चलनव्यवस्था, रेल्वे, नागरी सेवा, बँका, लष्कर, कापडगिरण्या तसेच विविध उदयोग हे संस्थानच्या मालकीचे होते. विविध शहराची नावे मुस्लीम नावाप्रमाणे केली होती. इ.स. १९१८ मध्ये उरमानिया विद्यापीठ स्थापन करून 'उर्दू' हे भाषा शिक्षणाचे माध्यम केले. तर इस्लाम हा राज्याचा धर्म होता. पारशी राजभाषा असून मोहरमला १४ दिवसाची सुट्टी होती. तर शुक्रवार साप्ताहिक सुट्टीचा असे. संस्थानाचे वार्षिक उत्पन्न २६ कोटी रुपये होते. अस्पृश्यता वेढविगारी, अनिष्ट रुढी, प्रथा, परंपरा, अंधश्रद्धा, रोगराई, अज्ञान, स्त्रीदास्य व निरक्षरता या विविध गोष्टी समाजात संस्थानामध्ये अस्तित्वात होत्या.

सामाजिक, राजकीय शैक्षणिक व सांस्कृतिक जागृती:

महाराष्ट्रामध्ये लोकमान्य टिळकांनी लोकांना एकत्रित करण्यासाठी तसेच जागृती घडवून आणण्यासाठी सार्वजनिक गणेशोत्सवाची सुरुवात केली. त्याची प्रेरणा घेऊनच शिवराम शास्त्री गोरे यांनी हैदराबादमध्ये 'शालिबंडा' येथे तर विद्यार्थींनी 'चादरघाट' येथे सार्वजनिक गणेशोत्सवाची सुरुवात केली. त्याचा परिणाम असा झाला की, संपूर्ण हैदराबाद संस्थानामध्ये गणेशोत्सवाचा प्रसार होऊन सामाजिक घेतना निर्माण होण्यास मदत झाली. स्वामी दयानंद सरस्वतींनी स्थापन केलेल्या आर्य समाजाचा हैदराबाद संस्थानातील केशवराव कोरटकर, पंडित श्रीपाद सातवळेकर तसेच डॉ. अघोरनाथ चटोपाध्याय यांनी प्रसार केला. परिणामी संस्थानामध्ये मोठया प्रमाणात राजकीय, सामाजिक आणि शैक्षणिक जागृती घडून आली. इ.स. १८९२ मध्ये मुल्ला अब्दुल कयुम खान यांनी हैदराबाद मध्यवर्ती वाचनालयाची स्थापना केली. तसेच दैरत उल मॅरिफ संस्थेची स्थापना करून अरेबिक भाषेला आंतरराष्ट्रीय भाषेचा दर्जा मिळविला. त्यांनी भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेसला मोठया प्रमाणात पाठिंबा मिळवून देऊन स्वदेशी आंदोलनातही भाग घेतला खानानी अनेक मौलवी व लोकांना प्रोत्साहन देऊन पुरोगामी विचाराची अंजुमन ए मारीफ नावाची संस्था सुरु केली. हैदराबाद संस्थानामधील स्वातंत्र्य चळवळीस बळ देण्याचे व देशप्रेमाची भावना लोकांमध्ये निर्माण करण्याचे काम मराठवाडयातील खाजगी शाळानी केले. निजाम खाजगी शाळाना परवानगी देत नसे. परंतु उर्दू माध्यमाच्या शाळाना परवानगी होती. १९१६ ते १९३५ या कालावधीत मराठवाडयात ६-७ खाजगी शाळा निघाल्या इ.स. १९१६-१७ मध्ये औरंगाबाद येथे सरस्वती भुवन हायस्कूल तर परमणी येथे प्राथमिक शाळा सुरु झाली इ. स. १९२१ मध्ये तुळजापूर तालुक्यात हिप्परगा येथे राष्ट्रीय शाळा स्थापन झाली हळूहळू मराठवाडयात अंबाजोगाई, सेलू, नांदेड, लातूर, उमरगा, बीड, उदगीर,

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded



RNI MAHMUL02805/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue : XVI, Vol. X, Jan. 2018 To June 2018

46

हैदराबाद संस्थानचे एकूण क्षेत्रफळ ८२३१४ चौरस मैल होते. तर इ.स. १९४१ च्या जनगणनेनुसार १,६३,३८,५३४ एवढी या प्रदेशाची लोकसंख्या होती या लोकसंख्येमध्ये ७०% हिंदू, १८% दलित, ११% मुस्लिम व १% इतर जनता होती. मात्र ८५% पेक्षा जास्त मुस्लीम लोक नोकरीमध्ये होते. प्रत्येक खात्यात उच्च पदस्थ अधिकारी हे मुस्लिम होते. एखादया राष्ट्राप्रमाणे हैदराबाद संस्थानाची उभारणी निजामाने केली होती. पोस्ट, टेलिग्राफ, घलनव्यवस्था, रेल्वे, नागरी सेवा, बँका, लष्कर, कापडगिरण्या तसेच विविध उद्योग हे संस्थानच्या मालकीचे होते. विविध शहराची नावे मुस्लीम नावाप्रमाणे केली होती. इ.स. १९१८ मध्ये उस्मानिया विद्यापीठ स्थापन करुन 'उर्दू' हे भाषा शिक्षणाचे माध्यम केले. तर इस्लाम हा राज्याचा धर्म होता. पारशी राजभाषा असून मोहरमला १४ दिवसाची सुट्टी होती. तर शुक्रवार साप्ताहिक सुट्टीचा असे. संस्थानाचे वार्षिक उत्पन्न २६ कोटी रुपये होते. अस्पृश्यता वेढबिगारी, अनिष्ट रुढी, प्रथा, परंपरा, अंधश्रद्धा, रोगराई, अज्ञान, स्त्रीदास्य व निरक्षरता या विविध गोष्टी समाजात संस्थानामध्ये अस्तित्वात होत्या.

सामाजिक, राजकीय शैक्षणिक व सांस्कृतिक जागृती:

महाराष्ट्रामध्ये लोकमान्य टिळकांनी लोकांना एकत्रित करण्यासाठी तसेच जागृती घडवून आणण्यासाठी सार्वजनिक गणेशोत्सवाची सुरुवात केली. त्याची प्रेरणा घेऊनच शिवराम शास्त्री गोरे यांनी हैदराबादमध्ये 'शालिबंडा' येथे तर विद्यार्थींनी 'चादरघाट' येथे सार्वजनिक गणेशोत्सवाची सुरुवात केली. त्याचा परिणाम असा झाला की, संपूर्ण हैदराबाद संस्थानामध्ये गणेशोत्सवाचा प्रसार होऊन सामाजिक चेतना निर्माण होण्यास मदत झाली. स्वामी दयानंद सरस्वतींनी स्थापन केलेल्या आर्य समाजाचा हैदराबाद संस्थानातील केशवराव कोरटकर, पंडित श्रीपाद सातवळेकर तसेच डॉ. अघोरनाथ घटोपाध्याय यांनी प्रसार केला. परिणामी संस्थानामध्ये मोठया प्रमाणात राजकीय, सामाजिक आणि शैक्षणिक जागृती घडून आली. इ.स. १८९२ मध्ये मुल्ला अब्दुल कयुम खान यांनी हैदराबाद मध्यवर्ती वाचानालयाची स्थापना केली. तसेच दैरत उल मैरिफ संस्थेची स्थापना करुन अरेबिक भाषेला आंतरराष्ट्रीय भाषेचा दर्जा मिळविला. त्यांनी भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेसला मोठया प्रमाणात पाठिंबा मिळवून देऊन स्वदेशी आंदोलनातही भाग घेतला खानानी अनेक मौलवी व लोकांना प्रोत्साहन देऊन पुरोगामी विचाराची अंजुमन ए मारीफ नावाची संस्था सुरु केली. हैदराबाद संस्थानामधील स्वातंत्र्य चळवळीस बळ देण्याचे व देशप्रेमाची भावना लोकांमध्ये निर्माण करण्याचे काम मराठवाडयातील खाजगी शाळानी केले. निजाम खाजगी शाळाना परवानगी देत नसे. परंतु उर्दू माध्यमाच्या शाळाना परवानगी होती. १९१६ ते १९३५ या कालावधीत मराठवाडयात ६-७ खाजगी शाळा निघाल्या इ.स. १९१६-१७ मध्ये औरंगाबाद येथे सरस्वती भुवन हायस्कूल तर परभणी येथे प्राथमिक शाळा सुरु झाली इ. स. १९२१ मध्ये तुळजापूर तालुक्यात हिप्परगा येथे राष्ट्रीय शाळा स्थापन झाली हळूहळू मराठवाडयात अंबाजोगाई, सोलू, नांदेड, लातूर, उमरगा, बीड, उदगीर,


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded



RNI MANMUL02805/2010/33481

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue : XVI, Vol. X, Jan. 2018 To June 2018

47

गुंजोटी इत्यादी विविध ठिकाणी राष्ट्रीय शाळा स्थापन झाल्या. इ.स. १९४१ मध्ये मराठा व तत्समवर्गीय शिक्षण परिषद स्थापन झाली. तिची प्रारंभी वार्षिक अधिवेशने पार पाडली होती. या परिषदेमार्फत हैदराबाद येथे मराठा वसतिगृह सुरू केले होते. अशाप्रकारे राष्ट्रीय शाळामुळे मराठवाडयात परिणामी हैदराबाद संस्थानामध्ये राजकीय, सामाजिक, सांस्कृतिक व शैक्षणिक जागृती होण्यास मदत झाली.

हैदराबाद मुक्तिसंग्रामातील विविध घटकांचे योगदान:

१) वाचनालये, व्यायामशाळा व राष्ट्रीय शाळा:

लोकमान्य टिळकांच्या मृत्यु दिवशीच आ. ह. वाघमारे यांनी औरंगाबाद येथे बलवंत मोफत वाचनालय सुरू केले. त्याचा परिणाम म्हणून इ.स. १९४५ पर्यंत मराठवाडयात ५० प्रमुख शहरांमध्ये ग्रंथालयाची स्थापना झाली. परिणामी भारतातील स्वातंत्र्य चळवळीत राष्ट्रीय काँग्रेसचे योगदान क्रांतिकारकांचे कार्य, भारतीय स्वातंत्र्य लढा तसेच म. गांधी, गोखले, लो. टिळक या सारख्या अनेक महान नेत्यांचे विचार याचा लोकांमध्ये मोठ्या प्रमाणात प्रसार होऊ लागला. परिणामी संस्थानामध्ये स्वातंत्र्य चळवळीस पूरक व पोषक वातावरण निर्माण होऊ लागले. मराठवाडयात व्यायामशाळाची स्थापना करण्याचे कार्य प्रामुख्याने आर्य समाजाने केले. मराठवाडयात परभणी, सेलू, मानवत, हिंगोली, बीड, गंगाखेड, गेवराई, धारूर, परळी, माजलगाव, औरंगाबाद, अंबेजोगाई, लातूर, उदगीर अशा प्रमुख जिल्हा, तालुका व गाव पातळीवर व्यायामशाळा स्थापन झाल्या. परिणामी स्वातंत्र्य आंदोलनासाठी सत्याग्रही व कार्यकर्ते तयार करण्याचे कार्य व्यायामशाळांनी मोठ्या प्रमाणात केले. मराठवाडयात अंबेजोगाई, हिप्परगा सेलू, औरंगाबाद, नांदेड, लातूर, उमरगा, बीड, उदगीर, गुंजोटी, परभणी या ठिकाणी ज्या खाजगी राष्ट्रीय शाळा स्थापन झाल्या. त्या शाळेमधूनच हैदराबाद मुक्तिसंग्रामाचे नेते स्वामीजी बाबासाहेब पराजपे व त्यांच्यासारखे अनेक नेते तयार झाले. परिणामी हैदराबाद संस्थानातील स्वातंत्र्य चळवळीला मोठा हातभार लागला.

२) वंदे मातरम आंदोलन:

हैदराबाद मुक्तिसंग्रामाची सुरुवात होण्याचा पहिला मान इ. स. १९३८ साली औरंगाबाद शहरात घडून आलेल्या 'वंदे मातरम' या आंदोलनाला दयावा लागतो. १६ नोव्हेंबर १९३८ रोजी औरंगाबादच्या इंटरमिजिटिएट कॉलेजच्या वसतिगृहात वंदे मातरम गीत म्हणण्यास प्रारंभ केला. पण कॉलेजच्या प्राचार्यांनी त्यास मज्जाव केला. त्यामुळे विद्यार्थ्यांनी अन्न सत्याग्रह सुरू केला. त्यास प्रा. गोविंदभाई श्रॉफ यांचा पाठिंबा होता. परिणामी प्राचार्यांनी वंदे मातरम गीत म्हणणाऱ्या विद्यार्थ्यांना वसतिगृहातून काढून टाकले. त्याचा परिणाम असा झाला की हैदराबाद संस्थानात प्रचंड जागृती झाली व तेथे राजकीय संघटनेचा व स्वातंत्र्य आंदोलनाचा पाया घातला गेला.

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Hapur



३) महाराष्ट्र परिषद :

आंध्र महाराष्ट्राचा व कर्नाटक परिषद यांच्या धर्तीवर महाराष्ट्रात महाराष्ट्र परिषदची स्थापना झाली. ही परिषद १९३७ पासून सक्रिय होती. या परिषदेची परतूर, सोलु, औरंगाबाद, लातूर, उमरी या ठिकाणी सात अधिवेशने झाली. या अधिवेशनांचे गोविंदराव मानल गोविंदराव धाटे, भास्करराव चळवुंगकर, वें. श्रीनिवास शर्मा, देविदास लव्हेकर, काशीनाथ वैद्य, आ. कृ. माधवारे, श्रीधर वामन नाईक, भुकुंदराव पेडगावकर दिगंबरराव विठ्ठल, फुलचंद गांधी हे प्रमुख व्यक्ती स्वागतार्थ्यता व अध्यक्ष होते. या सर्वांनीच स्वतंत्र भारतात संस्थानिकांचे स्थान असूच शकत नाही, असे निरून सांगितले व तरुणांनी स्वातंत्र्य चळवळीत मोठ्या प्रमाणात भाग घ्यावा असे आवाहन केले व प्रोत्साहन दिले. महाराष्ट्र परिषदेची जिल्हा व तालुका पातळीवर अधिवेशने झाली. परिषदेच्या प्रत्येक अधिवेशनात स्टेट कॉॅंग्रेसवरील बंदी उठवण्याची मागणी करण्यात आली व सर्व जातीजागातीच्या लोकांनी कॉॅंग्रेसमध्ये येऊन स्वातंत्र्य लढ्यात मदत करावी यासाठी प्रयत्न केले.

४) हैदराबाद स्टेट कॉॅंग्रेस:

हैदराबाद संस्थानामध्ये स्थापन झालेल्या आंध्र महाराष्ट्रा, कर्नाटक परिषद व महाराष्ट्र परिषद या तिन्ही संघटनातील कार्यकर्त्यांनी एकत्र येऊन हैदराबादमध्ये २९ जून १९३८ रोजी हैदराबाद स्टेट कॉॅंग्रेसची स्थापना केली. या कॉॅंग्रेसमध्ये विविध जातीजागातीच्या लोकांनी भाग घेतला परिणामी ८ ऑगस्ट १९३८ रोजी स्टेट कॉॅंग्रेसवर निजामाने बंदी घातली परंतु ही बंदी पंडीत नेहरुनी ३ जुलै १९४६ रोजी उठविली. १६ ते १८ जून १९४७ रोजी हैदराबाद स्टेट कॉॅंग्रेसचे अधिवेशन होऊन स्वामी रामानंद तीर्थ हे स्टेट कॉॅंग्रेसचे अध्यक्ष झाले. त्यांनी अध्यक्षीय भाषणात लोकांना आवाहन केले की, हैदराबाद संस्थान भारतीय संघराज्यात विलिन झाले पाहिजे. त्यासाठी जो काय लढा द्यायचा आहे, तो आताच द्या. त्यामुळे मोठ्या प्रमाणात निजामाने घरपकड सुरू केली पण स्टेट कॉॅंग्रेसच्या नेत्यांनी भूमिगत राहून लढा घालूच ठेवला हैदराबाद स्टेट कॉॅंग्रेसने लढा देण्यासाठी झोडावंदन, जंगल सत्याग्रह, गोदामे लुटणे, शेतसारा न भरणे, पोलिस स्टेशनवर हल्ले करणे, शाळा, महाविद्यालय व कोर्टावर बहिष्कार टाकणे इ. विविध मार्गांचा अवलंब केला.

५) महिलांचा सहभाग:

हैदराबाद मुक्तिसंग्रामात महिलांचा सहभाग फारच कमी होता तरीपण महिलांनी एकी करून मुक्तिलढ्यास सामाजिक अचिष्टान प्राप्त करून दिले. राजकीय कार्यकर्त्यांच्या पत्नी, भगिनी, कन्या, माता अशा नात्यातील महिला प्रामुख्याने मारवडी, गुजराती व ब्राम्हण कुटुंबातील होत्या. मुक्तिलढ्यात सहभागी झालेल्या पुरुषांचे मनोबल वाढविण्याचे महत्त्वपूर्ण कार्य महिलांनी केले. म्हणून डॉ. सुलमा धारुरकर म्हणतात की, 'संख्येचा विचार करता महिलांचा सहभाग गौण होता, परंतु त्यांच्या सहभागामुळे हा लढा व्यापक, सखोल व अधिक दूरगामी स्वरूपाचा बनला' हैदराबाद



RNI MAHMULD2905/2010/33481

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue - IV, Vol. 8, Jan 2018 To June 2018

49

मुक्तिसंग्रामामध्ये मराठवाड्यातील महिला इतर प्रदेशातील महिलांपेक्षा आघाडीवर होत्या. रवानी लातूर, नांदेड, सेतू व औरंगाबाद येथे महिला परिषदा भरवून जागृती केली.

६) दलितांचा सहभाग:

हैदराबाद मुक्तिसंग्रामात दलितांचा सहभाग होता की नकता यादिवशी याद असले तरी, डॉ. अनिल कठारे, एल. वाय. औधरमत, नरेंद्र गायकवाड, डॉ. एस. एस. नरवडे, बी. व्ही. गोंयळे यांनी संशोधन करून मुक्तिलढ्यात दलितांचा सहभाग असल्याचे संशोधन प्रकाशित केले आहे, ज्या ज्या ठिकाणी रझाकार हत्ये केले करत, त्या हत्याची पूर्वमाहिती दलितांनीच दिल्याची अनेक उदाहरणे आहेत. आर्य समाजाच्या माध्यमातूनही दलित कार्यकर्त्यांनी लढ्याला हातभार लावलेला दिसून येतो किन्नाही गडीला रझाकारानी वेढा घातला, तेव्हा अनेक दलित स्त्री - पुरुषांना वीरमरण आले. शिवाय रेवटा वाघमारे यांनी अनेक दलित तरुणांची फळी तयार करून रझाकारांवर हत्ये केल्याचे पुरावेही सापडतात.

७) हिंदू महासभा :

ऑक्टोबर १९३८ मध्ये हिंदू महासभेने पुणे, नागपूर, अकोला, मुंबई येथे केंद्रे उभारून भागानगरास निःशस्त्र प्रतिकारासाठी स्वयंसेवक पाठविले. हिंदू महासभेच्या स्वयंसेवकांनी गुलबर्गा, हैदराबाद, बिदर, वैजापूर, हदगाव, मुरुम, तुळजापूर, परभणी, जालना, पैठण, कन्हरेगाव येथे कायदेभंग सुरू केले. परिणामी निःशस्त्र प्रतिकारात १३ स्वयंसेवक तुरुंगामध्ये मरण पावले तर १४१ स्वयंसेवकांनी तुरुंगवास भोगला.

८) आर्य समाज:

आर्य समाजाने २४ ऑक्टोबर १९३८ ते ७ ऑगस्ट १९३९ या कालावधीत हैदराबाद संस्थानामध्ये सत्याग्रह केला. या काळात आर्य समाजाचे १२००० सत्याग्रही तुरुंगात होते. इ. स. १९३९ मध्ये आर्य समाजाच्या ३० शाखा होत्या. त्या १९४१ मध्ये २४१ झाल्या. आर्य समाजाच्या शाखा प्रामुख्याने तेलंगण, कर्नाटक या बरोबरच मराठवाड्यातील उस्मानाबाद, नांदेड, उदगीर, धारूर, निलंगा, रेणापूर, गुंजोटी अशा भागात मोठ्या प्रमाणात होत्या. नारायण स्वामी, नरदेव शास्त्री, नरेंद्र देव, शेषराव वाघमारे, निवृत्ती रेड्डी, दिगंबर लाटकर, वेदप्रकाश वाघमारे बन्नीलाल, दिगंबर शिवणीकर, गणपतराव कदते, शंकरराव पाटील या प्रमुख आर्य समाजाच्या कार्यकर्त्यांचा तुरुंगातच मृत्यू झाला.

ऑपरेशन पोलोट (लष्कर / पोलिस कारवाई)

लष्करी कारवाई शिवाय निजाम बळणीवर येत नाही व दिवसेंदिवस जनतेवर होणारे अत्याचार वाढत आहेत. हे पाहून भारत सरकारने १३ सप्टेंबर १९४८ रोजी पोलिस कारवाईला सुरुवात केली. लष्करी फौजा सोलापूरकडून घुसल्या पहाटे ४ वाजता ऑपरेशन सुरू झाल्यावर २

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Akramnabad Tal. Akhmed Dist. Nanded



तासात नळदुर्ग व संभ्याकालपर्यंत तुळजापूर, परभणी ते मणिगट, कन्होरगाव व विजयवाड्याकडील तुळडीने बोनाकल ताब्यात घेतले. घाळीसागावाकडील तुळडीने कन्नड, औरंगाबाद तर बुलडाण्याकडील तुळडीने जालना ताब्यात घेतले. तसेच वरंगल, बिदर येथील विमानतळावर भारतीय फौजानी हल्ले केले. १५ सप्टेंबर १९४८ रोजी औरंगाबाद जिकून घेऊन फौजा पुढे सरकू लागल्यावर निजामी सैन्याने माघार घेतली. हैदराबादचा रोनाप्रमुख जन अल इदगीस याने १७ सप्टेंबर १९४८ रोजी शरणागती स्वीकारली तसेच निजाम स्वतःही शरण आला. अशाप्रकारे हैदराबाद मुक्तिसंग्राम यशस्वी होऊन संस्थानामध्ये तिरंगा भ्यज फडकला.

समारोप व निष्कर्ष:

हैदराबाद मुक्तिसंग्राम हा हिंदु- मुस्लीम लढा नसू तो धर्मांध सरंजामशाही विरुद्धचा जनतेचा लढा होता. या लढ्याचे नेतृत्व करणारे नेते हे ९०% पेशा जास्त शिवाक होते. या लढ्याचे नेतृत्व प्रामुख्याने गुजराती, मारवडी व ब्राम्हण या उच्च वर्गीय जातीकडे होते. या लढ्यात राजकीय सहभाग होता. अशा प्रकारे हैदराबाद मुक्तिलढ्याची घळवळ थोडीफार विकेंद्रीत असली तरी स्वयंशिरत होती. त्यामुळेच हा लढा यशस्वी होण्यास मदत झाली.

संदर्भ सूची :-

- १) गाढाळ एस. एस., आपुनिक महाराष्ट्राचा इतिहास, कैलाश पब्लिकेशन, औरंगाबाद, २०१८.
- २) बिपिनचंद्र व इतर (अनुवाद काळे एम. व्ही.) इंडियाज स्ट्रगल फॉर इंडिपेंडन्स, के सागर पब्लिकेशन, पुणे २०१७.
- ३) <http://marathijobs.com>, date - २५/१२/२०१८.
- ४) <http://m.r.ikipedia.org>, date - २५/१२/२०१८.
- ५) <http://hi.union.pedia.org>, date - २५/१२/२०१८.



	IMPACT FACTOR 2.66	ISSN 2454-3292
	International Registered & Recognized Research Journal Related to Higher Education for All Subjects INDO WESTERN RESEARCH JOURNAL	
REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL		
Issue : VI, Vol. II Year- III, Bi-Annual (Half Yearly) (Mar. 2017 To Aug. 2017)	EDITOR IN CHIEF	
	Dr. Nilam Chhangani Head, Dept. of Economics, SKNG Mahavidyalaya, Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.) India	
	EXECUTIVE EDITORS	
	Dr. Subhash Deshmukh Head, Dept. of Economics, Dada Pabi Rajale Mahavidyalaya, Adhikathnagar, Dist. Ahmednagar (M.S.)	Dr. Bhaskar S. Wazire Head, Dept. of History, Sitabai Arts College, Akola, Dist. Akola (M.S.)
	DEPUTY EDITOR	
	Dr. Suna S. Nirni Dept. of History, GP, Porwal & V.V. Salmath College, Sindagi, Dist. Bijapur (M.S.)	Dr. Lalita Chandratre Dean, Sanskrit and Education, K. K. Sanskrit University, Ramtek, Dist. Nagpur (M.S.)
Editorial Office : 'Gyandev-Parvati', R-9/139/6-A-1, Near Vishal School, LIC Colony, Pragati Nagar, Latur Dist. Latur - 413531. (Maharashtra), India.	CO - EDITOR	
	Vanita Jadhav Mother Terasa B.Ed. College, Dharwad, Dist. Dharwad (Karnataka)	Dr. B. S. Thombare Head, Dept. of Geography, Babaji Dale College, Yavatmal, Dist. Yavatmal (M.S.)
Website	MEMBER OF EDITORIAL BOARD	
www.irasg.com	Dr. Mohammad T. Rahaman Dept. of Biomedical Science, International Islamic University, Mahkota (Malaysia)	Dr. Sivappa Rasapali Dept. of Chemistry & Biochemistry, UMASS, Wesport Road, Dartmouth, MA (U.S.A.)
Contact : - 02382 - 241913 09423346913 / 09637935252 09503814000 / 07276301000	Dr. Eknath J. Helge Head, Dept. of Commerce, Jijamata Mahavidyalaya, Buldhana, Dist. Buldhana (M.S.)	Dr. Sarjearo R. Shinde Principal B. K. D. College, Chakur, Dist. Latur (M.S.)
E-mail : visiongroup1994@gmail.com interlinkresearch@rediffmail.com mbkamble2010@gmail.com	Dr. Satyen Kumar P. Sitapara Principal Commerce & BBA College, Amreli, Dist. Amreli (Gujrat)	Dr. Ambuja Malkhedkar Gulbarga, Dist. Gulbarga (Karnataka)
Published by : Indo Asian Publication, Latur, Dist. Latur - 413531 (M.S.) India	Dr. Alilabaksha Jamadar Head, Dept. of Hindi, B. K. D. College, Chakur, Dist. Latur (M.S.)	Dr. Sakham V. Kakade Dept. of Zoology, Vasant Mahavidyalaya, Kaij, Dist. Beed (M.S.)
Price : ₹ 200/-		


PRINCIPAL
 Swami Vivekanand Mahavidyalaya
 Mukramabad Te. Mukhod. Dist. Nanded



Issue : VI, Vol. II
IWRJ

IMPACT FACTOR
2.66

ISSN 2454-3292
Mar. 2017 To Aug. 2017

INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author(s)	Page No.
1	Electronic Payment System in Banking	Sunil P. Vanjare	1
2	Increasing Trends of Mobile Banking in India	Dr. M. G. Shaikh	6
3	Study of Customer Relationship Management in Indian Market	Ravindra V. Sonule	13
4	Web Operating System Impediments	Manhamad Mukram M. Nizimoddin	20
5	The study of Satyajit Ray's Trouble in Gangtokand the theory of Vladimir Propp	Ankush V. Shinde	29
6	Geopolitics and Maritime Security in the Indian Ocan	Bharatbhusan Balbudhe	33
7	स्वांतत्र्योत्तर हिंदी नाटक	डॉ. संगीता दिलीपराव भिसे	42
8	नारी का पारिवारिक परिवेश और हिंदी कहानिया	डॉ. कुमार डी. बनसोडे	47
9	नारी विमर्श और हिंदी साहित्य	डॉ. शहाजी बाला चव्हाण	51
10	ग्रामीण विकास व स्थानिक स्वराज्य संस्था : एक दृष्टीक्षेप	शिवाजी बाबुराव मोहाळे	54


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tal. Mukhed. Dist. Nanded



**The study of Satyajit Ray's Trouble in Gangtokand the theory
of Vladimir Propp**

Ankush V. Shinde

Dept. of English,

Swami Vivekanand Mahavidyalaya,

Mukramabad, Dist. Nanded

Introduction

Russian Vladimir prop examined many of his folk fairy tales in 1928 .He broke down the stories into morphemes and identified 31 narrative units that comprised the structure of many of the stories. Folktale is general terms for any of numerous varieties of traditional narrative. Folktale is a type folklore which can be formed in oral and written form. Folk stories around the world form a web of connections and the same stories can be found in many places. These old stories also have formed the basis of many more stories since and hence Propp's morphology is useful not only in understanding Russian folk tales but pretty much any other stories. Vladimir Propp's morphology of the folk tale is widely acknowledged by narratologists as one most impressive contribution to the understanding plot structure. This research paper, focussing on the Satyajit Ray's short story- Trouble in Gangtok with the help of Vladimir Propp's Theory.

Propp has given some following functions:

- 1- The initial Situation is not a function
- 2- Function 1-7 =preparation
- 3- Function 8-10 =complication
- 4- Function 11-15= transference
- 5- Function 16-18= struggle
- 6- Function 19-26= recognition

As well as finding the 31 narratemes, Vladimir Propp also identified a limited set of eight broad character type (prop, 1968).

The analysis of characters

- 1) The villain- Sasadhar Bose (Dr.Vaidya), is the real villain to be identified at the ending of the story.
- 2) The Donor - Helmut Ungar, who gives the hero something special to find out the culprit.
- 3) The Helper- Topse, who appears at critical moment to provide support in hero's investigation to catch the villain.
- 4) The Dispatcher- Nishikantrao Sarkar, who sends the hero completing the mission.
- 5) The Hero- Feluda, is the key person around the story is told.
- 6) The False Hero- There is no false hero in the story.
- 7) The Heroine- In the story there is no any female characters.

The story of Trouble in Gangtok

The story is narrated by Topse, a cousin of Feluda. And Feluda, who is a private detector and a protagonist of the story. He had suggested, a beautiful place, Gangtok for spending their summer holidays. It was a famous place for Tibetan culture, as well as their dance, music, costumes and food. As soon as they reached the Gangtok, Mr Shelvankar was murdered with a strange manner. The story is developed by the writer, Satyajit Ray, step by step using the odd characters such as, Mr Bose, Helmut, Sarkar and Dr Vaidya. With the perfect experience of detective cases, a protagonist, Feluda finds out the real culprit of the murder case. He investigated that Mr Bose was the criminal and murderer of Mr Shelvankar. Mr Bose had played the double role to take the Tibetan statue which had nine heads and thirty- four arms. Thus, the story Trouble in Gangtok is a completely an adventure story written by Satyajit Ray.

D-The analysis of function.

1. Initial situation.

This part is not as function but it is the basic of the story. In it given the introduction of the characters, the story has been developed step by step from this part.

2 Function 08: Villainy

In the first phase of the story, Feluda and Topse reached at the hotel- Snow View in Gangtok, they came to know that Mr Bose, one of the co-passengers, of a golden ring in middle finger with inscribed a single word 'Ma' was halting at the dark Bungalow. He was the partner of The Company S.S. Chemicals. He had come to look for aromatic plants from Calcutta. But in the next morning he came with a bad news of accident and he exclaimed the dreadful words



Director, Translucent... in... ..

From CS,

When asked,

(Expt. 1, 2000,)

But this speech he uttered

... ..

... ..

... ..

3. Function 14 - acquisition

In

... ..

(p. 150)

4. Function 12 - Testing

... ..

... ..

... ..

... ..

(p. 151, 152)

5. Function 16 - Construction

... ..

Dr.

first investigation, went to see the Tibetan institute where he had seen most impressive collective arts. Secondly, he also got the important news from rental taxi driver as survived driver of Mr Shelvanker's accident was driving on the new taxi SKM 463. As a detective; he asked some questions to Mr Bose on the horrible case of accident.

'The Tibetan Institute.

The driver of that jeep survived, didn't he?

Could you please.other personal effects'

(P.155-158)

6. Function 05:-Delivery

In his enquiry, Feluda noticed that Mr. Bose, seemed to remember something with changed expressions on his face, he looked at him with mixture of wonder and amusement. By the way Mr Bose came to know that Feluda, who is a private investigator and was doing investigation on the case of Mr Shelvakar.

Feluda told him.

It had started to rain'

(p.158, 159)

Conclusion:

From the discussion, we can take a conclusion that the story Trouble in Gangtok by satyajit Ray has a similar structure as Russian folktale as Vladimir Propp. I studied only six functions in the story, but Propp never mention that the story should contain all the function. It might be influenced by the complete adventure of Feluda where the story comes from.

References :-

- 1) Propp V. (1968). Morphology of the Folktale. University of Texas press.
- 2) Ray, s. (2000). Feluda -I- Penguin Books India.



UGC Approved International Registered & Recognized
 Research Journal Related to Higher Education for all Subjects



INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

UGC APPROVED REFEREED & PEER REVIEWED RESEARCH JOURNAL

Issue : XVII, Vol. X
 Year -IX (Half Yearly)
 (Jan. 2018 To June 2018)

Editorial Office :
 'Gyandeept',
 R-9/139/6-A-1,
 Near Vishal School,
 LIC Colony,
 Pragati Nagar, Latur
 Dist. Latur - 413531.
 (Maharashtra), India.

Contact : 02382 - 241913
 09423346913, 09637935252,
 09503814000, 07276301000

Website

www.irasg.com

E-mail :
 interlinkresearch@rediffmail.com
 visiongroup1994@gmail.com
 mbkamble2010@gmail.com
 drkamblebg@rediffmail.com

Publisher :
 Jyotichandra Publication,
 Latur, Dist. Latur-413531
 (M.S.) India

Price: ₹ 200/-

CHIEF EDITOR

Dr. Balaji G. Kamble
 Research Guide & Head, Dept. of Economics,
 Dr. Babasaheb Ambedkar Mahavidyalaya, Latur, Dist. Latur (M.S.)
 Mob. 09423346913, 9503814000

EXECUTIVE EDITORS

Dr. Aloka Parasher Sen
 Professor, Dept. of History & Classics,
 University of Alberta, Edmonton,
 (CANADA)

Dr. Laxman Satya
 Professor, Dept. of History,
 Lokhevan University, Lohavvan,
 PENNSYLVANIA (USA)

Dr. Huen Yen
 Dept. of Inter Cultural
 International Relation
 Central South University,
 Changsha City, (CHINA)

Bhujang R. Bobade
 Director, Manuscript Dept.,
 Deccan Archaeological and Cultural
 Research Institute,
 Malakpet, Hyderabad. (A.P.)

Rajendra R. Gavhale
 Head, Dept. of Economics,
 G. S. College,
 Khangaon, Dist. Buldhana (M.S.)

Dr. Nilam Chhangani
 Head, Dept. of Economics,
 SKNG College,
 Karanja Lad, Dist. Washim (M.S.)

DEPUTY-EDITORS

Dr. S.D. Sindkhedkar
 Vice Principal
 PSGVP's Mandals College,
 Shahada, Dist. Nandurbar (M.S.)

Veera Prasad
 Dept. of Political Science,
 S.K. University,
 Anantpur. (A.P.)

Dr. Balasaheb S. Patil
 Head, Dept. of Economics,
 CKT College,
 Panvel, Dist. Raigad (M.S.)

Dr. Dilip S. Arjune
 Head, Dept. of Economics,
 JES College,
 Jaina, Dist. Jaina (M.S.)

CO-EDITORS

Dr. C.J. Kadam
 Head, Dept. of Physics
 Maharashtra Mahavidyalaya,
 Nilanga, Dist. Latur (M.S.)

Johrabhai B. Patel,
 Dept. of Hindi,
 S.P. Patel College,
 Smaliya (Gujrat)

Ambuja N. Malkhedkar
 Dept. of Hindi
 Gulbarga, Dist. Gulbarga,
 (Karnataka State)

Dr. Balaji S. Bhure
 Dept. of Hindi,
 Shriyagnis College,
 Nalegaon, Dist. Latur (M.S.)



RNI MAHMUL02805/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue: XVII, Vol. X, Jan. 2018 To June 2018

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	The Role of Credit Rating in Capital Market Investment Decision Making Dr. A. J. Raju	1
2	Frustration and Anger of Jimmy Porter in John Osborne's Look Back in Anger Ankush V. Shinde	6
3	India: Strategic Challenges and Responses Bharatbhushan W. Balbudhe	10
4	Legal Validity of Buddhist Marriages Dr. K.S. Waghmare	23
5	'जान से प्यारे' एकांकी में चित्रित वर्तमान समाज की वास्तविकता डॉ. प्रविण कांबळे	29
6	स्त्री वर्गाचे आर्थिक व सामाजिक प्रश्न डॉ. टी. ए. मोरे	32
7	महाराष्ट्रातील पाण्याची समस्या आणि उपयुक्त जलसाठा - एक अभ्यास डॉ. बालाजी ग्यानीबा कांबळे	37
8	हेदराबाद मुक्तिसंग्राम भरत माधवराव मुस्कावाड	45

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



Frustration and Anger of Jimmy Porter in John Osborne's Look Back in Anger

Ankush V. Shinde

Dept. of English,

Dept. of English,

Swami Vivekanand Mahavidyalaya,

Mukramabad, Dist. Nanded

John Osborne made his reputation as a dramatist when he was of twenty six years young by writing *Look Back in Anger*. With its publication he came to be known as the "The Angry Young Man". The play marked the beginning of the new drama. Its first performance on May 8th 1956 is considered as the beginning of a new era in the British Drama, Russell Taylor comments as: "The beginning of a revolution in the British theatre" (Taylor 11). Also its performance is considered as a moment of change and reactions George E. Wellwarth comments as: "The new movement in the British drama" (Taylor 157). It is a brilliant analysis of the post war generations, of the contemporary society. It is a play of political and social rebellion and labeled the movement "Angry Young Man".

Look Back in Anger became the central and most influential expression of the mood of its time, the mood of the angry young man. It became a key to the mood and temper of the post-war England. British young people were puzzled by the Hungarian revolution; it was the era in which England was losing power as an empire, in which there took place the rise of the Labor party in England, in which the churches were coming under the political power. In addition, the World War II led to realistic fears for the annihilation of all the classes through the threats of nuclear bomb attacks. Garrini Salgado comments as: "These political events left many people in England, especially among the younger generation, embittered and disillusioned about the possibilities of individual political action within existing political institutions" (Salgado 92). Jimmy Porter belongs to the working class people and he became the spokesman of this mood and temper. British peoples despair, disillusionment, cynicism and frustration has been expressed by Jimmy, as he comments: "People of our generation are not able to die of good causes anymore"

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhamad, Dist. Nanded



(LBA-73). He is the manifestation of the angry man's disillusionment.

Jimmy Porter is depicted as a man who lacks the basic qualities such as courage, morality and idealism. He is depicted as an angry young man who is angry against each and everything in the modern era. He blames the war, the police, the mother-in-law and the infant in her womb. He represents the fury of the post-war youth as described by William comments: "Jimmy is a very angry young man, and more so, he is a young man who is convinced that for the youth of today the world is an enemy out to get it" (Bode 115).

Anger is considered as the emotional state that later moves beyond the level of anger and expression of angry and aggressive acts. Berkowitz states that "In general, highly violent hostile actions upon being frustrated and may be this because he is in an intense emotional state i.e. his anger level is very high" (Berkowitz 15). Jimmy is an embodiment of the frustration of a particular age and a class who expect better but their own class origin by improving themselves. Although he is a university graduate but he could not get a proper job. According to Berkowitz, "Inability to fulfill the anticipations is a frustrated" (Roots 16). His university education in Oxford does not make him a higher class member. Bode states: "Jimmy is a man who has tried and failed to become middle class" (Bode 331).

Jimmy Porter looked round the world and found nothing right with it and at last gets disillusioned. He is the embodiment of disillusionment and rebelliousness. We found all the important characteristics of the post-war youth in him such as: expectations, disillusionment, drift towards anarchy, rejection of the official attitude, surrealistic sense of humor, the sense of lacking a noble cause worth fighting for, etc. He expresses the vacuousness of his life as: "God, how I hate Sundays! It's always so depressing, always the same. We never seem to get any further, do we? Always the same ritual. Reading papers; drinking tea, ironing. A few more hours, and another week gone. Our youth is slipping away" (LBA 14-15).

Jimmy is an aggressive young man. Always and everywhere we find him angry, dissatisfied and restless. He is dissatisfied with each person and everything around him such as: his wife Alison, friend Cliff Lewis, the Sunday newspapers, religious, social, political and economical events. He waged a war against the class distinctions. He belongs



to the working class while his wife, Alison belongs to the upper class people. He bullies, taunts, humiliates, hates and criticizes Alison, her parents, her brother and her relatives which is nothing but his anger against the upper class people. John Mander states: "Jimmy is certainly getting an easy revenge on the class he detests (Mander 147). Always he rages against things, persons and institutions. He very severely criticizes the Bishops, religion and rituals. He criticizes entire female sex for being too noisy and blood thirsty: "Slamming their doors, stamping their high heels, banging their fists and saucers" (LBA-25). "Why, why, why, why do we let these women bleed us to death?" ... "No, there is nothing left for it, me boy, but to let yourself be butchered by the women" (LBA 84-85).

Jimmy's wife, Alison's passivity and timidity provide his anger as he says: "She's a great one for getting used to things. If she went to die, and wake up in paradise after the first five minutes, she'd have got used it" (LBA 16). "Nothing I could do would provoke her. Not even if I were to drop dead" (LBA 19). Jimmy expects Alison to react him but she withdraws when he provokes. Her lack of response and affection towards him causes him to treat her badly as Luc Gillemann comments: "Jimmy is a frustrated husband who is brought to despair by his wife's passivity" (Gillemann 77).

Jimmy was deeply affected by his father's death since he was of only ten years child when he passed away, he says: "I was the only one who cared!...I had to fight back my tears....All he could feel was the despair and the bitterness, the sweet, sickly smell of a dying man....You see, I learnt at an early age what it was to be love....betrayal....and death, when I was ten years old than you will probably ever know all your life" (LBA 58). He is frustrated on account of the fact that he cannot awake the people he cares about; people whom he loves don't share his pain.

Jimmy laments that the British people don't have good, brave causes left in the world so that people are not able to die for noble reasons. Dying will be as inglorious as stepping in front of abus. Jimmy being the representative of the young generation expresses the post-war boredom as: "Nobody thinks. Nobody cares. No beliefs, no convictions, and no enthusiasm" (LBA-14). He complains that nothing is changed but everything is as it was, only the labels are changed, the content is same. According to him we have to


PRINCIPAL
 Swami Vivekanand Mahavidyalaya
 Maharambad Te Mahant, Doo Nantad



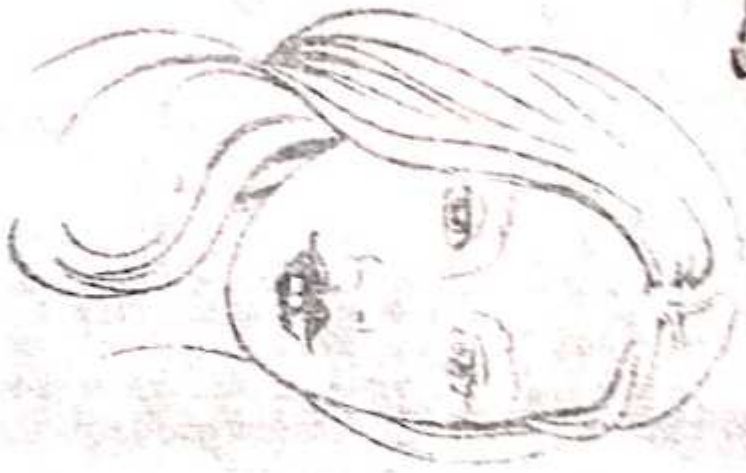
follow the same routine every time- reading newspapers, drinking tea, ironing clothes, our youth has been sleeping away from us hour after hour. Even he criticizes the religion as it misguides the people and don't have the capacity to comfort people.

Thus *Look Back in Anger* displays the frustration and anger of Jimmy Porter which is regarded as a reaction against the insensibility of the generation which had grown up during the World War II. John Mortimer comments: "Jimmy Porter was credited with being the first young voice to cry out for a new generation that had forgotten war, mistrusted the welfare state and mocked it's established rulers with boredom, anger and disgust" (Mortimer 183).

References :-

1. Berkowitz, Leonard. *Aggression: A Social Psychological Analysis*. New York, Toronto, London, San Francisco: McGraw-Hill Book Company, 1962.
2. Berkowitz, Leonard. *Roots of Aggression: A Re-examination of the Frustration-Aggression Hypothesis*. New York, Atherton Press, 1969.
3. Bode, Carl. *The Redbrick Cindrallas*. College English. Vol. 20 (1959).
4. Gilleman, Luc M. *The Logic of Anger and Despair*. John Osborne: A Casebook. Ed. Patricia D. Denison. New York: Garland, 1997.
5. Osborne, John. *Look Back in Anger*. London; Faber and Faber, 1971.
6. Mander, John. *The Writer of Commitment*. John Osborne *Look Back in Anger*. Ed. John Russell Taylor. London: Macmillan, 1968.
7. Mortimer, John. *The Angry Young Man who Stayed that Way* John Osborne: A Casebook. Ed. Patricia D. Denison. New York; Garland, 1997.
8. Salgado, Gamini. *English Drama: A Critical Introduction*. London: Edward Arnold, 1980.
9. Taylor, Russell. *John Osborne's Look Back in Anger*. London: Macmillan, 1968.
10. Wellwarth, George. *John Osborne's Angry Young Man?* Ed. John Russell Taylor. London. Macmilan, 1968.

२५/१२



PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tal. Mukherd. Dist Nandod

परिकल्पना

सी-७, सरस्वती कॉम्प्लेक्स, पतीप तला, गुणप चंदः
लखनऊ, तेली-११००९२, मो: ९९६८८८४१३२
e-mail: pavan@amc.co.in, 2016@amahi.co.in



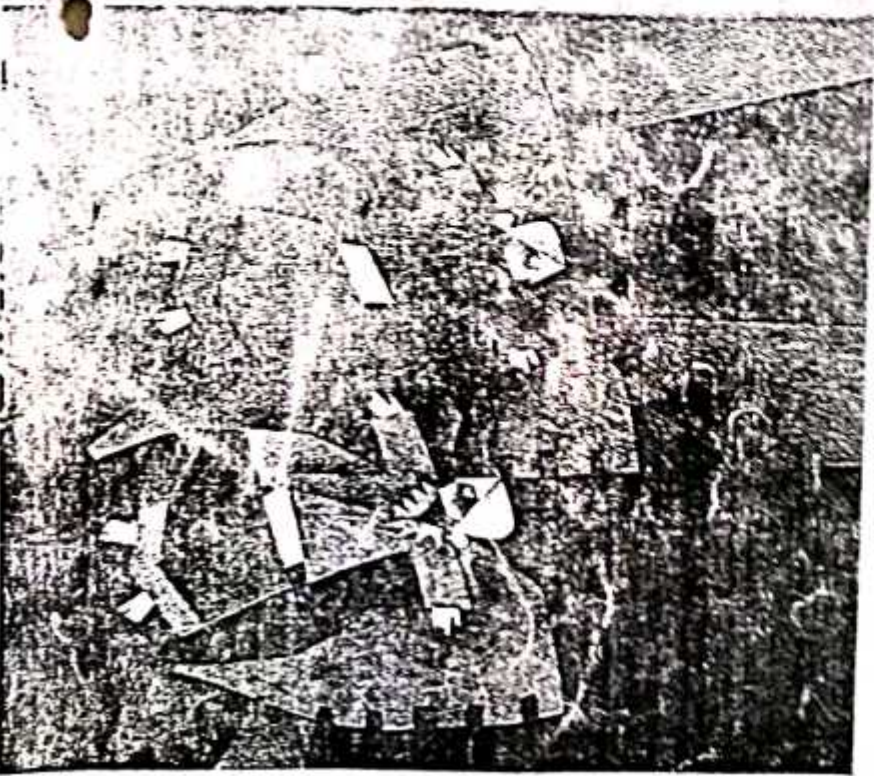
आणी आबाली

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव, डॉ. संतोष विजय थेरावर



आणी आबाली

डॉ. संदीप श्रीराम पाईकराव
डॉ. संतोष विजय थेरावर





ಕನ್ನಡ

ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆ : ಅಭಿವೃದ್ಧಿ ಮತ್ತು ಸಂವಹನ	75
--ಕೆ. ಎಸ್. ಶರಣ್	
ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯ ಸಾಮಾಜಿಕ ಮತ್ತು ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಪಾತ್ರ	78
--ಕೆ. ಎಸ್. ಶರಣ್	
ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮತ್ತು ಸಾಮಾಜಿಕ ಪಾತ್ರ	85
--ಕೆ. ಎಸ್. ಶರಣ್	
ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮತ್ತು ಸಾಮಾಜಿಕ ಪಾತ್ರ	88
--ಕೆ. ಎಸ್. ಶರಣ್	
ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮತ್ತು ಸಾಮಾಜಿಕ ಪಾತ್ರ	92
--ಕೆ. ಎಸ್. ಶರಣ್	
ಕನ್ನಡ ಭಾಷೆಯ ಸಾಂಸ್ಕೃತಿಕ ಮತ್ತು ಸಾಮಾಜಿಕ ಪಾತ್ರ	95
--ಕೆ. ಎಸ್. ಶರಣ್	



श्रीमतीक शशी नारी की समस्त्याएँ

-डॉ. टी. गुनीता

समकालीन साहित्य में स्त्री-विमर्श

-डॉ. लीला सिंह

कृष्णा संवत् की उपन्यासों में स्त्री-विमर्श

-डॉ. सुरभीला ठानी

समकालीन हिन्दी नाटकों में स्त्री-विमर्श

-डॉ. तार कुमार

समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श : एक विशेषण संदर्भ

-डॉ. छाया एन.के.

समकालीन स्त्री कविताओं में स्त्री छवि

-डॉ. नवीन नन्दकान्त

भारतीय संदर्भ में महिला सशक्तिकरण एवं उनके अधिकार

-डॉ. उज्ज्वल कुमार

स्त्री-विमर्श और पुरुष-विमर्श

-डॉ. राजेश कुमार

नार्सिस शर्मा के नारी पात्रों का समावेशनात्मक अध्ययन

-डॉ. राजेश कुमार

21वीं सदी का हिन्दी कविता में स्त्री

-डॉ. सखर वसंतगण निवृत्तांगव

समकालीन भारतीय साहित्य में स्त्री-विमर्श

-डॉ. टी. गुनीता

नार्सिस शर्मा के उपन्यासों में नारी संघर्ष

-हंसलता

अंतिम दशक की कक्षाविधियों में कामकाजी नारी की समस्त्याएँ

-डॉ. अरुण हंसलता

स्त्री पराधीनता और कितने सादियों तक

-डॉ. डॉ. टी. श्रीनिवासगुरु

समकालीन कथा साहित्य में स्त्री-विमर्श

-डॉ. लीला सिंह

आधुनिक शहरी नारी की समस्त्याएँ

-डॉ. टी. गुनीता

97

100

105

113

122

129

140

148

154

169

175

179

183

187

195

198

उत्तर आधुनिकता : नारी-विमर्श

-एम. रामचन्द्रम

नारी स्वभाव के विभिन्न आयामों सकल प्रतीक : शीतवती

-तान्ता निरंजन

हिन्दी साहित्य में ग्रामीण नारी की समस्त्याएँ

-डॉ. ई. राजा कुमार

हिन्दी साहित्य में धेतना युक्त नारी

-डॉ. ई. गुनीता

शिवमती की कहानियों में नारी पात्रों की मनःस्थिति

-डॉ. शेषाणी गुरुरसाहेब

उषा पाटव के साहित्य में नारी

-नितिन शेट्टी

समकालीन हिंदी कविता में अग्नि व्यक्त नारी संवेदना

-डॉ. संतोष विजय येरावार

नारी विमर्श की सशक्त रस्ताशर-भीराबाई

-श्रीमती भीरा मुण्डा

201

205

208

211

214

219

227

233

यहीं की वहीं खड़ी रहेगी-चेतन के प्यार और मनुहार की प्रतीक्षा करती...किन्ती दीदी की ममता को लांघती, नकारती।" इससे स्पष्ट होता है कि चेतना युक्त नारी किस प्रकार अपनी मर्जिल को पहुँच सकती है।

सन्दर्भ

1. मनुस्मृति, पृ. 257
2. आधुनिक कवि नारी अस्मिता, डॉ. इंदु बंशोप, पृ. 13
3. किराणें की मो (जवान सिद्धी), चन्द्रकिरण सौमित्रेवसा, पृ. 85
4. ईश्वरीकृत जल रहे है (मुडुला गन की धारणार कर्मानियाँ), मुडुला गन, पृ. 39
5. दलान पर (पात्रा मुक्त), रात्री सेठ, पृ. 42

शिवानी की कहानियों में नारी पात्रों की मनःस्थिति

प्रा. शेष गणी गणुरासहिदेय

आधुनिकयुग की स्थितियों ने नारी में नई चेतना का संघार किया, उन्हें जागृत किया है। वे समाज में समता, बंधुत्व और समानता के कारण अपने अधिकारों के प्रति सचेत हुई हैं। वर्तमानकाल आर्थिक संक्रमण का काल है, यह अपनी गति से प्रवाहित हो रहा है। जब भी आर्थिक स्थितियाँ बदलती हैं तो मानवी जीवन की सारी धारणाएँ प्रभावित होती हैं। इस स्थिति में भारतीय संस्कृति और सभ्यता की परीक्षा होना स्वाभाविक है। मानवी जीवन की यह परंपरागत धारणाएँ ही आज टेक पाएंगी, जो कालानुरूप अपने आपको ढालने की क्षमता रखते हैं। भारतीय स्त्रीवाद पारिवारिक रिश्तों को निभारक चलनेवाला वाद है, परंतु आर्थिक संक्रमण के कारण इस धारणा में भी परिवर्तन हो रहा है। इस स्थिति में भारतीय नारी के जीवन को समझना आवश्यक हो जाता है। आधुनिक कथा साहित्य में स्त्री नए अंदाज में अभिव्यक्त हो रही है—“आधुनिककाल में कथा साहित्य जगत में बंग महिला (राजबाला घोष) की ‘दुलाईवाली’ कहानी से नारी विशयक चिंतन माना गया है। इन्होंने अनेक बंगला कहानियों का हिंदी में अनुवाद किया, जिसमें स्त्री के जीवन को रेखांकित करने का प्रयास किया है।” हिंदी कथा साहित्य में उषा देवी मिश्रा, श्रीमती रजनी पन्निकर, शिवानी, मन्नु भंडारी, मालती जोशी, कृष्णा सोबती, उषा प्रियवंदा, महेशनिता परबंब, शशिप्रभा शास्त्री, सुधा अरांडा, नीताराशर्मा, ममता कालिया, मकुणाल पाण्डेय, रात्री सेठ, प्रभा खेतान, मैत्रेयी पुष्पा, कृष्णा अर्निखेत्री, निमला जैन, कुसुम कुमार आदि कथाकारों ने आधुनिक महिला के मानसिकता के साथ-साथ सामाजिक-समस्याओं का विवेचन भी प्रभावशालक रूप से किया है। स्त्री-अस्मिता, अधिकार को लेकर निरंतर लिख रही है और नारी चेतना को जागृत कर रही है। इन सभी स्त्री कथाकारों में गौरावंत शिवानी का स्थान अनन्यसाधारण है।

PRINCIPAL

Swamijiv Ashram & Mahavidyalaya
Mukhamabad Ta. Mukhed, Dist. Mandad



आधुनिक काल की सरासर मूर्खता कायाकार के रूप में शिवानी को जाना जाता है। शिवानी ने अपने साहित्य में व्यक्ति और समाज के अंतःसंबंध को समेटा है। इन्होंने 'भावाग्रुण' (1961), 'धरती' (1969), 'विषकन्या' (1970) 'शीतल फेंग' (1972) 'भगान घग्गा' (1972) 'कैला' (1973) 'संविधान' (1974) 'सुरंग' (1978) 'शिवनीली का डाट' (1979) 'कुष्माण्डी' (1981) 'रत्न सुसंग पर अपने' (1982) 'शिवनीली' (1988) 'पूनीवादी' (1986) 'उपदेशी' (1988) 'कर्मवीर' (1988) 'कालिन्दी' (1991) 'वचन शिखर' (1994) 'गीता' (1994) 'अतिथि' (1995) 'मार्गिक' (1995) आदि प्रसिद्ध कथासाहित्य (उपन्यास, लघु उपन्यास) में स्त्री के भावविश्व को समेटा है। कला क्षेत्रिका शिवानी जी के उपन्यास के साथ-साथ कर्त्तवियों की समय-समय पर विविध-संकलनों के द्वारा प्रकाशित होती रही है। 'सादी' 'करी' 'टीला' 'पुष्पाक्षर' (1969) 'कालिन्दी' (1971) 'नाल करेनी' (1973) 'भैरी शिव कर्त्तवियों' (1973) आदि प्रमुख कथानों संग्रह हैं। इन कर्त्तवियों में 'नाल करेनी', 'रत्ना', 'पुष्पाक्षर', 'भैरी शिव कर्त्तवियों', 'उपदेश', 'टीला', आदि प्रमुख एवं प्रसिद्ध कर्त्तव्यों हैं।

प्रसिद्ध साहित्य गुरुजनों को लेकर शिवानी का कहना है कि— "संछन का तो यह है कि मैं कौनेत्र के जमाने से लिखती थी। 1951 में जब भैरी छोटी बंदी द्वाारा धरती हुई, तब धर्मपुत्र में भैरी पकली कर्त्तवी प्रकाशित हुई। उस कथानी का नाम था 'कर्त्तवीर की मृत्यु'। सन 1958-59 में भैरी बंगला में भी कर्त्तवीर लिखी थी।" इसमें यह धारणा हो जाती है कि शिवानी ने सबसे पहले बंगला भाषा में संछन आरंभ किया और उसकी पकली कर्त्तवी बंगला भाषा में 'कुष्माण्डी' 1958-1959 में प्रकाशित हुई। सन 1951 को धर्मपुत्र में प्रकाशित 'कर्त्तवीर की मृत्यु' द्वाारा कथानी से शिवानी को हिंदी कथानी का रचना संसार खोलकर दिया गया है। तब से लेकर अनेक सौम्य सतक शिवानी ने साहित्य गुरुजनों किया है।

शिवानी की कर्त्तवियों के विषय में विवेचना है। इनकी कर्त्तवियों के विषयवस्तु में जीवन के प्रत्येक पक्ष को घुसा है, फिर भी इनकी अधिकांश कर्त्तव्यों भैरी को संकेत में रखी हुई है। इन्होंने जिन भैरी पात्रों का गुरुज किया है वह भैरी बंदी पर धारित, नारा तो बंदी भगवानों से जाती है। इन्होंने विषय की दृष्टि से विवेचना की है। इनके भैरी पात्र जिन युग से आते हैं वही वे धार्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विषयवस्तुओं से होते हैं। इनका अधिकांश जीवन कठिन उपस्थिति में ही अधिष्ठित है, जो शिवानी में वह धैर्य की गठ द्वाारा धर्म आस्था में उड़ने के लिए बेताब है। इन कर्त्तव्यों में शिवानी ने संपूर्ण ही जीवन को रेखांकित करने का गुरुज प्रयास किया है। शिवानी अपने कर्त्तव्यों में जिन भैरी पात्रों का चित्रण

चित्रण है उसके संबंध में डॉ. सुशान्त गुप्ता कहती हैं कि— "भैरी ने पुस्तक के समाप्त भूरी को सिर्फ उच्च शिक्षण पर आरुण करने देनी समझकर उसकी पूजा नहीं की अर्थात् सिर्फ उनके कार्य को परिभाषित नहीं किया और न ही उनकी रूप में भैरी को धार्मिक और शोषित दर्शाया, बल्कि उन्होंने भैरी की स्थिति को सच्चाई में देखा ही उजागर किया। भैरी ने 'भैरी' की मनस्थिति को जिस विशिष्टता में चित्रित किया और जिस सुंदरता से उसकी अभिव्यक्ति दी है वह बड़े ही गौरव की बात है।"

'नाल करेनी' शिवानी की दृष्टि को व्यक्त करने वाली कथानी है। शिवानी यह कथानी में भारत-पाकिस्तान के वैदिकों के समय हुए रक्तपात में मनी युद्ध की विधिविका में मानवता के स्वर सुनाती है। कथानी की भैरी पात्र साहित्य की मनस्थिति का सूक्ष्म चित्रण शिवानी ने किया है। साहित्य जब मान करेनी को देखकर अपने धर्म हुए अस्तित्व को धार करती है, वह यह अवस्था नहीं साहित्यिक का मन स्पष्ट हो जाता है। शिवानी ने साहित्य का सुधा के रूप में बहुत ही सुंदर दृष्टि से मनोविश्लेषण किया है। यथा— "दाटपट्ट बूझों और यह बाहर निकल आओ, दृष्टि में विचलित-नी गति आ गयी पर करेनी के पास आकर यह परिमना-परिमना की गयी।" इस तरह नाल करेनी की भैरी पात्र जो भावुक है, अपने अस्तित्व के प्रति संवेदी है, यथा पर यह विवश है, निवृत्ती ने उसके साथ बहुत ही दर्दनाक संघर्ष था यह पाठक को अपने अस्तित्व से जुड़ न सकी। साहित्य एक ऐसी पहेली में उलझ गई जिसका कोई हल नहीं था। वस उस यह अपने मन में दबा कर धरती जाती है। शिवानी की 'भैरी' कथानी भारतीय समाज व्यवस्था को रेखांकित करने हुए भैरी की दयनीय अवस्था का वर्णन करती है। इस कथानी की पात्र शिवानी का ऊर्ध्व शिकी जो अनाथ है, उसका बचपन माया के पास गुजरा जो अस्मांडा के जन्मान स्थित विश्वनाथ धाट्टर के पुत्री से और अनेक संस्कार की विधियों करने से। शिकी आठ दिन तक जलती शिलाओं को देखकर बड़ी होती है। शिवानी ने शिकी का बाल कर्णन बहुत ही सुंदर दृष्टि से किया है। शिकी को उसके माया उनकी भोगी बहन जो शैलीमान में रहती थी उनके पास छोड़ जाने से। यही ही दयनीय अवस्था को देखकर शिकी बड़ी होती है। शिकी न पाठक को भैरी का बाल कर्णन के मास्टर में धरती जाती है। शिकी के बालकाल में यही बहुत अधिक होते हैं पर शिकी धर्मोपचार नामक के युवक से प्रेम करती है। धर्मोपचार वह युवक समाज में प्रसिद्धि द्वाारा का एकलौता पुत्र रहता है। धर्मोपचार भी शिकी से बहुत प्रेम करता है, उसे अपना जीवन साथी बनाना चाहता है, पर उसके पिता इन दोनों के प्रेम के बीच दीवार बनकर खड़े हो जाते हैं। यह अपने बेटे के मांस से शिकी को बचाने के लिए हर संभव अवसर



प्रिंटिंग आर्या

Printing Area International Interdisciplinary Research
Journal in Marathi, Hindi & English Languages

July 2017, Issue-30, Vol-05

Editor

Dr. Bapu g. Gholap

(M.A.Mar.& Pol.Sci.,B.Ed.Ph.D.NET.)

Co-Editor

Dr. Ravindranath Kewat

(M.A. Ph.D.)

Printed by: Harshwardhan Publication Pvt.Ltd. Published by Ghodke Archana Rajendra & Printed & published at Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.,At.Post. Limbaganesh Dist,Beed -431122 (Maharashtra) and Editor Dr. Gholap Bapu Ganpat.



Harshwardhan Publication Pvt.Ltd.

At Post Limbaganesh,Tq Dist Beed
Pin-431126 (Maharashtra) Cell 07588057695,09850203295
harshwardhanpubli@gmail.com, vidyavarta@gmail.com

All Types Educational & Reference Book Publisher & Distributors www.vidyavarta.com

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To.Mukhed Dist.Manded



Index

102) SC2 as a Subject Study of Cultural Diversities in Bihar Submitted to The Shree Ramchand ... Pawan Vilas Bhawan - Dr. Chingara Gouda	10
103) Treatment of Sex & Violence in the Story of Kamala Markandeya Nilesh S. Dhavra, Chandrapur	13
104) MICROFINANCE AND WOMEN EMPOWERMENT: ISSUES AND OPPORTUNITIES Bhmesh Rata Gudekar, Kolhapur (MS)	16
105) EDITORIAL ANALYSIS OF INDIAN JOURNAL OF TRADITIONAL KNOWLEDGE 2013-2014 Dimple K. Gokhale - Prachi R. Khokale	21
106) A Study of Styles of Learning and Thinking in Relation to School Adjustment of ... Dr. RAJESHWARI GARG, Jabalpur (M.P.)	25
107) MANAGEMENT OF WORKING CAPITAL: A STUDY OF HEALTHCARE SECTOR IN INDIA MA Zafar Alam, Meerut/Faridkot	29
108) Break through to the Indian Roster Comp. Rise of Balram Halwai in The White Tiger by Arundhati Dr. Utsav Jane, Kamargan Tq, Karanja, Dist. Wasim	36
109) A study of Occupational Structure And Economic Development Dr. V. S. Kshirsagar, Parbhani.	39
110) SKILL BASED EDUCATION-SOLUTION ON UNEMPLOYMENT Dr. Kolhe Gopal Gorakh, , Falzpur, Yawal, Jalgaon	41
111) CORPORATE SOCIAL RESPONSIBILITY AS PER COMPANIES ACT 2013 Ashutosh Mehta	43
112) LOST IN TRANSLATION. PROBLEMS OF RE-CREATING HAMLET IN A NATIVE TONGUE Chinmoy Mondal, West Bengal	47
113) An Empirical Study on Employee Development and Organizational Development Practices Among Dr. Manish P Parmar, Vadodara, Gujarat	52
114) Understanding Kashmir Megalithic Culture on Ancient Silk Route Radha Devi - Vishal Balaria, Jammu	56

A Citation Analysis Study Of Doctoral Dissertations In Botany Submitted To The Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded

Pawar Vilas Bhaurao
Research scholar

Dr. Ghogare Govind
Guide, JIT University Rajasthan

ABSTRACT

The doctoral expositions, which are result of research movement, frame a vital wellspring of data. Examination of paper and postulation reference records one approach used to gauge library use by research researchers who are generally regular and overwhelming library client. Papers might be "important street signs" to the writing of a teach. Papers are critical in light of the fact that separated from giving the trial confirmations; it additionally records a through audit of works that have as of now been done in a specific field to demonstrate that proposed work is not done somewhere else. What's more, to set up their claim, the scientist refers to countless in the paper, investigations of these references will be valuable in basic leadership procedure of a library to know the writing most utilized by the researchers and this might be utilized as a critical wellspring of data for choice of perusing materials for securing.

INTRODUCTION

In the 21st century, the Indian arrangement of training grasped another importance and personality. With the development of instruction, there is additionally

a move in the utilization of customary showing strategies from pedantic or address style educating to non-conventional showing techniques, for example, exhibition by speaker by utilization of LCD Projector, survey of pre-recorded shows on video Skype, sanctioning pretends to non-conventional strategies, for example, the utilization of virtual situations with symbols, conceal silicone props, classroom reaction frameworks and intuitive interfaces, reenactment and live meetings with patients to connect with the learners in different ways.

The expression "Conventional educating" depends essentially on a strategy that uses reading material, address notes, remembrance and recitation methods. Conveying training through a customary configuration sees no need in obliging the rich and assorted learner populace or the need to create basic considering, critical thinking, and basic leadership abilities, yet rather guides learners to accept a non-considering and data getting part. It is a to a great extent practical technique which concentrates on aptitudes and territory of information in segregation.

The Applicability of Modern Teaching/ Learning Methods In Research:

The terms Citation Analysis, Scientromatics and Bibliometric are used as synonyms while presenting studious and structural information about a subject or while presenting the information in a scientific method at the end of the doctoral dissertation, where the researcher takes a support of the previous author and his or her articles. The author gives a literature list of literature used during his research.

Citation Analysis- Redefined:

"Citation Analysis" deals with the study of relationship of the citing and cited contributors, authors and journals/articles/published works etc. Citation is the best available indicator of the use of a publication. The term citation refers to the full bibliographic



description of a referred material, which is used or is relevant to a particular research work. A systematic study of citation in a discipline provides a criterion for measuring the degree of interaction among researchers

Six Reasons that lay the importance on Citations:

1. Attribution serves as a fact-checking tool:

Accuracy is all important in any writing, especially when we write about science.

2. Citation makes the person a better researcher:

The proper attribution of sources entails many details, such as correct page numbers, the spelling of author names and of course, the accuracy of facts that you are presenting in your own article or other work. Becoming detail-oriented in one aspect automatically instills good habits across the board in your research.

3. Good citation practices make the researcher a better writer:

All of us aspire towards that elegant paper in which the prose is as compelling as the content and good attribution habits build a strong foundation towards that goal.

A good bibliography shows off one's scientific knowledge:

The way the researcher cites his works, and adds the bibliographic referencing method followed by him reflects the way the researcher has carried out his study

5. The credibility of the researcher is established by the way the citations reflect in his works.

The previous works done in the subject as part of the research will help any researcher to carry on the furtherance of the study.

Verification of Previous Studies:

The trends now have changed where the verification of the conducted by previous researchers is to be conducted.

Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded-

Swami Ramanand Teerth Marathwada

College was set up at Nanded by bifurcating the Marathwada College, Aurangabad on seventeenth September 1994, the day on which in 1948 Hyderabad State was freed from manage of the Nizam. Nanded is a locate base camp and in addition a sacred city arranged on the banks of Godavari Waterway in southeastern piece of Maharashtra State

Proposal (PhD)

The doctoral expositions, which are result of research action, frame an imperative wellspring of data. Examination of paper and proposal reference records one approach used to quantify library use by research researchers who are generally regular and substantial library client. Expositions might be "significant street signs to the writing of a teach

Thesis Defined:

Sengupta (1991) has defined thesis as "A thesis is a statement of investigations of research presenting the authors findings and any conclusions in support of his candidate for a Ph.D. degree in Science." In the present study term thesis is confined for which Swami Ramanand Teerth Marathwada University, Nanded awarded Ph.D. in science. Anne's Encyclopedia Dictionary of Library and Information Science 2006 defined thesis as, "often refers to the treatise written by candidate for the degree as distinct from doctoral dissertation".

SIGNIFICANCE OF THE STUDY

If we look at this research of the point of view of the perspective of its research values It is found that the reading material in Botany as not yet been analyzed. Therefore in the concerned subject the readers are not exposed with the proper reading material such as books, periodicals. The reading material which frequently used and used of and again can get an easy access. This kind of information is not available and therefore this study aimed at providing convincing information in this regard. This will definitely solve the difficulty that is mentioned above.



SIGNIFICANCE OF RESEARCH

The reading material which has been frequently used off and again can get an easy access. The readings are well understood by the literature. It will also help the libraries the purchase reading material. This kind of information is not available and therefore this study is aimed at providing convenient as well as convincing information in this regard. This will definitely solve the difficulty as mentioned above

STATEMENT OF THE PROBLEM

A CITATION ANALYSIS STUDY OF DOCTORAL DISSERTATIONS IN BOTANY SUBMITTED TO THE SWAMI RAMANAND TEERTH MARATHWADA UNIVERSITY, NANDED.

OBJECTIVES

1. To identify the distribution of citations by format.
2. To study the authorship pattern and the chronological distribution of the citations
3. To study the geographical as well as language distribution of the citations. By ranking the citations, identification of leading Journals and ranking of the publishers
4. To measure the half-life of Journals and books used by the research scholars in their study

FINDINGS & CONCLUSIONS

1. The most effortless system to utilize is a reference check
2. This measure enables one to think about the "effect" of diaries which distribute diverse quantities of articles
3. In this way in co-reference prior archives wind up plainly connected on the grounds that they are later referred to together; in bibliographic coupling later reports end up noticeably connected on the grounds that they refer to the same prior records.

REFERENCES

- 1] Alessiazaminyost, (2004). Digital reference: what the past has taught us and what the future will hold. Library philosophy and practice, 7, (1)

- [2] Alireza Jalilifar & Razieh Dabb, (2012). Citation in Applied Linguistics: Analysis of Introduction sections of Iranian master's Theses. Linguistik online Vol 57 7 p 91-93.
- [3] Bauer, K. and Bakkalbasi, N. (2005). An examination of citation counts in a new scholarly communication environment. D-Lib Magazine, 11(9)
- [4] Baxter G.J & Connolly T.M. (2014) "Implementing Applications and tools associated with in organisations: feasibility of a systematic approach", The Learning Organization, 21 (1), pp 6 -
- [5] Chan, Kamc., et al (2009). Ranking accounting journals using dissertation citation analysis: a research note. Accounting organizations and society, 34, 875-885.
- [6] Chandler Helen E., and Roper Vincent de P., (1991). Citation indexing: uses and limitations. The Indexer, Vol. 17
- [7] Chikate, R.V., & Patil, S. K., (2008). Citation Analysis of Theses in Library and Information science submitted to University of Pune: A pilot study Library philosophy and practice.
- [8] Frandsen, T. F. (2005). A bibliometric analysis of economics journals. Journal of Documentation, 61(3), 385-401.
- [9] Fritch J.W. (2003) "Heuristics, tools, and systems for evaluating Internet information: helping users assess a tangled Web", Online Information Review, 27(5), pp.321 - 327.

□□□

PRINCIPAL

Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukambad To. Nashik Dist. Nanded



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY HALFYEARLY RESEARCH JOURNAL

IDEAL

VOLUME - V

ISSUE - II

MARCH-AUGUST - 2017

AURANGABAD

IMPACT FACTOR
2016
4.08
Impact Factor (www.sjifactor.com)

2017-11-11

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed Dist. Nanded

CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
४	खान्देशातील हेमाडपंथी मंदिरांचे पर्यटनातील स्थान प्रज्ञांत किशन पाटील प्रा. डॉ. सुनिल चंद्रकांत अप्तकर	१०-१३
५	अजिंठा लेण्यातील भित्तिचित्रे ही तत्कालीन समाज-जीवनाना अरसा आहेत : सामाजिक आणि सांस्कृतिक विश्लेषण सौ. राधिका सुधीर टिपरे	१४-१८
६	भारत-जपान नागरी अणुकरार : एक दृष्टिक्षेप प्रमोद भगवानराव जाधव	१९-२०
७	बहुजन उध्दारक : डॉ.बाबासाहेब आंबेडकर प्रा. डॉ. संजय शिंदे	२१-२५
८	मोडेन पण वाकणार नाही प्रा. डॉ. स्मिता साहेबराव शिंदे	२६-३१
९	बुद्धाचे समतोल समाज निर्मितीमध्ये योगदान... प्रा. हर्षवर्धन भाऊराव इंगळे	३२-३४
१०	'मराठवाडी' कविता डॉ. ललित अधाने	३५-४०
११	आदिवासी जमातीचे वर्गीकरण प्रा.डॉ.गोवर्धन बजरंग लांब	४१-४३
१२	भारतीय स्त्रीयांचे मध्ययुगीन व आधुनिक काळातील योगदान त्रिवेणी दादासाहेब सातदिवे	४४-४७
१३	भारतातील दारिद्र्य : एक आक्यान गायकवाड राम शाहू	४८-५०
१४	महात्मा फुले आणि विविध धर्म परंपरा प्रा. दुनघव ए. डी.	५१-५६
१५	साक्षर विकास आणि पर्यावरण व भौगोलिक शिक्षण प्रा. नारायण पांचाळ	५७-६१

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist.Nanded



15

शाश्वत विकास आणि पर्यावरण व भौगोलिक शिक्षण

प्रा. नारायण पांचाळ

सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुकामबाद, त्रि. नांदेड.

प्रस्तावना

आजच्या धकाधकांच्या जीवनात मानवाला निर्गनरुद्ध्या समस्यांना तोंड द्यावे लागत आहे. पर्यावरणाची समस्या सर्वांत उग्र रूप धारण करून समोर उभी ठाकली आहे. पर्यावरणाची समस्या निर्माण करणारे इतर कृगो नसून आपण मानवच आहोत. या समस्येत विविध घटकांचा समावेश होतो जसे प्रदूषण, वृक्षतोड, उर्जा संकट, नैसर्गिक साधन संपत्तीची कमतरता इत्यादी या समस्येबाबत असे ही म्हणता येईल की,

"कशास भाषा व्यर्थ बोलता
एक विसाव्या शतकाची
एक विसावाही न दिसावा
व्यथा आमुच्या शतकाची"

पर्यावरणाच्या या समस्येमुळे जगभरातील संपत्तीचा जर नाश झाला तर भविष्यातील मानवाला जीवन जगणे कठीण होईल म्हणून शाश्वत गोष्टींचा ध्यास घरावा लागेल. शाश्वतेकडे जावे लागेल. चिरकाल टिकणाऱ्या गोष्टींचा प्रामुख्याने विचार करावा लागेल. त्यासाठी शाश्वत गोष्टींची गरज आहे.

शाश्वत विकास

शाश्वत किंवा निरंतर विकासाच्या व्याख्या पुढीलप्रमाणे वेगवेगळ्या व्यक्तींनी व संस्थांनी केलेल्या आहेत. "भविष्यकाळातील पिढ्यांच्या गरजा भागविताना अडचणी वेळ नयेत या दृष्टीने सध्याच्या पिढ्यांच्या गरजा भागवणे म्हणजे शाश्वत विकास होय." "Sustainable development is development that meets the needs of the present generation without compromising the ability of future generation to meet their own needs."

"शाश्वत विकास म्हणजे असा विकास की ज्यामध्ये भावी पिढींच्या आपल्या गरजा भागवण्याच्या क्षमता आबाधित राखून उद्याची पिढी आपल्या गरजा भागवेल."

याचा अर्थ असा की, भावी पिढीलाही आपले जीवन चांगल्या प्रकारे जगता आले पाहिजे. त्याच्या मार्गात कोणत्याही अडचणी येता कामा नयेत. शिवाय उद्याच्या पिढीलाही आपल्या सर्व गरजा व्यवस्थित भागविताना आल्या पाहिजेत.

दूनोने २००५ ते २०१५ हे दशक शाश्वत / चिरंतन विकासासाठी शिक्षण, असे जाहीर केले आहे. "The core idea of sustainability is the concept that current decisions should not impair the prospectus for maintaining or improving future living standards."

- Robert Repetto

घरातल्या व्याख्यांवरून असे म्हणता येईल की, शाश्वत विकास साधतांना मानवाचा पर्यावरणावर अजिबात परिणाम होणार नाही असे नाही. मानवाचे अस्तित्व आहे तापर्यंत त्याच्या पर्यावरणात परिणाम होतच राहणार त्याचप्रमाणे आपण पर्यावरणाचा जहास होणार नाही याची दक्षता घेतली पाहिजे.

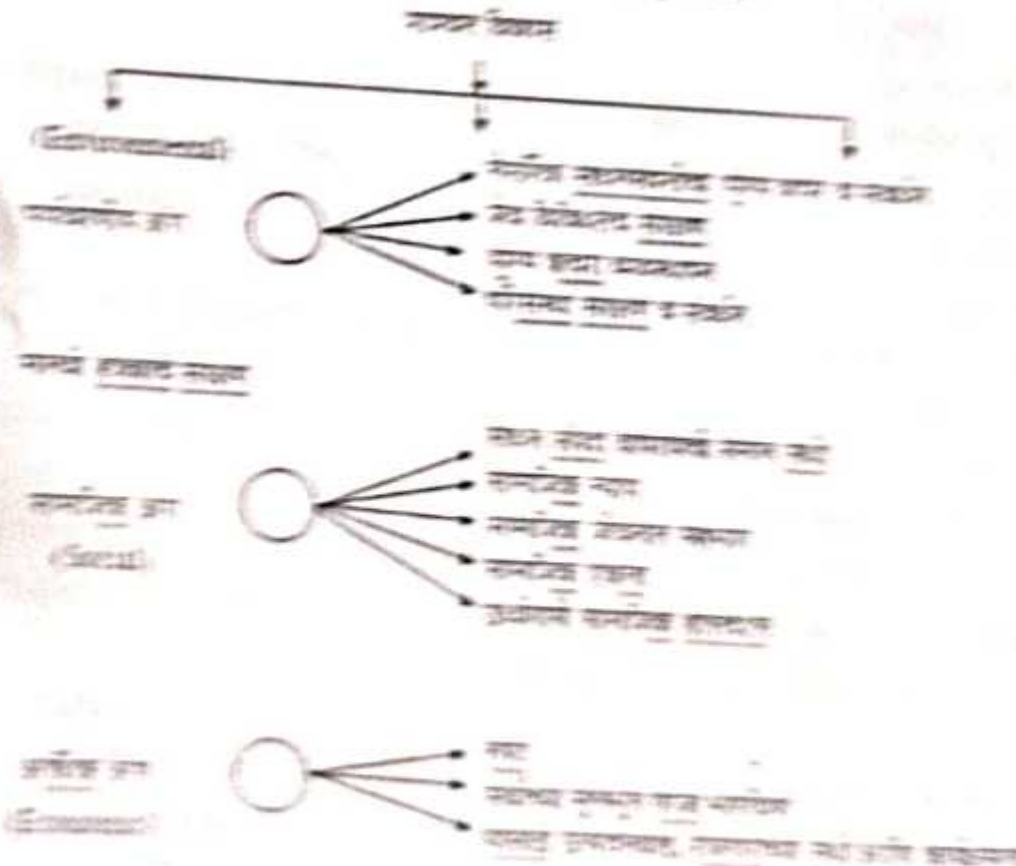
PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded

संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें संसाधन को सुरक्षित रखना है और इसे सुरक्षित रखना है।
 हमें यह सुनिश्चित करना है कि हमारे पास संसाधन हैं और हमें सुरक्षित रखना है।
 संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है और हमें सुरक्षित रखना है।

संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है

- 1) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 2) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 3) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 4) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 5) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 6) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 7) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 8) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 9) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
- 10) संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है

संसाधन विकास का अर्थ है कि हमें सुरक्षित रखना है
 (Dimensions of sustainable Development)



भौतिक शिक्षासाठी शिक्षणाची गरज

शिक्षण हे सर्वांसाठी उपयुक्त असले पाहिजे. त्याने सर्वांच्या सर्वांगीय विकासासाठी मदत केली पाहिजे. शिक्षणाने एका पिढीची गरज बाबत दुसऱ्या पिढीकडे पोहचवायला मदत केली पाहिजे. देशाच्या विकासात हातभार लावला पाहिजे. शिक्षणातून समाज बांधणी व समाज विकसित झाला पाहिजे. आज बांधूच्या लोकांकडे पाहण्याची छोळम दृष्टी शिक्षणातून आली पाहिजे. धुनकळातून बरेच घेऊन, भौतिकवादाचे घेणे वांछनीय समूह करणाऱ्यांची क्षमता शिक्षणाने निर्माण केली पाहिजे. एका दिने मगने प्रमाणे "एका वर्षाची तज्ज्ञ करणाऱ्याची अमेत तर दहा वर्षांची तज्ज्ञ करणाऱ्याची अमेत तर झाले लाबा. पण विद्याभू-विद्यार्थ्यांच्या सुखसमृद्धीची तज्ज्ञ करणाऱ्याची अमेत तर शिक्षण हा."

राज्यत शिक्षणात पर्यावरणाचाही समावेश करणावा आला आहे. या शिक्षणातून पर्यावरणाचा प्रालेख्य करणाऱ्यांच्या कल्पना विद्यार्थ्यांना घाबऱ्याची आहे. पर्यावरणाचे संतुलन हासल्यामुळे पर्यावरणाचा जलम मोठ्या प्रमाणात झाल्यामुळे मानवाचे अस्तित्व धोक्यात आले आहे. नैसर्गिक साधन संपत्तीचा मोठ्या प्रमाणात वापर केल्यामुळे अनेक पर्यावरणाचे समस्या निर्माण झाल्या आहेत. त्या समस्यांची योग्य विद्यार्थ्यांना करून देऊन त्यांना पर्यावरणाचे रक्षक बनविणे आवश्यक आहे.

लोकसंख्येचा स्फोट हे एक पर्यावरणाचा कत्ताचे प्रमुख कारण आहे. हे विद्यार्थ्यांच्या लक्षात आणून देणे गरजेचे आहे. भावी पिढीचा सर्व गरजा पूर्ण करणाऱ्याची क्षमता नित्यांत आहे. परंतु नित्यांचा वापर विचारपूर्वक व अत्यांत काटकाळीने करणाऱ्याची गरज आहे. हे हे विद्यार्थ्यांच्या घ्यातात आणून देणे आवश्यक आहे.

पर्यावरणाचा जलस मानवी जीवन

मानव आपल्या मूलभूत गरजा भगवित्यासाठी पर्यावरणातील घटकांचा वापर करतो. या गरजांमध्ये अन्न, वस्त्र, निवास या पर्यावरणातील घटकांचा वापर करूनच पूर्ण केल्या जातो. उदा. अन्नाची गरज भगवित्यांना मनुष्य शंती करतो. वस्त्र, निवास या गरजादेखील बांधून पूर्ण होतात. पूर्वी शंती ही पारंपरिक पद्धतीने केली जायची. मानवाच्या गरजा ह्या मर्यादित होत्या. परंतु कत-कत विज्ञानात प्रगती होत गेली. तत-तशी मानवाच्या गरजाही वाढू लागल्या. वैद्यक शास्त्रामध्ये निर्मित झाले शोध, विविध रंगांकरीत औषधे यामुळे एकूणच लोकसंख्येमध्ये भर भरतो व आज आपण लोकसंख्याचा विस्फोट झालेला पाहतो. ही वाढणारी लोकसंख्या व ह्या वाढत्या लोकसंख्येच्या गरजा भगवित्यासाठी पर्यावरणाचा जास्तोत जास्त वापर होऊ लागला.

आज आपण पाहतो की, प्रदूषणाची समस्या ही संपूर्ण जगात भेडसावत आहे. त्यामध्ये भू-प्रदूषण, जल प्रदूषण, हवा प्रदूषण, ध्वनी प्रदूषण एकूणच काय तर आपल्या पर्यावरणाचा जलस होताना दिसतो आहे. पर्यावरणाचे संरक्षण हे झालेच पाहिजे तरच मानवाचे अस्तित्व टिकू शकेल. संत गाडगेबाबा यांनी लोकांना स्वतःच्या कृतीतून गाव स्वच्छ ठेवण्यासाठी आदर्श घालून दिला. त्यावेळेचे विचार परत एकदा लोकांसमोर पोहचविण्याची गरज निर्माण झाली आहे. पर्यावरण संरक्षण ही केवळ मानवाची जबाबदारी नाही तर ते एक कर्तव्य आहे. पर्यावरण नष्ट तर मानवी जीवन नष्ट हे लक्षात ठेऊन पर्यावरणातील घटकांचा योग्य तो निव्विचय झाला पाहिजे.

पर्यावरण बचाव व शाश्वत विकास

मानवाचे अस्तित्व टिकून राहण्यासाठी जीवन अधिक सुखकर होण्यासाठी किंवा विकासासाठी आवश्यक गरजांची पूर्तता शून्य-शून्य सामग्रीच्या वापरातून होते ती संपत्ती म्हणजे साधनसंपत्ती होय. पर्यावरण म्हणजे सभोवतालची परिस्थिती होय की, ज्यामध्ये नैसर्गिक आणि मानवनिर्मित अशा अनेक घटकांचा समावेश झालेला असतो. पर्यावरण शिक्षण हे काही विशिष्ट समस्यांवर केंद्रित झालेले असले उदा. मुळावे



१४) पर्यावरण विषयक बातम्यांचे संकलन करणे.

समारोप

या सर्व गोष्टींचा विचार करु शाश्वत विकास साधता येईल व त्यातून भौगोलिक परिसरात मानव कल्याण साधता येईल. मानवाने नैसर्गिक साधन संपत्तीच्या सततच्या वाढीसाठी चिरंतन विकासामाठी जैविक व अजैविक संतुलनातील संतुलन राखून विकास साधला पाहिजे.

संदर्भग्रंथ सूची

- १) डॉ. के. म. भांडारकर - पर्यावरण शिक्षण, नित्यनूतन प्रकाशन, पुणे, जानेवारी २००६.
- २) प्रा. शिल्पा कुलकर्णी - पर्यावरण आणि समाज, डायमंड प्रकाशन, पुणे, ऑगस्ट २००८.
- ३) पर्यावरण शिक्षण - डॉ. हेमलता पाररत्निस व जयश्री बहुलोकर.
- ४) डॉ. किशोर चव्हाण व प्रा. शोभा आहरे - पर्यावरण शिक्षण, सनसाईट पब्लिकेशन, नाशिक, २०१२.
- ५) प्रा. दिलीप कुलकर्णी - पर्यावरण शिक्षण.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukherabad To Mukhed, Dist. Nanded



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VI ISSUE - IV OCTOBER - DECEMBER - 2017

AURANGABAD

IMPACT FACTOR/INDEXING
2016 - 4.205
www.sjifactor.com

1122101 11-11-17

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +



Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



CONTENTS

Sr. No.	Name & Author	Pages
२४	करंदीकरांच्या काव्यातील भावसंवादी प्रभाव प्रा. डॉ. सुनंदा चरहे - दुवे	८८-९१
२५	निरसीम या काव्यमंग्रहातील आशयाचे स्वरूप: एक शोध डॉ. बालाजी नागटिळक	९२-९६
२६	भौगोलिक पर्यावरण संरक्षण - एक सामाजिक जबाबदारी प्रा. नारायण पांचाळ	९७-१००
१	पृथ्वीराज रासो की ऐतिहासिकता एवं प्रामाणिकता डॉ. कल्पना वर्मा	१-३
२	भारत में महिला सशक्तिकरण में शिक्षा की भूमिका : एक यथार्थ अवलोकन सुरेन्द्र प्रताप	४-८
३	समकालीन हिन्दी दलित कहानियों में सामाजिक यथार्थ विवेक जगन्नाथ पाखरे	९-१०
४	मुक्तिबोध का काव्य और मूल्य चेतना डॉ. शेखर घुंगरवार	११-१४
५	महाराष्ट्र तथा महाराष्ट्रेतर महनुभावी संतो की हिंदी को देन प्रा. डॉ. गुरुदत्त जी. राजपूत	१५-१७

'अजिंठा' या त्रैमासिकात प्रसिध्द झालेली मते मुख्य संपादक, संपादक मंडळ व सल्लागार मंडळस मान्य असतीलच असे नाही. या नियतकालिकात प्रसिध्द करण्यात आलेली लेखकांची मते ही त्यांची वैयक्तिक मते आहेत. तसेच शोधनिबंधांची जबाबदारी स्वतः लेखकावर राहिल. हे नियतकालिक मालक, मुद्रक, प्रकाशक विनय शंकरराव हातोले यांनी अजिंठा कॉम्प्युटर अण्ड प्रिंटर्स, जयसिंगपूर, विद्यापॉठ गेट, औरंगाबाद येथे मुद्रित व प्रकाशित केले.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed, Dist. Nanded

प्रा. वाराधण पांचाळ

सहायक प्राध्यापक, भूगोल विभाग, स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय, मुकामबाद, जि. नंदेड.

निसर्ग आणि मानव जीवन

निसर्ग-पृथ्वी जीवसृष्टी यांचे एकमेकांशी असलेले नाते अतुट आहे. मानवाच्या प्रगत अवस्थेच्या प्रारंभी पर्यावरणाशी अनुकूल अशी होती. परंतु झपाट्याने झालेल्या औद्योगिक, वैज्ञानिक प्रगतीमुळे, वाढत्या लोकसंख्येमुळे निसर्गाचा समतोल ढासळू लागला. त्याचा मनुष्य जीवनावर प्रत्यक्ष व अजपक्ष रूपाने परिणाम होत आहे. जमीन, पाणी वनस्पती आणि हवा हे सर्व घटक परस्परांवर अवलंबून असून मानवी जीवनाशी ह्यांचे जवळचे नाते आहे. मनुष्याला पिण्यासाठी स्वच्छ व शुद्ध पाणी हवे असते, श्वसनक्रियेसाठी शुद्ध हवा हवी असते. मानसिक शांती त्याभावी म्हणून गोंगाट, कोलाहल नको असते. परंतु दुर्भाग्याने पर्यावरण-प्रदूषण हा प्रश्न संपूर्ण जगामध्ये कमी - अधिक प्रमाणात भेदसाक्त आहे. भारतात ह्या प्रश्नाचे गंभीर स्वरूप धारण केले आहे.

मनुष्याच्या वाढत्या गरजांची पूर्ती ही नैसर्गिक साधनांच्या सहाय्यानेच प्रत्यक्ष किंवा अप्रत्यक्षरित्या होत असते. मनुष्य आपल्या गरजा आकांक्षांची पूर्ती करीत असतांना निसर्गावर त्याचा काय वाईट परिणाम होईल याचा विचार करीत नाही. मनुष्याच्या स्वायं पूर्तिचाच परिणाम म्हणजे निसर्गाचे संतुलन बिघडत आहे. शोध औद्योगिकीकरण, तांत्रिकीकरण आणि नवनवीन शोधांमुळे जंग जवळ आले आहे. मनुष्य जीवन आरामदेह बनत चालले आहे. परंतु त्याचबरोबर वाढत्या नैसर्गिक असंतुलन आणि प्रदूषणामुळे शरीर स्वास्थ्यावर विपरीत परिणाम होत आहे. कुठे ओला तर कुठे कोरडा दुष्काळ, वाळवंटी क्षेत्रांमध्ये वाढ होत आहे, श्वासोच्छ्वासासाठी शुद्ध हवा मिळणे, पिण्यास योग्य पाणी मिळणे अडचणीचे होत आहे. प्रगतीच्या शर्यतीमध्ये मनुष्य पर्यावरण व प्रदूषणाच्या धोक्याकडे जाणूनबुजून डोळे झाक करीत आहे. आर्थिक प्रगती साथ करताना पर्यावरणाची काळजी घेणे अत्यंत आवश्यक आहे. कारण निसर्ग जगला तरच मानवजात जगेल.

त्यांच्या वाढत्या मागण्यांमुळे निसर्गाचा समतोल बिघडला आहे. म्हणून ह्या घटकांचे म्हणजेच पर्यावरणाचे संरक्षण हे प्रत्येकाचे आद्य कर्तव्य आहे. यावरिता लोकसंख्या नियंत्रण आणि पर्यावरण जागृती हे महत्त्वाचे घटक आहेत. शालेय अभ्यासक्रम व उपक्रमांद्वारे विद्यार्थ्यांपर्यंत पर्यावरण प्रदूषण विषयी माहिती देणे आणि जागृती निर्माण करणे सहज शक्य आहे.

पर्यावरण - प्रदूषणाचे प्रामुख्याने चार भागात विभाजन करण्यात येते.

१) वायू प्रदूषण

स्वयंचलीत वाहनांमुळे, कारखान्यांमधून निघणाऱ्या धूरापासून, रस्त्याच्या कडेला असणारी धुळ इत्यादीमुळे हवेत कार्बन डायऑक्साईडचे प्रमाण वाढते.

२) जल प्रदूषण

याचे प्रमाण सर्वांत जास्त आहे. उद्योगधंद्यामधील अनुपयोगी पदार्थ, विषारी द्रव्य, केरकचरा, शहरातील सांडपाणी हे सर्व नदीच्या पात्रामध्ये किंवा सागरामध्ये सोडून देण्यात येते त्यामुळे सागर, नद्या, तलाव हे प्रदूषित होत आहेत.

३) भूमी प्रदूषण

दरवर्षी लाखो टन विषारी खते आणि किटकनाशके यांचा शेतीत प्रयोग होत असल्याकारणाने जमिनीची सुपिकता आणि पोषण किटक नष्ट होत आहेत. एवढेच नव्हे तर जमिनीखाली असलेले पाणी ही विषारी होत आहे. जागतिक आरोग्य संघटनेच्या अहवालानुसार दरवर्षी पाच लक्ष लोक खत आणि किटकनाशकांपासून प्रभावी होत आहेत.

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded

४) धनी प्रदूषण

धनी प्रदूषण हे मुद्रा वाढून प्रदूषण इतकेच इतिहासक आहे. नवी असलेली आवान किंवा धनी घालने गॅाट किंवा कोलाइल एक नियोजित लोकोपयोग मोठ्या प्रमाणात आवाज सहा एकत्रयस करणयवे बहिरेण वेडू शकते. धनीयक तणाव व तुटसौनता निर्माण होऊ शकते. बाळुप्रीची सधने, कमळा-वातोल धनीची, बॉयस्मोट इत्यादीमुळे धनी प्रदूषण होते. एवढेच नव्हे तर स्पाइडरग्लेकर, टी.बी., रॅडओ ह्यांचा मोठ्या प्रमाणातील आवाज मोठ्या प्रमाणात फटके फोडणे. एकेकाळी शांततेसाठी प्रसिद्ध असलेल्या धार्मिक स्वतंत्रांमध्ये देखील घंटानाद, सामूहिक आरत्या इत्यादीमुळे धनी प्रदूषण वाढण्यास हातभारच लागत आहे.

पर्यावरण शिक्षण

आजचा शिक्षीत वर्गांमज आणि प्रदूषणाबद्दल निर्माणने वैयक्तिक साधन संगतीचे संरक्षण करवे याची जागीव घुंढंमध्ये कालक्रमानुसार कळी बाळुन या संकेती शिक्षण देणे आवश्यक आहे. एवढेच नव्हे शिक्षणक्रमाचा तो भाग असावा की नेणे करुन पर्यावरणाचा प्रदूषणाचा मनुष्यजीवनवर पडणाऱ्या प्रभावांसंबंधीचे ज्ञान होईल. यामध्ये पर्यावरण घालने काय ? प्रदूषणामुळे भूतलावरील संरतीचा विनाज काय प्रकारे होत आहे ? मानवी जीवनावर येणारी संकटे, पर्यावरण संरक्षण राखणे, प्रदूषण कशाप्रकारे रोखता येईल या दृष्टीने असलेल्या कल्पना याची माहिती शिक्षणाद्वारे सर्वोपेक्षा लोकोपयोगी शक्य आहे. या करिता शिक्षकांना देखील त्यांनी शाळेत या विषयाचे अध्यापन कसे करावे याचे प्रशिक्षण देण्यात यावे.

पर्यावरण - प्रदूषणाची जगांवे शाळेत शिक्षणासमूह विद्यार्थ्यांना कळवी या दृष्टीने शाळेतलैकी कळी कार्यक्रम अभ्यासाचा एक भाग बाळुन राखिला होईल.

निसर्गाची अखंडता निर्माण करणे

लक्षण मुने आल्या आजुबाजुच्या परिसराचे, मोठ्यांच्या स्वयींचे निरोक्षण करीत असतात व तसंच आचरण हो करीत असतात. मुलांज बावो घाटे, कलाचे ही कशा प्रकारे निसर्गाचे संतुलन राखण्यास मदत करीत असतात हे समजावून सांगणे. त्यांना निसर्गाची ओंढ, कलायुती मज निसर्ग होण्याच्या दृष्टीने नैसर्गिक रम्य ठिकाणी भेट देण्यासाठी घेवून जावे. शहरांतल आणि नैसर्गिक ठिकाणी झाडांच्या बाव्यांच्या लोकोपयोगीत वातावरणाचा फलक ते स्वतः समजातील व त्यांचे रक्षण-संवर्धन करण्यास उद्युक्त होतील.

वृक्षारोपण / स्वच्छतासंबंधी जागृता

माध्यमिक, उच्च माध्यमिक स्तरावरील मुलांकडून वृक्षारोपण व त्यांचे संगोपन करुन घेण्यात यावे. झोपडपट्टींतल राखेवासांबरोबर बंधुकी बंधुन लोकांज स्वच्छतेचे महत्व सांगण्यास उद्युक्त करावे. विद्यार्थ्यांनी आपआपल्या परिसरांतल लोकांबरोबर पर्यावरण-प्रदूषणासंबंधी वटां करण्यास प्रोत्साहन द्यावे या माध्यमाने लोके जागृती निर्माण होण्यास मदत होईल.

अभ्यासक्रम विषय

उच्चस्तरीय शिक्षणामध्ये विभिन्न विषयांबरोबरच पर्यावरण प्रदूषणासंबंधी माहिती देणारा एक स्वतंत्र विषयच असावा. प्रदूषित पाण्याचे विनियोजन / विलंबेवट कशाप्रकारे करावे हेवेलील व धनी प्रदूषण कमी करण्यासाठी काय करता येणे शक्य आहे, जमिनीची धूप वांबेविषयासाठी आधुनिक कृषी तंत्राचा कसा आणि कितना अंतर्भाव असावा.

व्यक्तिमत्त्व विकास कार्यक्रमाचा एक भाग

एन.सी.सी., एन.एस.एस., स्काउट गाइड या सारख्या अभ्यासंतर व्यक्तिमत्त्व विकासाची जो विभिन्न कार्ये आहेत त्यामध्ये खंड, संगीत, घटां, वृक्षारोपण, संवर्धन, वृक्षरिडो काढणे, निबंध स्पर्धा, ककूच स्पर्धा, चित्र स्पर्धा, घोष वाक्य इत्यादींच्या माध्यमाने पर्यावरण संतुलनसंबंधे व प्रदूषण निर्मिण्याचे महत्व सर्वोपेक्षा लोकोपयोगीच्या कार्यक्रमांचे आयोजन करावे.

प्रमाणित त्वाकटांचो बचत पर्यायाने कृषकडोड वाडेल वाकरीता अर्थव्यवस्थास निर्मूलनद्वारे लोकसंस्थे जागृती निर्माण करणे महत्वाचे आहे. कृषांचे पर्यावरण प्रदूषण निवृत्तनात बहुमोलवाचे करप आहे. त्यांच्यामुळेच हजेरीत प्राणवायुचे संतुलन टिकून आहे. कृषांमुळे जमीनीची धूव कमी होते, पूरनिबंध शक्य होते, फाऊस येण्यास मदत होते, जमीनीतील पाण्याची पातळी वाडते या सर्वांमुळे जमीनीची उत्पादकता वाडते, शेतकऱ्यांचा आर्थिक लाभ होय, डिक, मधमाशापालन, पत्राकडी, फागे, दोरखंड, रंग निर्मिती अशा अनेक लघु उद्योगांद्वारे रोजगार मिळणे. कृषांच्यच सहाय्याने शक्य आहे. वारसंबंधीची माहिती जनसामान्यांकरिता पोहोचण्याकरिता विद्यार्थी व शिक्षकांचा सहभाग घेताच ठरतो.

समारोप

घोडक्यात पर्यावरण-प्रदूषणावर निबंधन ठेवण्याकरिता विद्यार्थ्यांना पर्यावरण प्रदूषण निवृत्तनाचे महत्त्व घटवून देण्यात यावे, निसर्गाची प्रेमाचे नाते कसे जुळेल वाकरीता अभ्यासक्रमाचाच एक भाग म्हणून विभिन्न कार्यक्रम राबविण्यात यावेत. लोकसंस्थेमध्ये त्यांना सहभागी करून घ्यावे. पर्यावरण निवृत्तनामुळे रोजगारांमध्ये कशी निर्मिती होऊ शकते याची माहिती द्यावी. वेळोवेळी पर्यावरण प्रदूषणसंबंधी देणारी पत्रके, फ्लायर, भितीपत्रके प्रसिध्द करून समाजातील सर्व स्तरावर तो वितरीत करण्यात यावे. सामाजिक वनीकरणसंस्थेच्या लोकसंस्थेची योजनांमध्ये जास्तोत जास्त लोकसंज्ञा सहभागी करून घेण्यात यावे. निसर्गाची नाते जुळते तर पर्यावरण प्रदूषण समस्या सुटण्यास आघोषापरच मदत होते. ही जबाबदारी नवीन पिढीवर आहे याची जाणीव विद्यार्थी दशेतच करून देणे आवश्यक आहे.

संदर्भग्रंथ सूची

- १) दौड तुकाराम, पर्यावरण संवाद, वावर प्रकाशन, लातूर, २००८.
- २) कदम, एस. डी., मानव पर्यावरण आणि प्रदूषण, फडके प्रकाशन, कोल्हापूर, २००५.
- ३) सवदी, बी. एल., आपले पर्यावरण, निराली प्रकाशन, पुणे, २००७.
- ४) जाटव, बी. एल., पर्यावरण और शिक्षा, राधा पब्लिकेशन्स, नई दिल्ली, २००४.
- ५) पर्यावरण रिपोर्ट १९९९, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली.

Pamchal N-1-1.

AJANTA - VOL. - VII ISSUE - 1 ISSN 2277 - 5730 (I.F.-5.2)

JANUARY-MARCH - 2018

ISSN 2277 - 5730



AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY QUARTERLY
RESEARCH JOURNAL

AJANTA

VOLUME - VII ISSUE - I JANUARY - MARCH - 2018 AURANGABAD

Peer Reviewed Referred and UGC Listed Journal



IMPACT FACTOR / INDEXING
2017 - 5.2
www.sjifactor.com

01121201 201-1100

+ EDITOR +

Assit. Prof. Vinay Shankarrao Hatole

M.Sc (Math's), M.B.A. (Mkt), M.B.A (H.R),
M.Drama (Acting), M.Drama (Prod & Dir), M.Ed.

+ PUBLISHED BY +

Ajanta Prakashan
Aurangabad. (M.S.)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhed. Dist. Nanded



1
2
3
4
...			
5
6
7
8
9
10
11
12

हंगामावर (उदा: गव्हाचा हंगाम) वातावरण बदलाचा खरोप हंगामापेक्षा अधिक परिणाम जाणवतो. यामुळे रब्बी हंगामात घट झाली आहे.

भारतीय शेतीवर वातावरणातील बदलाचा परिणाम होण्यास कारणीभूत ठरणारी भारतीय शेतीची वैशिष्ट्ये पुढील प्रमाणे आहेत.

- भारतीय शेतीतील लघु भूधारक शेतकऱ्यांचे मोठे प्रमाण
- वारंवार येणारी नैसर्गिक संकटे जसे दुष्काळ व वादळे.
- पावसावर आधारीत शेतीचे मोठे प्रमाण.
- देशातील विविध भागात शेती उत्पादनातील मोठ्या प्रमाणावरील विविधता.

वातावरण बदलाचा परिणाम शेतीवर होतो व त्यामुळे अन्नधान्य उत्पादनावर त्याचा परिणाम जाणवतो. जसे अन्नधान्याचे प्रमाण, त्यांचा दर्जा त्यांच्यातील पोषण तत्त्वांचे प्रमाण हे सर्व घटक प्रभावित होतात. सध्याच्या वाढत्या लोकसंख्येच्या दरानुसार शेतीचे उत्पादन परिणामी अन्नधान्याचे उत्पन्न वाढण्याची निकडीची गरज आहे. दरवर्षी हे प्रमाणे २ बिलियन ते ४ बिलियन टन एवढे वाढायला हवे आहे, परंतु याउलट जगातील विविध देशात भारतासहीत वातावरणातील बदलामुळे कृषी उत्पन्न मोठ्या प्रमाणावर प्रभावित होत आहे. परंतु याउलट जगातील विविध देशात भारतासहीत वातावरणातील बदलामुळे कृषी उत्पन्न मोठ्या प्रमाणावर प्रभावित होत आहे. वातावरणातील बदलाचे सकारात्मक बदलांपेक्षा त्यांच्या दुष्परिणाम जे धान्य उत्पादनाला प्रभावित करतात ते अधिक दिसून येतात. वातावरण बदलाचा परिणाम अल्पभूधारक शेतकऱ्यांप्रमाणेच कृत्रिम मत्स्यशेती करणाऱ्यांवर मोठ्या प्रमाणात जाणवतो.

अलिकडील काळात शेती व अन्नधान्य उत्पादनावर होणारा वातावरण बदलाचा परिणाम या संदर्भात अनेक गोष्टीवर संशोधन केले. यामध्ये कृषी उत्पादनावर होणारा परिणाम त्याचप्रमाणे शेतीशी संबंधीत इतर उद्योग जसे पशु पालन यांवरही परिणाम होतो हे लक्षात आले. पशुपालनासाठी आवश्यक अन्नधान्याचा पुरवठा शेती उत्पादनातूनच होतो. त्यामुळे ते ही वातावरणातील बदलामुळे प्रभावित होतात.

पर्जन्यवृष्टीच्या बदललेल्या स्वरूपाचा परिणाम भारतीय शेतीक्षेत्रावर पहावयाला मिळतो. कारण भारतीय शेतीक्षेत्रावर पहावयाला मिळतो. कारण भारतीय शेतीक्षेत्र हे त्या त्या भागातील वातावरणाच्या स्थितीवर आधारीत आहे. पावसाळा काही वर्षी खुपच अधिक तर काही वर्षी खुपच कमी अथवा कोरडा झाल्याने पिकांची वाढ प्रभावित झाली. बदलत्या वातावरणाचा परिणाम म्हणजे पर्जन्याची तीव्रता वाढली व त्यामुळे पावसाचे दिवस कमी झाले. त्यामुळे दोन वापसाळ्यांतील अंतर वाढले त्यामुळे जमीनीतील आर्द्रतेचे प्रमाण घटतच जात आहे. त्यामुळे पूर्वापार चालत आलेले पिक उत्पादन प्रभावित झाले आहे. बदलत्या हवातानाच्या परिणामामुळे वनस्पती व प्राणीजीवन विस्कळीत होते.



हवामानातील बदलाचा भारतातील विविध पर्यावरणीय विभागातील शेतोवरील परिणाम

१) निम्न कोरडवाहू कृषी असणारा पर्यावरणीय विभाग

गुजरात, दख्खनचे पठार, मालवा, उत्तरेकडील सखल प्रदेश हे भारताने निम्न कोरडवाहू प्रदेश आहेत. या प्रदेशातील वातावरणात विविधता आढळते. या प्रदेशाचे वैशिष्ट्य म्हणजे येथील गरम, वाष्पदूक्त उन्हाळा आणि कोरडा उन्हाळा आणि शीतल थंड हिवाळा असतो. वादलेल्या तापमानामुळे निम्न कोरडवाहू परिसिद्धी असणारा भारताच्या पश्चिमेकडील भागात पावसाचे प्रमाण वाढले आहे तर मध्य भागात हिवाळी पावसाचे प्रमाण २०५० पर्यंत १०% ते २०% नी घसरल्याचे पहावयास मिळते. या दशकाच्या शेवटी उत्तर भारतातील तापमान ३.५०^० ते ५.० ने वाढेल. कृषी हवामान विभाग व आनंद कृषी विद्यापीठ यांच्या अहवालानुसार वाढलेले तापमान व कार्बनडाय ऑक्साईडचे प्रमाण यामुळे या भागातील गहू व मका यांच्या उत्पादनावर परिणाम होण्यास यापूर्वीच सुरुवात झाली आहे. त्याचप्रमाणे हे विभाग पाण्याच्या कमतरतेमुळेही प्रभावित होते आहेत. त्यामुळे शेतोवर परिणाम होत आहे. डोंगराळ भागातील काही विभाग जसे बुंदेलखंडातील शेतो सिंचनावर आधारीत आहे. जेथे ऊस व भात विकवला जातो हाही भाग यामुळे प्रभावित झाला आहे.

वातावरणातील बदलामुळे घडणारा दुसरा परिणाम म्हणजे, वादळ वान्याचे वाढते प्रमाण व त्यांचा वाढलेला तीव्रता ज्यामुळे की, शेतोचे मोठ्या प्रमाणावर नुकसान होते. लोकसंख्येची घनता अधिक असणाऱ्या व हवामान बदलत राहणाऱ्या भागासाठी ही समस्या अधिक भयावह ठरू शकते.

२) कोरडवाहू शेतो असणारा पर्यावरणीय विभाग

वाळवंटी प्रदेशातील जीवन वाढत्या तापमानामुळे अधिकच भयावह होते. वाळवंटी प्रदेशात होणारा जोरदार पाऊस व येणारा पूर ही गोष्ट अधिकच वाईट ठरते. कारण पाणी स्वतःसोबत वाळू मधील क्षार वाहून आणते. त्यामुळे पाण्यातील क्षारांचे प्रमाण वाढल्याने स्वच्छ पाणी शेतोला मिळण्याची समस्या अधिक गंभीर होते. याचे प्रत्यंतर २०००६ मध्ये घर वाळवंटात आलेल्या पुरपस्थितीत आपणाला पहायला मिळते. या पुरामुळे बारमर जिल्ह्यात निर्माण झाली. ज्यामुळे शेतोस अनुकूल पर्यावरणावर खूप वाईट परिणाम झाला.

हवामानातील बदलाचा भारतातील पर्जन्यवृष्टीवरील परिणाम

कार्बनडाय ऑक्साईडच्या वाढीमुळे आज भारतामध्ये पर्जन्यवृष्टी अनियमित स्वरूपात होत असलेली दिसते. कधी अत्याधिक पाऊस तर कधी अत्यल्प पावसामुळे भारतातील शेतकरी प्रभावित होत असलेला दिसतो. (तक्ता क्र. १)

१९८९ ते २०१३ या कालावधीतील नैऋत्य मोसमी पावसाची कामगिरी (१ जून - ३० सप्टेंबर)

तक्ता क्र. १

वर्ष	हवामानशास्त्रीय उपविभागांची संख्या जिथे अत्याधिक / साधारण पाऊस झाला	अपूर्ण व अत्यल्प पाऊस पडलेल्या विभागांची संख्या	साधारण अत्याधिक पडणाऱ्या टक्केवारी	अथवा पाऊस जिल्हांची	संपूर्ण भारतात प्रत्यक्ष पावसाची साधारण असाणी टक्केवारी
१९९०	३२	३	८८		११९
१९९१	२७	८	६८		९१

२००१	३०	५	६८	९२
२०१०	३१	५	६९	१०२
२०११	३३	३	७६	१०१
२०१२	२३	१३	५८	९२
२०१३	३०	६	८२	१०६

स्रोत : Directorate of Economics and statistics, Department of Agriculture and Cooperation.

भारतात २००१ पर्यंत हवामानशास्त्रीय उप-विभागांची संख्या ३५ होती. ती काढून २००२ पासून ३६ झाली. वरील तक्त्यात १९९० मध्ये ३५ हवामानशास्त्रीय उप-विभागांपैकी ३२ उप-विभाग अत्याधिक (दीर्घकालीन सरासरी पर्जन्यवृष्टीच्या +१९% आणि -१९% च्या दरम्यान) पाऊस झाला होता. अशा प्रकारच्या विभागांची संख्या २००१ मध्ये ३० होती. ती २०१२ व २०१३ सा अनुक्रमे २३ व ३० होती. एकूण विभागांपैकी १९९१ मध्ये ८ विभागात अतृण (दीर्घकालीन सरासरी पर्जन्यवृष्टीच्या +२०% आणि -५९% च्या दरम्यान) वा अल्प (दीर्घकालीन सरासरी पर्जन्यवृष्टीच्या +६.०% आणि -९९% च्या दरम्यान) पर्जन्यवृष्टी झाली होती. ती संख्या २०१२ व २०१३ सा अनुक्रमे १३ व ६ अशी होती.

हवामानातील बदलामुळे भारतीय पिकांनिहाय झालेले परिणाम व नुकसान

सध्याच्या काळात भारतीय शेती व्यवसाय बदलत्या हवामानाशी जुळवून घेण्यासाठी झगडत आहे. कातावरणातील बदलामुळे होणारे नुकसान टाळण्यासाठी प्रभावी यंत्रणा निर्माण करण्याची गरज आज भासत आहे. भारतीय शेती संशोधन संस्थेने (ICAR) विविध पिकांवरील परिणामांचा अभ्यास करण्यास सुरुवात केली असून त्याचे विस्तारून पुढील प्रमाणे आहे.

तृणधान्य

आशियात व पॉसिफिक महासागराच्या भागातील प्रदेशात सध्या तृणधान्य उत्पादनाची मोठी समस्या निर्माण झाली आहे. गहू, तांदूळ व मका या धान्याचे उत्पादन २०५० पर्यंत अनुक्रमे ५०%, १७%, ६% नी घटलेले पहावयास मिळेल. ज्यामुळे १.६ बिलियन लोकांच्या अन्नसुरसेचा प्रश्न दक्षिण आशियाची देशात निर्माण होईल. भविष्यातील ०.५०^० ते १.२०^० तापमानातील वाढ तृणधान्य उत्पादनाकरीता गंभीर समस्या बनवेल.

गहू

भारत हा जगातील दुसऱ्या क्रमांकाचा गहू उत्पादक देश असून गव्हाची राष्ट्रीय उत्पादकता प्रति हेक्टर २७०८ एवढी आहे. उत्तर भारतातील उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तरांचल आणि हिमाचल प्रदेश ही काही मुख्य गहू उत्पादक राज्य आहेत. या राज्यांमध्ये १०^० वाढलेले तापमानही गहू उत्पादनावर मोठा परिणाम करणार आहे. हरियाणा राज्यामध्ये सन २००३-०४ दरम्यान रात्रीचे तापमान पूर्वीच्या तापमानापेक्षा ३०^० ने वाढल्याचा परिणाम असा झाला की, गव्हाचे उत्पादन प्रति हेक्टर ४११०६ किलो वरून प्रति हेक्टर ३९३७ किलो एवढे झाले.

संपूर्ण देशाचा विचार करता १०^० वाढीव तापमान ६ मिमीयन टन गव्हाच्या उत्पादनावर परिणाम करते याच बरोबर लक्षात घ्यावी अशी गोष्ट म्हणजे बदलत्या तापमानाशी जुळवून घेण्यासाठी जर पेरणीच्या तारखा बदलणे व विविध जातींच्या

२००१	३०	५	६८	९२
२०१०	३१	५	६९	१०२
२०११	३३	३	७६	१०१
२०१२	२३	१३	५८	९२
२०१३	३०	६	८२	१०६

स्रोत : Directorate of Economics and statistics, Department of Agriculture and Cooperation.

भारतात २००१ पर्यंत हवामानशास्त्रीय उप-विभागांची संख्या ३५ होती. ती वाढून २००२ पासून ३६ झाली. वरील तक्त्यात १९९० मध्ये ३५ हवामानशास्त्रीय उपविभागांपैकी ३२ उपविभाग अत्याधिक (दीर्घकालीन सरासरी पर्जन्यवृष्टीच्या +१९% आणि -१९% च्या दरम्यान) पाऊस झाला होता. अशा प्रकारच्या विभागांची संख्या २००१ मध्ये ३० होती. ती २०१२ व २०१३ ला अनुक्रमे २३ व ३० होती. एकूण विभागांपैकी १९९१ मध्ये ८ विभागात अपूर्ण (दीर्घकालीन सरासरी पर्जन्यवृष्टीच्या +२०% आणि -५९% च्या दरम्यान) चा अत्यल्प (दीर्घकालीन सरासरी पर्जन्यवृष्टीच्या +६०% आणि -९९% च्या दरम्यान) पर्जन्यवृष्टी झाली होती. ती संख्या २०१२ व २०१३ ला अनुक्रमे १३ व ६ अशी होती.

हवामानातील बदलामुळे भारतीय पिकनिहाय झालेले परिणाम व नुकसान

सध्याच्या काळात भारतीय शेती व्यवसाय बदलत्या हवामानाशी जवळून घेण्यासाठी झगडत आहे. वातावरणातील बदलामुळे होणारे नुकसान टाळण्यासाठी प्रभावी यंत्रणा निर्माण करण्याची गरज आज भासत आहे. भारतीय शेती संशोधन संस्थेने (ICAR) विविध पिकांवरील परिणामांचा अभ्यास करण्यास सुरुवात केली असून त्याचे विश्लेषण पुढील प्रमाणे आहे.

तृणधान्य

आशियात व पॅसिफिक महासागराच्या भागातील प्रदेशात सध्या तृणधान्य उत्पादनाची मोठी समस्या निर्माण झाली आहे. गहू, तांदूळ व मका या धान्याचे उत्पादन २०५० पर्यंत अनुक्रमे ५०%, १७%, ६% नी घटलेले पहावयास मिळेल. ज्यामुळे १.६ बिलियन लोकांच्या अन्नसुरक्षेचा प्रश्न दक्षिण आशियायी देशात निर्माण होईल. भविष्यातील ०.५०^० ते १.२०^० तापमानातील वाढ तृणधान्य उत्पादनाकरीता गंभीर समस्या बनवेल.

गहू

भारत हा जगातील दुसऱ्या क्रमांकाचा गहू उत्पादक देश असून गव्हाची राष्ट्रीय उत्पादकता प्रति हेक्टर २७०८ एवढी आहे. उत्तर भारतातील उत्तर प्रदेश, पंजाब, हरियाणा, उत्तरांचल आणि हिमाचल प्रदेश ही काही मुख्य गहू उत्पादक राज्य आहेत. या राज्यांमध्ये १०^० वाढलेले तापमानही गहू उत्पादनावर मोठा परिणाम करणार आहे. हरियाणा राज्यामध्ये सन २००३-०४ दरम्यान रात्रीचे तापमान पूर्वीच्या तापमानापेक्षा ३०^० ने वाढल्याचा परिणाम असा झाला की, गव्हाचे उत्पादन प्रति हेक्टर ४११०६ किलो वरून प्रति हेक्टर ३९३७ किलो एवढे झाले.

संपूर्ण देशाचा विचार करता १०^० वाढीव तापमान ६ मिनीयन टन गव्हाच्या उत्पादनावर परिणाम करते याच बरोबर लक्षात घ्यावी अशी गोष्ट म्हणजे बदलत्या तापमानाशी जुळवून घेण्यासाठी जर पेरणीच्या तारखा बदलणे व विविध जातीच्या

जाणारे मका उत्पादन. जे वेळूळ तापमानामुळेच प्रभावित होते पावसामुळे नाही कारण हे पिक ज्या क्षेत्रात घेतले जाते तेथे सिंचनाची सोय आहे. येथे 3.70° पर्यंतचे वाढीव तापमान पिक उत्पादनास प्रभावित करू शकत नाही. मान्यून ऋतू दरम्यान घेतले जाणारे मकाचे उत्पादन दरवर्षीच्या पठारावर 3.1% पर्यंत घटलेले दिसून येते.

भाजीपाला

बऱ्याचशा भाज्या व बदलत्या वातावरणाची स्थिती, जसे वाढते तापमान व जमीनीची आर्द्रता कमी होणे यामुळे प्रभावित होतात. ज्यामुळे त्यांचे उत्पादन घटते परंतु संशोधनाद्वारे हे ही सिद्ध झाले आहे की, कार्बनडाय ऑक्साईडचे उच्च प्रमाण वाढीव तापमानास संतुलित करते व पालेभाज्यांचे उत्पादन प्रकारासंश्लेषणाचा वेग वाढल्याने वाढते. काही पालेभाज्या ज्या कार्बनडाय ऑक्साईडच्या जास्त प्रमाणात असणाऱ्या वातावरणातही वाढू शकतात. त्यांचे उत्पादन मात्र या वाढलेल्या तापमान जवळपास 1% नी वाढते. कारण त्यांचा प्रकारासंश्लेषणाचा वेग वाढल्याने त्यांची पाने अधिक लांब रुंद होतात व त्यांच्या बियांची संख्याही वाढते.

कांदा

वाढलेले कार्बनडाय ऑक्साईडचे प्रमाण (450ppm) कांदा पिकामध्ये त्यांच्या पानांची उंची वाढविणे व त्यांचे कंद मोठे करणे यासाठी उपयुक्त ठरते. याचा परिणाम म्हणजे साधारण स्थितीतील कार्बनडाय ऑक्साईडच्या मानपेक्षा वाढलेल्या CO_2 च्या वातावरणात कांद्याचा व्यास हा 75.02mm एवढा होतो जो की, साधारण स्थितीत 64.63mm एवढा असतो.

ब) टोमॅटो

वाढलेल्या कार्बनडाय ऑक्साईडच्या प्रमाणाचा टोमॅटोच्या उत्पादनावर सकारात्मक परिणाम दिसतो. साधारण स्थितीत जेथे प्रत्येक झाडास 56 फळे येतात तेथे या वातावरणात 74 फळे मिळतात.

फळे

अ) नारळ

नारळासारख्या वृक्षांवरही बदलत्या वातावरणाचा परिणाम जाणवतो. नारळाच्या पिकासाठी 290° पर्यंतचे तापमान हवे असते. ज्यात 70° पर्यंत चढ-उतार चालतो. त्याला 1200mm वार्षिक पावसाची गरज असते. ज्यामुळे पुरेसे उत्पादन मिळेल. संशोधनाअंती असे सिद्ध झाले आहे की, नारळाच्या उत्पादकतेत भारतातील आंध्र प्रदेश, ओडिसा, गुजरात आणि तामिळनाडूच्या किन्नारपट्टीचे प्रदेश तसेच कर्नाटक येथे वातावरणातील बदलामुळे घट झाली आहे. याउलट नारळाचे उत्पादन केरळ, महाराष्ट्र, तामिळनाडूचा व कर्नाटकाचा काही भाग या ठिकाणी 2020 , 2040 व 2060 पर्यंत अनुक्रमे 4% , 10% व 20% नी वाढेल. सर्वांत महत्त्वाचे म्हणजे नारळाची उत्पादकता पाण्याच्या उपलब्धतेवर मोठ्या प्रमाणात अवलंबून आहे जरी बाकी सर्व परिस्थितीला अनुसरून असेल.

ब) सफरचंद



राष्ट्रीय शेती संशोधन संस्थेच्या एका अहवालावरून असे स्पष्ट झाले आहे की, वातावरणातील बदलांमुळे हिमाचल प्रदेशातील सफरचंद उत्पादन घटले आहे. सफरचंदाच्या झाडांना उन्हाळ्यात कळ्या लागतात आणि हिवाळा येतो तेव्हा त्या कळ्या लहान झालेले दिवसमान व थंड हवामान यांच्याशी जुळवून घेण्यासाठी गुन अगोष्टी जातात. जेव्हा त्यांना आवश्यक तेवढेच थंड वातावरण निर्माण होईल त्यावेळी त्यांची फुले व फळे बनण्यास सुरुवात होते. जर त्यांना आवश्यक असणारे थंड वातावरण प्राप्त झाले नाही तर फुल लागण व पर्यायाने फलोत्पादन मोठ्या प्रमाणावर प्रभावित होते.

गेल्या दोन दशकात झालेल्या सर्वेक्षणानुसार असले लक्षात आहे की, हिमाचल प्रदेशातील किमान तापमान नोव्हेंबर ते एप्रिल मध्ये वाढले आहे आणि कमाल तापमान एप्रिल ते नोव्हेंबरमध्ये वाढले आहे. हिमवर्षांचे प्रमाण हिवाळ्या दरम्यान कमी झाल्याने थंडावा कमी झाला आहे. हिवाळ्यातील महिन्यात बराचसा थंडावा कमी झाल्याने बाजुरा व शिमला या हिमाचल प्रदेशातील भागात तापमान वाढले. परिणामी या राज्यातील सफरचंदाचे उत्पादन घटले व स्थूल शेती उत्पादनात घट झाली.

हवामानातील बदलाचा पिकांखालील क्षेत्रावर व गुरांवरील परिणाम

वातावरणातील बदलामुळे पुर, मोठमोठे चक्रीवादळे आणि भूस्खलन सारखी संकटे वारंवार निर्माण होऊ लागली आहेत. यामुळे लागवड केलेल्या पिकांवरती विपरीत परिणाम होत असलेला दिसतो. पुर, वादळवारे व भूस्खलन यामुळे २००१ ते २०११ या वर्षांदरम्यान झालेले शेती व पशुधनाचे प्रतिवर्षीय नुकसान

तक्ता क्र. २

वर्ष	पिकाखालील क्षेत्राचे (लाख हेक्टरमध्ये) नुकसान	गुरांचे नुकसान संख्या
२००१-०२	१८.७२	२१२६९
२००२-०३	२१.००	३७२९
२००३-०४	३१.९८	२५३९३
२००४-०५	८२.६३	१२३८९
२००५-०६	३५.५२	११०९९७
२००६-०७	७०.८७	४५५६१९
२००७-०८	८५.१३	११९२१८
२००८-०९	३५.५६	५३८३३५
२००९-१०	४७.१३	१२८४५२
२०१०-११	४६.२५	४८७७८

स्रोत : Disaster management in India २००१, Ministry of home affairs.

वरील तक्त्यावरून असे लक्षात येते की, भारतातील शेती क्षेत्राचे व पशुधनाच्या वरील नैसर्गिक संकटामुळे मोठे नुकसान झाले आहे. वर्ष २००७-०८ दरम्यान पिकाखालील ८५.१३ लाख हेक्टर एवढे प्रचंड क्षेत्र प्रभावित झाले होते. तसेच पशुधनाचे सर्वाधिक नुकसान २००९-१० या वर्षात १२८४५२ एवढे झाले आहे.

समारोप

MARATHI

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad, Mumbai, West-India



44	Social Harmony And Sports - Dattatraya Mahadeo Birajdar	
45	Physical Education And Yoga - Dr. Deelip M. Kale	
46	Depression Level Among Athlete And Non-Athlete Students: A Comparative Study - Aijaz Ahmad Shah, Dr. Jazar Singh Sulekar	162
47	Merttal Health - Mohd. Altaf Bhat, Dr. Jadhav Balaji, Ridhwan ul Ramzan Scholar	165
48	Role Of Yoga For Stress Management - Dr. Baliram D. Lad, Mr. Mahesh S. Kakde	168
49	Yoga And Stress - Dr. Mane B W	171
50	Yoga In Physical Education- Dr. Nirajkumar N. Uplanchwar	174
51	Sports With Time Management - Dr. Abhijit S. More, Dr. D. D. Bachewar	176
52	Role Of Yoga At College & University Level, The Facts Dr Nagnath Gajmal, Dr Jyotiram Chavan	180
53	Need And Importance Of Yoga During Adolescence Age - Dr. Kunturwar V. S.	182
54	Effect Of Surya-Namaskara Exercise On Body Health Fitness And Welltness - Dr. Dhondge S. R.	184
55	Approaches Towards Surya Namaskara - Ancient And Scientific Path Way In Human Life - Mr. Hemant T. Shinde, Dr. U. L. Sahu	189
56	Yoga & Stress Management - Dr. Lokare Gurudas Adinath	193
57	Techniques And Benefits Of Surya Namaskar - Dr. Anurag Sachan, Mrs. Geeta, Dr. Suresh Kumar Malik	195
58	आरोग्य संवर्धनात योगाची भूमिका : एक विश्लेषक अध्ययन- प्रा.विश्व विहान्तर देवदार	198
59	आरोग्यदायी जीवनाचे प्रभावी घटक- डॉ. जुझारलिंग निर्मललिंग लिलेंदर	204
60	समाज के स्वास्थ्य में योग की भूमिका-Dr. Phad L.H.	207
61	शरीर धारणकर परिणाम करणरे घटक-डॉ. जयभवे नारायण निवृत्ती, डॉ. केंदे लालराव एकनाथ	210
62	योगाचे महत्व-श्री मंत्राते रघुनाथ निमराव	212
63	योगा निर्मणी जीवनाची गुणवत्ता-प्रा.मुडे वता रमविशन	215
64	शारीरिक शिक्षणाचे महत्व-प्रा.डॉ.देवकते लरम शंकराव, प्रा. डॉ. देवकते लरम शंकराव	217
65	शारीरिक शिक्षण व्यायाम आणि योग -प्रा.डॉ.जयधर धनमल्लिंग गेंडलिंग	220
66	योग अभ्यास आणि ताम तणावाचे व्यवस्थापन-डॉ. कुन्वर विठ्ठल हुताबा	222
67	खेळाडू आणि मानसिक ताम- डॉ. लिकदर देसाई, यशमारे निरंजित विहान्तर	225
68	खेळात पराक्रांतिची भूमिका-प्रा.बाळमकर गोविंद बन्तारकरराव	227
69	व्यक्तीच्या मानसिक आरोग्याचा संशोधनात्मक अभ्यास -प्रा.डॉ. यशमारे सुधातल मकुल	231
70	शारीरिक, मानसिक आणि सामाजिक आरोग्याचे घटक-डॉ. एकंबकर लज्जीव देवदार	235
71	श्री.लक्ष्मणच्या विहान्तराचे प्रस्तावनात्मक भूमिका-प्रा.जोषा लरम	240

Physical Education and Yoga

Dr. Deelip M. Kale

Dept. of Phy. Edu.

Sri Sri Vivekanand College, Mulgaonahad Tal. Mulhad Dist. Nanded

Introduction :

Fitness plays a critical role in your overall health today, most of the disorders are a result of an unfit body and bad food habits. Fitness should be a key component in anybody's life simply for the fact that it makes you feel better.

Physical education trends have developed recently to incorporate a greater variety of activities besides typical sports. Introducing students to activities like bowling, walking / hiking, or frisbee at an early age can help students develop good activity habits that will continue into adulthood. Some teachers have even begun to incorporate stress-reduction techniques such as yoga, deep-breathing and tai chi. Tai chi, an ancient martial arts form focused on slow meditative movements is a relaxation activity with many benefits for students. Studies have shown that tai chi enhances muscular strength and endurance, cardiovascular endurance, and provides many other physical benefits. It also provides psychological benefits such as improving general mental health, concentration, awareness and positive mood. It can be taught to any age student with little or no equipment making it ideal for mixed ability and age classes. Tai chi

can easily be incorporated into a holistic learning body and mind unit. Teaching non-traditional sports to students may also provide the necessary motivation for students to increase their activity, and can help students learn about different cultures. For example, while teaching a unit about lacrosse in, for example, the Southwestern United States, students can also learn about the Native American cultures of the Northeastern United States and Eastern Canada, where lacrosse originated. Teaching non-traditional (or non-native) sports provides a great opportunity to integrate academic concepts from other subjects as well (social studies from the example above), which may now be required of many P.E. teachers. The four aspects of P.E. are physical, mental, social, and emotional.

Yoga is a group of physical, mental and spiritual practices or disciplines which originated in ancient India. There is a broad variety of Yoga schools, practices and goals in Hinduism, Buddhism and Jainism. Among the most well known types of yoga are Hatha yoga and Raj yoga.

Yoga is a uniquely Indian discipline of theory and practice for the realization of the ultimate truth concerning man and the world. Yoga is an integral part of all Indian



Handwritten text at the top left of the page.

Handwritten text at the top right of the page.

Second paragraph of handwritten text on the left side.

Second paragraph of handwritten text on the right side.

Third paragraph of handwritten text on the left side.

Fourth paragraph of handwritten text on the left side.

Fifth paragraph of handwritten text on the left side.

Sixth paragraph of handwritten text on the left side.

Handwritten signature or name at the bottom right.



ISSN 2091-185X

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education For All Subjects

VISION

RESEARCH REVIEW



Principal
Savitri Ushakumari Mahalingappa
Kannur Matha Te Panchayat, Kannur

CHEF EDITOR
DR. BALAJI KAMSLE



INDEX

1	Introduction	1
2	Chapter I: General Principles of...	10
3	Chapter II: The Role of...	25
4	Chapter III: The Role of...	40
5	Chapter IV: The Role of...	55
6	Chapter V: The Role of...	70
7	Chapter VI: The Role of...	85
8	Chapter VII: The Role of...	100
9	Chapter VIII: The Role of...	115
10	Chapter IX: The Role of...	130
11	Chapter X: The Role of...	145
12	Chapter XI: The Role of...	160
13	Chapter XII: The Role of...	175
14	Chapter XIII: The Role of...	190
15	Chapter XIV: The Role of...	205
16	Chapter XV: The Role of...	220
17	Chapter XVI: The Role of...	235
18	Chapter XVII: The Role of...	250
19	Chapter XVIII: The Role of...	265
20	Chapter XIX: The Role of...	280
21	Chapter XX: The Role of...	295
22	Chapter XXI: The Role of...	310
23	Chapter XXII: The Role of...	325
24	Chapter XXIII: The Role of...	340
25	Chapter XXIV: The Role of...	355
26	Chapter XXV: The Role of...	370
27	Chapter XXVI: The Role of...	385
28	Chapter XXVII: The Role of...	400
29	Chapter XXVIII: The Role of...	415
30	Chapter XXIX: The Role of...	430
31	Chapter XXX: The Role of...	445
32	Chapter XXXI: The Role of...	460
33	Chapter XXXII: The Role of...	475
34	Chapter XXXIII: The Role of...	490
35	Chapter XXXIV: The Role of...	505
36	Chapter XXXV: The Role of...	520
37	Chapter XXXVI: The Role of...	535
38	Chapter XXXVII: The Role of...	550
39	Chapter XXXVIII: The Role of...	565
40	Chapter XXXIX: The Role of...	580
41	Chapter XL: The Role of...	595
42	Chapter XLI: The Role of...	610
43	Chapter XLII: The Role of...	625
44	Chapter XLIII: The Role of...	640
45	Chapter XLIV: The Role of...	655
46	Chapter XLV: The Role of...	670
47	Chapter XLVI: The Role of...	685
48	Chapter XLVII: The Role of...	700
49	Chapter XLVIII: The Role of...	715
50	Chapter XLIX: The Role of...	730
51	Chapter L: The Role of...	745

UNIVERSITY OF...
DEPARTMENT OF...



Issue : XII, Vol. II

VISION RESEARCH REVIEW

IMPACT FACTOR
2.0048

ISSN 2250-169X
Dec. 2016 To May 2017

50



8

राष्ट्रीय सुरक्षेच्या संदर्भात नक्षलवादाची समस्या आणि उपाय

भारतभूषण वामनराव बाळबुधे
सैनिकी विज्ञान विभाग,
स्वामी विवेकानंद महाविद्यालय,
मुद्रगावड, जि. नांदेड

Research Paper - Military Science

प्रस्तावना :-

अलिकडे नक्षलवाद ही समस्या जगातील बहुतेक देशांची एक मोठी डोकेंदुखी ठरली असून जगतजेता अमेरिकासारख्या देशालाही सानोरे जावे लागत आहे. विविधतेने नटलेल्या भारत देशासाठी ही समस्या अधिक आहे. जात, धर्म, भाषा यांचे वैविध्य असलेल्या भारतासारख्या देशाला देशांतर्गत आणि देशबाहेरील शत्रू राष्ट्रांच्या संदर्भात ही नित्याची समस्या झाली आहे.

सोनेलगतचा पारंपरिक शत्रू पाकिस्थान आणि सत्तालोत्सुप चीन यांचेसोबत ज्या देशाला भारताने जन्म दिला तो बांगला देशातील घुसखोर यानुळे सुरक्षा व्यवस्थेवर एक ताग निर्माण झाला आहे. नक्षलवाद ही एक व्यापक संकल्पना असून सामाजिक, राजकीय आणि आर्थिक संदर्भांनुळे लोकशाही देशात नक्षलवादाची समस्या निराकरण करण्यासाठी मोठ्या अडचणी येतात. नक्षलवाद ही साम्यवादी पक्षातुन उदयास आलेली संघटना असून सुरवातीच्या काळात ही चळवळ मार्क्सवादी विचारसरणीवर आधारित होती. परंतु पक्षातील वैचारीक मतभेदातून या चळवळीने मार्क्स-लेनिनची विचारसरणी अंगीकारली. भारतात १९६७ मध्ये झालेल्या सार्वजनिक नियडगुळीमध्ये मार्क्स-लेनिनवादी पक्षाने सहभाग नोंदविला असता, त्यातील काही कट्टर मार्क्सवादी विचार सरणीच्या कार्यकर्त्यांनी पक्षाविरोधात बंड केले. त्यांनी सशस्त्र क्रांतीच्या आधारावर बोटार मोजत येईल अशा कार्यकर्त्यांच्या साहाय्याने सशस्त्र उठाव केला. त्यांच्या या विचारसरणीला आज नक्षलवादी चळवळ म्हणून संबोधले जाते. सद्यस्थितीत ही चळवळ भारतीय कम्युनिष्ट पार्टी या नावाने ओळखली जात आहे.

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukranabad To Mukhed, Dist Nanded

सिलीगु
मुजुमद
मुमिली
सगना
मगुन
मगोड
१.अंग
उदरी
नक्षल
विका
वनि
कली
तत्क
आदि
कमी
मकल
बनान
वंगल
नाका
मात्र
आले
बाध
छतीर
रक्षणा



STATE OF TEXAS
COMMISSIONER OF EDUCATION

OFFICE OF THE COMMISSIONER
EDUCATION

1500 WEST 21ST STREET
AUSTIN, TEXAS 78705

Dear _____:

I am pleased to inform you that your application for _____ has been approved. This approval is based on the information provided in your application and the review conducted by the _____.

The effective date of this approval is _____.

Conditions of Approval:

1. You must maintain a minimum grade point average of _____ in all courses taken during the term of this approval.

2. You must complete all required coursework by the _____.

3. You must submit a final report to the _____ upon completion of the program.

4. You must adhere to all applicable laws and regulations.

5. You must provide proof of _____.

6. You must maintain a current and valid _____.

7. You must provide proof of _____.

8. You must provide proof of _____.

9. You must provide proof of _____.

10. You must provide proof of _____.

If you have any questions regarding these conditions, please contact the _____ at _____.

Very truly yours,

Commissioner of Education



दुर्लभातून शारणाविरुद्ध स्वयंभूतासून निर्माण करणाऱ्यासाठी सशस्त्र लढा उभारला.

आर्थिक विषमता :

आदिवासी शेतकरी, कष्टकरी वर्गाचा कधी शोषण होणे, त्यांच्या जमीनी हजम करणे त्यांचे आर्थिक, शारीरिक व भावनिक शोषण भांडवलदार, जमिनदारांनी केले. त्यांची वैयक्तिक ऐक्याने जमीनीही नव्हते. प्रशासकीय क्षेत्रातही शेतकरीपासून बरे अधिकारी, नेते घट्ट आहेत परी त्यांची धारणा झाली. देशातील कायदा व सुमनसता ही बाबटोनी आहे, अशी पक्की धारणा झाल्यामुळे त्यांची सशस्त्र उठाव सुरू केला. वास्तविक भारतीय राज्यघटनेने त्यांचा केंद्र व राज्यांच्या कायद्यांमध्ये संरक्षण दिलेले आहे. परंतु विधिकाळ शासनाची व्यावधान प्रक्रिया सधोस कार्यपद्धतीमुळे विलीनात, शेतकरी कामगार, आदिवासी दलिताना व मिळणारा व्याव व जमिनदारांच्या खाजगी संघटनांकडून होणारा अत्याचार व शोषणातून मुक्त करणाऱ्यासाठी सशस्त्र उठाव सुरू केला.

साम्यवादाचा प्रभाव :

मार्क्स-लेनिन यांची शोषणापासून मुक्ती देणारी विचारसरणी आहे. इंग्लंड, जर्मनीतील कारखानदारांकडून कामगारांचे शोषण, चीन मधील जमिनदारांकडून शेतमजुरांचे शोषण या सर्वातून मुक्तीचा मार्ग म्हणजे मार्क्सवाद होय हे मार्क्सने घट्टून दिलेले आहे त्याने चीनमधील शेतकऱ्यांची कष्टक यांची जमिनदारांपासून मुक्तता करून समताधिष्ठीत समाज निर्माण केला होता. त्यांच्या या विचारांचा प्रभाव भारतातील काही जहालवादी विचारसरणीचा बुद्दजीवी उच्चशिक्षित तरुणांनी आत्मसात करून महात्मायाने चळवळीची उभारणी केली साम्यवादाचा शांततावादी विचारसरणीवर विस्तार नवून परिवर्तन हे बंदुकीच्या मज्जीद्वारे शक्य आहे. गुंबताची शोषणातून मुक्तता करणाऱ्याची हिता एकमेव मार्ग असल्याचे ते मानू लागले.

महात्मायाने भारतीय लोकशाही शासन घडवून घ्यायचे असे, बडे जमीनदार, भांडवलदार यांच्या हितसंबंधांचे जतन करणारी आहे. त्यामुळे या व्यवस्थेला ते कडवून विरोध करतात त्यांना भूमिहीन, कष्टकरी, आदिवासी शेतकऱ्यांचे म्हणजेच कम्युनिस्टांचे सरकार अस्तित्वात आणण्याचे असल्यामुळे आगत्यासाठी सत्तापरीवर्तनासाठी त्यांनी सशस्त्र लढा उभारला. या संघटनेमध्ये आदिवासी तरुण तरुणींचा सहभाग जास्त असला तरी त्यांना भंडवलदार, घनळदार, शोषणवादाचा तिटकारा वाटतो अशा सर्वांचाच सक्रिय सहभाग आहे. शेतकरी, भूमिहीन, कामगार आदिवासी वंचित घट्टातील समाज, दलित, पट्टदलित अशा शोषित वर्गांचा मोठा सहभाग असून या सर्वांना संघटीत करून जमीनदार भांडवलदार, कंत्राटदार यांच्यावर हल्ले करणे, खेडी ताब्यात घेणे शासनाचे लक्ष वेचण्यासाठी शासनाचे प्रतिनिधी, मंत्री यांच्यावर हल्ला करणे, अट्ट नेते, लोकशाही यांची हत्या करणे, वैयक्तिक

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Muzramahal To Alurhed, Dist Nanded



Issue : XII, Vol II

VISION RESEARCH REVIEW

IMPACT FACTOR
2.0048

ISSN 2250-169X

Dec. 2016 To May 2017



Issue : XII, 1
VISION RES

उडविणे, तैत्वांची बंधारे उडविणे, बॉम्बस्फोट करणे सरकारी इमारती नष्ट करणे, सरकारी मान्यतेचे जास्तीत जास्त नुकसान करणे तसेच आपल्या मागण्यांकडे तसा देणकासाठी मान्य निर्वाहविरोधी व आपल्या राजकीयमध्याची प्रसिध्दी करणे, लोकांच्या स्वतंत्रितेने जोर पसरवण्याने पाटीला मिळविणे हे त्याचे उद्दीष्ट ठेवून ते अधिकाधिक हिंसाचार करित आहेत. त्यांना उघड हिंसाचार मान्य नसून त्यांचा लढा शासन, पोलीस यंत्रणा, ब्रह्म नेते, सावकार, भांडवलदार यांच्या विरुद्ध विड स्वरुपाचा आहे. दक्षिणा न्याय मिळविण्यासाठी तंत्र्या न्याय हुक्यासाठी तडत असल्याचे मान्य त्यांच्या असा हिंसात्मक कार्यवाहीना ते ज्ञाती, विद्रोह, स्वातंत्र्य युध्द संघोषतात त्यामुळे त्यांना स्थानिकेचे सहकार्य जास्त मिळते.

न्यायवाद ही एक जीवनप्रवृत्ती आहे. राजकीय प्रेरणेतून या चळवळीचा उगम झाला असून राष्ट्रीय आणि आंतरराष्ट्रीय विचार प्रवाहाचा प्रभाव या चळवळीवर असल्याने आणि राजकीय सामासाठी हितसाधुची सहान्य केल्याने भारतात ही चळवळी फोफावती . आज राष्ट्रीय समस्या बनती आहे. हे खेदाने मान्य करावे लागते.

न्यायवादी चळवळ ही राजकीय अस्पृश्यातून दुबळ्या घटकाना मिळणारी उमेळेची वागणूक घुटभर घर्गाच्या हितासाठी राबविण्यात येणारी दिकासाठी धोरणे व टासळलेली नैतिकता वातून निर्माण झालेली आहे. परंतु या चळवळीकडे तिच्या उदयापामून कायदा व सुव्यवस्थेचा प्रश्न निर्माण करणारी टोळी म्हणूनच पाहण्यात येते. ज्या उद्देशासाठी या चळवळीचा जन्म झालेला आहे तिचा उद्देश वाजुला घडून संपुर्ण भारतावर जोर देतून सर्वसामान्य लोकांच्या मनामध्ये प्रचंड निती निर्माण केलेली आहे. आणि त्यामुळेच भारतामध्ये न्यायवादापामून राष्ट्रीय सुरक्षेअंतर्गत मोठा धोका निर्माण झालेला आहे. न्यायवादी चळवळीचे राष्ट्राच्या संदर्भातील सामाजिक ,अर्थिक आणि राजकीय प्रश्न निर्माण झाले आहेत. राष्ट्रीय समस्या म्हणून या चळवळीचे निर्मूलन खावे म्हणून काही प्रभाव उपाय कारणे शक्य आहे.

1. संमालगतच्या आदिवासी लोकवस्तीसाठी अन्न, वस्त्र आणि निवारा या मूलभूत गरजांसोबतच शिक्षण, आरोग्य सुविधा ,रस्ते ,पाणी इ. सोयी सुविधा उपलब्ध करून देणे.
2. जंगलातील आदिवासी लोकवस्तीमध्ये प्रेम,विश्वास जगोवदुर्वक सांस्कृतिक कार्यक्रम राबविणे.
3. पंचवर्षिक योजनाची प्रभावी आणि परिणामकारक अमलबजावणी करण्यासाठी प्रामाणिक अधिकाऱ्यांची नियुक्ती करणे.
4. स्थलांतरी आदिवासी बांधवांसाठी उपजीविकेसाठी शक्ती वा उद्योगव्यवस्थासाठी अर्थिक सहाय्यती व आरक्षण देणे.

1. सांस्कृतिक
 2. शैल व रंग
 3. जलियाली
 4. उद्योगव्यवस्था
 5. सुदान वल
 6. कठन वार
-
1. आधुनिक
 2. भारतीय
 3. योजना म
 4. भारतीय
 5. इंडिया इ
 6. भारतीय

(Signature)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mumbai



५. सांस्कृतिक कार्यक्रमातून राष्ट्रीय भावना निर्माण करणे.
६. केंद्र व राज्याच्या आंतरीक सुरसंवादासाठी नोकरी व्यवसायात आदानप्रदान असावे.
७. आदिवासी लोकवस्तीसंगतच्या मोठ्या जमीनदारांना विश्वासात घेऊन आदिवासींना उद्योगव्यवसायासाठी त्यांच्या मदतीसाठी आवाहन करणे.
८. भूदान चळवळीतून मिळालेल्या जमीनीचे वाटप करून आदिवासींना शेत जमीन उपलब्ध करून द्यावा.

संदर्भ सूची

१. आधुनिक स्टॅटिजीक विचारधरा तथा राष्ट्रीय सुरक्षा, डॉ. अशोक कुमार रिंग .
२. भारताच्या विघटनात्मक समस्या, डॉ. दा.धो.काचोडे.
३. योजना मासिक - ऑक्टोबर २००६, फेब्रुवारी २००७, डिसेंबर २०१०.
४. भारताची आंतर्गत सुरक्षा, अर्चना चौधरी.
५. इंडिया टुडे - एप्रिल २०१०.
६. भारतीय राष्ट्रीय सुरक्षा, डॉ.व्ही.पाय.जाधव

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist. Haveri

2017



ISSN 2454-3202

International Registered and Recognized
Research Journal Related to Higher Education for all Subjects

INDO WESTERN RESEARCH JOURNAL

(Refereed & Peer Reviewed Research Journal)

Year - III, Issue-VI, Vol.- II

**Impact Factor 2.66
(GRIFT)**

(Mar. 2017 To Aug. 2017)



EDITOR IN CHIEF
Dr. Nilam Chhangani


PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mumbai



ISSN: VI, Vol II
IWRJ

IMPACT FACTOR
2.66

ISSN 2454-1792

Mar. 2017 To Aug. 2017



INDEX

Sr. No.	Title of Research Paper	Author(s)	Page No.
1	Electronic Payment System in Banking	Sunil P. Vanjare	1
2	Increasing Trends of Mobile Banking in India	Dr. M. G. Shaikh	6
3	Study of Customer Relationship Management in Indian Market	Ravindra V. Sonule	13
4	Web Operating System Impediments	Manhamad Mukram M. Nizimoddin	20
5	The study of Satyajit Ray's Trouble in Gangtokand the theory of Vladimir Propp	Ankush V. Shinde	29
6	Geopolitics and Maritime Security in the Indian Ocean	Bharatbhushan Balbudhe	33
7	स्वातंत्र्योत्तर हिंदी नाटक	डॉ. संगीता दिलीपराव मिसे	42
8	नारी का पारिवारिक परिवेश और हिंदी कहानियां	डॉ. कुमार डी. बनसोडे	47
9	नारी विमर्श और हिंदी साहित्य	डॉ. शहाजी बाला घव्हाण	51
10	ग्रामीण विकास व स्थानिक स्वराज्य संस्था : एक दृष्टीक्षेप	शिवाजी बाबुराव मोहाळे	54

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Maharashtra To. Maharashtra Dist. Nanded

**IMPACT FACTOR**
2.66

ISSN 2454-3292

Indo Western Research Journal (IWRJ)

Issue - VI, Vol. - II

Mar. 2017 To Aug. 2017

www.irasg.com

Research Paper**6****Military Study****Geopolitics and Maritime Security in the Indian Ocean****Bharathbhusan Balbudhe***Dept. of Military Science,**Swami Vivekanand Mahavidyalaya,**Mukramabad, Dist. Nanded*

India's tryst with maritime security is often seen as being steeped in history. K.M. Panikkar writes: 'The importance of the sea came to be recognised by the Indian rulers only when it was too late.' Panikkar elucidates the conditions under which the Indian Navy had to develop: firstly, more symbolic as the Royal Indian Navy; secondly, as a force to take over the coastal duties; and thirdly, to create a naval tradition. Holmes, Winner and Yoshihara, while writing on the Indian Naval Strategy in the Twenty First Century have called history firstly, an inexact indicator when looking at the future; secondly, difficult to grasp; thirdly, influential; and fourthly, interactive. Although one can agree with these four aspects the historical aspects have steered Indian Maritime thinking, from the retention of Royal Naval traditions to the evolution of Indian maritime thinking from a coastal preponderance to a blue water navy. This evolution highlights the break out from a continental mindset driven to a large degree by the diminishment of British power, a diminishment that resulted in a rapid reduction of the maritime security blanket provided by the British in the Indian Ocean post World War II and the ingress of other powers.

Post World War II, the British, realising their diminishing power and therefore reducing influence in the region, apparently induced the US to enter in the region when the US had no significant interests. The Cold War, however, ensured that the focus within the Indian Ocean remained a subset of the US-Soviet rivalry. The end of the Cold War saw the region emerging as a relatively peaceful place with a new set of powers emerging and different dynamics coming into force. These dynamics are dictated by trade, economics and 'freedom of navigation'.

Indo Asian Scientific Research Organization (IASRO) (A Division of Indo Asian Publication)

PRINCIPAL**Swami Vivekanand Mahavidyalaya**
Mukramabad To Mukhed, Dist. Nanded



threatened by the ongoing tensions in the neighbouring areas—the Persian Gulf and the South China Sea—that could have spill-over effects in the larger region. These changes have affected the texture of security related aspects in the maritime domain of the Indian Ocean Region (IOR).

India's perspective of maritime security in the IOR has been affected by these changes and challenges, and how India has shaped its strategy to meet them.

Post Independence and Cold War Period:

History and geography in a way can both limit and, conversely, also set a limitless arena for a region's maritime security. In the Indian Ocean context, prior to World War II, the maritime security issue, mainly due to the British colonial mindset, focussed on India as the maritime centre piece of its Indian subcontinent-ruled territories, territories which were connected to India mostly by the seas. This 'British Lake' was seen by England as its domain to firstly dominate the region, secondly to connect this area to London, and thirdly to connect to the Far East. British supremacy in the region more or less remained unchallenged from the early nineteenth century to World War II till 'the entry of Japan into the Indian Ocean demonstrated clearly the entire dependence of the security of India on the mastery of the seas.' The Japanese not only captured the Andaman and Nicobar Islands but also shelled the port of Visakhapatnam on the east coast of India and paralyzed merchant shipping in the Bay of Bengal. In April 1942, the Japanese had also sunk Royal Naval ships off Colombo and Trincomalee, and their submarines were attacking shipping in the Mozambique Channel. Therefore, 'World War II left Indians even more acutely aware of their nation-state's vulnerability to seaborne perils.' During the late 1940s, a committee was formed to look into the planning requirements of the Indian Armed Forces.⁸ The committee based its reports on three assumptions:

The Geo-strategic position of the Indian Ocean Region (IOR) has risen in economic and political significance in the last two decades that have witnessed a tectonic shift in international power play from the Atlantic Ocean to the Asia-Pacific— more specifically to the IOR. There is a growing maritime awareness in the IOR as most developmental indices of the littorals are closely linked to the Ocean. The development of maritime capacity, thus, has become an imperative for national progress.

Consequently, India—to realise its economic and political potential—needs to give due importance to the seas by building adequate infrastructure and evolving a "national consensus on the usage of the seas". It is in this light that the Observer Research Foundation



expansion, including economic. Enhancing Maritime Capacity of India on August 8, 2014
The vast expanse of India's capabilities and diversity in terms of shipbuilding capacity, ports
and harbours infrastructure, shipping, human resources and technology holds the water – economy.
As now the maritime domain has a significant role in influencing the nation's economic agenda
that envisages a high GDP growth pattern. Moreover, India's desired role of being the net
provider of security to the IOR can only be assumed by growth in India's maritime capability.

As India rises as a great power it is realigning its political and security interests beyond
South Asia to fit its widening economic and diplomatic activities. A modernized and capable
naval force supports the expansion of India's reach into the Indian Ocean region, with which it
has deep historical, commercial and security linkages. The new naval posture is bolstered by
an ambitious warship procurement and construction programme that projects and expanded
aircraft carrier and nuclear-powered submarine-based multi-dimensional force into the next
decade and beyond.

Yet, major shortcomings and challenges remain, the Indian navy's force levels and
combat capabilities fall far short of its perceived requirements, with significant deficiencies.
The navy's progressive towards China's growing presence in the Indian Ocean region – arguably
its key strategic challenge – is hardening, but in the absence of sufficient resources.

Maritime Ambitions:

Notwithstanding India's global aspirations since Independence in 1947, it did not
have the economic or military attributes to match it. As a result, much of its diplomacy towards
the Indian Ocean during the Cold War years focused on the non-aligned group's rhetoric to
make it a "Zone of Peace" after the British withdrawal 'out of Sight' in the late 1950s. In the
early 1960s the Indian navy resumed bilateral exercises with Western and South-east Asian
navies after a gap of nearly 25 years. Towards the end of the decade it unwisely attempted to
raise concerns over a perceived 'vacuum' in the Indian Ocean, to be filled by itself or the
Chinese or Japanese navies. But, the Indian government did not concur with either assessment.

It was only in the early part of the last decade the government and the navy began to
share similar perspectives on naval diplomacy in the Indian Ocean. As a result, the Indian
Navy's 2004 Maritime Doctrine confidently stated that "The Indian maritime vision for the first
quarter of the 21st century must look in the arc from the Persian Gulf to the Straits of Malacca
as a legitimate area of interest." Last year the Navy's new Maritime Doctrine went further by
making a distinction between "primary" and "secondary" areas of maritime interest. The former
included traditional perspectives such as India's maritime access, the Arabian Sea and the Bay

PRINCIPAL
Shri. Vivekanand Maheshwari
Maharajad To Mahad Das Narve

of Bengal, although somewhat controversially, the Cape of Good Hope and the Mozambique channel as well. But, its focus on "Secondary areas" of maritime interest was far more significant, including the "South China Sea, other areas of West Pacific Ocean and friendly littoral countries located herein", along with "other areas of national interest based on considerations of diaspora and overseas investments", although none of this was elaborated upon.

But, the Indian government appeared more circumspect. The March 2010 annual report of the Indian Ministry of External Affairs fails to reflect such areas of maritime interests or the Navy's new focus on the South China Sea. The annual report of the Ministry of Defence the following month also remains silent over the maritime doctrine through it acknowledges India as a "maritime as well as a continental entity" while nothing its strategic geographical location in the Indian Ocean.

India's most extensive and regular forms of naval & maritime cooperation take place with Southeast Asia, which are now largely institutionalized. These include joint training, a multinational gathering of warships, joint bilateral naval exercise, coordinated and joint patrols, and in April-September 2002 the escort of 24 US-flagged high-value vessels through the Strait of Malacca- Singapore in support of the U.S.-led 'war terror'. In West Asia and the Gulf, a new area of focus for Indian naval diplomacy, it includes anti-piracy missions off the Horn of Africa and the Gulf of Aden, and bilateral naval exercises. In a significant development, the Indian navy conceived and organized the first Indian Ocean naval Symposium (IONS), a meeting of navy chiefs of the Indian Ocean region; the second meeting was organized by the UAE earlier this year.

Interests of Regional Powers:

'Re-balance' to Asia. The US 'rebalance' to Asia is a recognition of the Asian predominance in world affairs and the world economy. The shift of the centre of gravity of global economy and politics to Asia and hence the concept of Indo-Pacific is a natural corollary to India's modern version of 'Look East Policy'. This has contributed to the expansion and deepening of India's traditional relations with Southeast and East Asia and beyond, and increasing the country's interests and presence beyond the Malacca Straits.

India:

India enunciated its 'Look East' policy in 1991 which has since evolved from its nascence into our strategic vision of 'Act East'. The Prime Minister had succinctly put this policy in perspective when he said "the centre of gravity of global opportunities and challenges are shifting to the Pacific and Indian Ocean Region" This is a view which has been supported and endorsed by others, both in the region as also beyond. India's relations with China have

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad, Tamil Nadu



expansion multi fold, making the country India's largest trade partner in merchandise goods. Relations with Japan and Republic of Korea has deepened with Comprehensive Economic Partnership Agreements (CEPA) being established with both countries. These economic relationships have acquired deeper significance with the establishment of strategic partnership. India is a close maritime affairs dialogue with Japan and continuing military-to-military contact at various levels. These contacts have led to the gradual transition into multilateral exercises involving the US. The Minister 2015 was the first ever to be three nations of a size in which India has a strategic partnership with Australia which has seen vibrant cooperation between the two countries in different spheres like defence, science and industry. India has been the cooperating with many nations of the Indo-Pacific in the other way as it wants to bring a lasting peaceful order in the region. Prime Minister Modi announced a new commitment at the summit of the Forum for Indo-Pacific Strategic Cooperation (IPIC) in September 2015 under a capacity building of Pacific Island nations. India being a stakeholder in this globally strategic and the demand committee in the growth of the Indo-Pacific region. India has been a partner in the continuing fight against piracy in the entire Indian Ocean Region. India has the established mechanisms for cooperation between law enforcement agencies and discuss other the promote dialogue in maritime security and cyber security with key partners. This also support of exchanges in science and technology and promote cooperation in space applications leading to meaningful cooperation in cutting edge and popular technologies.

India-US Relations. India and the US are the world's two largest democracies that bridge the Indo-Pacific and Indian Ocean region. The 2015 agreement between the United States and India which marked a historic strategic vision for the region is indispensable in promoting peace, prosperity and stability in these regions. Some of the central issues with geo-strategic applicability highlighted in the vision are outlined below:

- 1) Support sustainable economic development and inclusive regional connectivity by collaborating with other interested partners to address poverty and support broad-based prosperity.
- 2) Support regional economic integration.
- 3) Safeguarding maritime security and ensuring freedom of navigation and over flight throughout the region, especially in the South China Sea.
- 4) Improving on all parties to ensure the freedom of the seas and peace and stability of maritime and maritime regions through all peaceful means.
- 5) Create a network of trust and the proliferation of weapons of mass destruction within

or from the region

Japan:

Japan has been a major economic power in the region whose continued pre-eminence depends on the security and stability of the Indo-Pacific Region. The Japanese national security strategy promulgated in 2013 highlights this linkage and states that "especially in the Asia-Pacific region, it is essential that Japan, as a maritime state, strengthens the free trade regime for accomplishing economic development through free trade and competition, and realizes an international environment that offers stability, transparency and predictability". An important objective of Japan's National Security Strategy is to improve the security environment of the Asia-Pacific. This was re-affirmed in the joint statement issued by Japan and India on the occasion of the visit of Prime Minister Abe to India in December 2015 where the two countries stated that "peace, stability and development in the Indo-Pacific region is indispensable to their national security and prosperity".

Australia.

Australia's location at the confluence of the Indian and Pacific Oceans has placed it in a unique position to foster regional cooperation. Australia has been deeply involved in the security calculus of the Indo-Pacific through its involvement in the ongoing anti-piracy efforts and its legacy commitments like the Five Powers Defence Agreement (FPDA). It also has a strategic alliance with the United States which is one of the pillars of its national security mechanism wherein it "cooperates on shared strategic and regional security interests including through the Australia-Japan-United States Trilateral Strategic Dialogue". Australia recognises the importance of the Indo-Pacific and "emphasises the growing significance of this geographic corridor and of India, with Australia increasingly considering its interests through this lens". The confluence of these Australian interests in the region with that of India is visible in the joint statement issued on the occasion of Prime minister Modi's visit to Australia in November 2014 wherein both countries are "working together more closely to build a safe and prosperous region"

Regional Security:

With regard to regional associations SAARC (South Asian for Regional Cooperation) appears to have run aground on the rocks of subcontinental obduracy because of cross border terrorism affecting, Jammu & Kashmir, The India Ocean Rim- Association for Region Cooperation (IOR-ARC) which Nelson Mandela during his state visit to Delhi in Jan. 95 declared as 'the natural urge of the facts of history and geography that Nehru spoke of should

...through itself
...operation
...owing to the
Africa with M
Council) tend
into Jehad, cul
sign, a Muslim
against comm
Ethiopia

...movement an
maintain their
days. Only As
regional vehic
involving mar
cooperation in
has taken a nu
alliance with m

The m
from conflict
communities o
of mankind - th
link ocean for
aspirations of t
in managing m
the world's cul

The en
by the advent o
participation w
for a better tom
the mismatch
corruption but
importers due
Militaryisation
The m

Indo Asian Sci

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhad Dist. Nanded.



broaden itself to include exploring the concept of an Indian Ocean Rim for socio-economic cooperation and to improve the lot of an developing nations' is unfortunately in shallow waters owing to the pulls and pressures of the main actors India, Australia and to an extent South Africa with Mauritius being the interlocutor. In the South West, the GCC (Gulf Coordination Council) tends to be enmeshed in Arab politics and Islamic issues which has metamorphosed into Jihad, cultural and International terrorism with the events of 11 Sepf. More than a decade ago, a Muslim analyst observed that there were signs of the free floating hostility directed against communism gravitating to Islam.

Ethnic conflicts, famine and lack of effective governance has prevented any significant movement among the nations in the Horn of Africa. Similarly East African states failed to maintain their cooperative relations delineation of land boundaries inherited from their colonial days. Only Asean (Association of South East Asian Nations) has established itself as a sub regional vehicle for cooperation in economic affairs and has recently addressed security matters involving maritime cooperation in SE Asia. Apec has also been active in furthering regional cooperation in shipping and maritime safety. The Transportation working group under APEC has taken a number of initiatives to facilitate ocean trading communities which have a strong alliance with maritime security.

The environment in the Indian Ocean changed from geostrategy to geo economics, from conflict to commerce as also from a continental to a rimland outlook which merits world communities such as Japan, India, US and EU to take necessary steps to safeguard the heritage of mankind - the Oceans. The volatile Indian Ocean with its neo geo-politics thus became the link ocean for human sustenance as also energy flows to achieve the politico economic aspirations of the people particularly of developing countries and this has contributed to changes in managing maritime security in this region where only 10 littorals are privy to 65 percent of the world's oil reserves.

The emphasis also shifted from Euro-Atlantic to Asia-Pacific which was accelerated by the advent of ocean trading blocs which brought in its wake broader strategic and economic participation with an annual traffic of 70,000 ships traversing the link Indian Ocean. In planning for a better tomorrow, India needs to urgently focus on updating port infrastructure in view of the mismatch between capacity and demand for cargo handling which not only encourages corruption but also imposes a penalty of \$ 250 million per annum on India's exporters and importers due to the slow turn around of ships as estimated by the World Bank.

Militarisation of the Indian Ocean:

The militarisation of the Indian Ocean will continue as currently five Carrier groups



from US and UK and support ships from other nations including Japan have initiated action from the sea against the terrorists operating from Afghanistan. The Gulf with its oil resource will remain the hot spot in the region to ensure the transport of energy to Europe, Japan, USA & Industrializing China. India's Navy will have to play a major part in this region with Asean keeping the Malacca Straits free of regional politics. Japan's Maritime Self Defence Force (JMSDF) with four escort flotillas, armed with missiles as also six divisions with 17 submarines fitted with Sub Harpons and with largest number of P3C Orions outside needs to project her naval potential to ensure cooperative and compressive security in their region of responsibility.

India will also require to modernise and expand her two fleet navy as per the sanctioned strength approved four decades ago by the Indian Parliament for which the new naval base at Karwar is being constructed. There is another compelling reason which had been utilized during the cold war by USA to target ballistic missile from the Arabian sea to the soft under belly of the Soviet Union. It is now an ideal platform for the tactical land attack missiles such as the Tomahawks for prosecuting littoral warfare by long range strikes from the sea to targets in Afghanistan when denied air basis in surrounding countries. The presence of several thousands of Arabs and Pakistanis assisting the terrorists was exposed during the capture of Kundah with the plea from Pakistan for a safe passage for their nationals after 3000 of them, mostly professional terrorists who have operated in Kashmir, have been killed.

Organizations such as Gulf co-operation Council should be encouraged to play a greater military role against terrorism provided that USA exerts more pressure to resolve the Israeli- Palestine issue.

The US can be expected to reestablish the relationship with Iran as the latter straddles the choke point of the Straits of Hormuz. Iran's has in turn withdrawn its call for the export of Islamic revolution which was a threat to the Gulf and instead has spelt out the need for a dialogue to ensure peace and stability in this region.

And finally the geopolitics of oil is likely to exacerbate the instability of the region. The US central command will be of a greater importance to the US strategic community in view of requirement to ensure the safety of hydrocarbons in South West Asia which accounts for almost 65 percent of Asian oil consumption. This has resulted in an increased number of tankers and LNG/LPG carriers whose safety will be one of the major security concerns in the region.

As geopolitical power shifts from the Atlantic to the Pacific, policy-makers in the European Union (EU) ought to pay closer attention to the vast maritime region that lies in between: the Indian Ocean. All major powers rely on the so-called Great Connector that

stretches from
Asia are acc
needs.

Acti

and Austrai

Indian Ocean

Pakistan. Ma

The absence

Ocean make

classical secu

and quietly m

More

given rise to r

human and di

along the Ho

commercial

(WFP) rece

individuals in

for ordinary c

secure an illic

Referenc

1. Sarahy
Insto
2. Dr. P
Chall
3. Dr. R
Paper
2010
4. Gopa
Ocea
5. Vice
Ocea
6. The I

Indo Asian Sc



stretches from the Cape of Good Hope to the Strait of Malacca. The rising economies of East Asia are acquiring more and more purchasing power and need to secure increasing energy needs.

Actors such as the EU and its member states, China, India, the United States, Japan and Australia are steadily increasing their naval presence and their military capabilities in the Indian Ocean and in various strategic positions along its rim. Smaller naval powers such as Pakistan, Malaysia, Singapore and South Korea are also expanding their activities in the region. The absence of a comprehensive multilateral agreement on maritime security in the Indian Ocean makes this force projection dynamic highly problematic. It bears the trademarks of a classical security dilemma. Many actors harbour suspicions about the others' ulterior motives and quietly mobilize for rougher times.

Moreover, many countries in this region are politically unstable. This has given rise to non-conventional security challenges in the Indian Ocean such as piracy, human and drug trafficking, as well as maritime terrorism. The precarious security situation along the Horn of Africa is particularly noteworthy in this regard. Violent insurgencies are commonplace and threaten the political stability of the entire region. The World Food Program (WFP) recently reported 'over 400,000 internally displaced persons and war-affected individuals in Yemen's northern region' (WFP, 2013: 152) alone. As the sources of insecurity for ordinary citizens are so profound, some people have turned to the adjacent high seas to secure an illicit income through piracy.

References :-

1. Sarabjeet Singh Parmar, "Maritime Security in the Indian Ocean" An Indian Perspective, Institute for Defense studies, Vol.8 No.1, January-March 2014, PP- 49-63.
2. Dr. P. K. Ghosh & Sripathy Narayan, "Maritime Capacity of India : Strength and Challenges."
3. Dr. Rahul Roy Chaudhary, "Maritime Ambitions and Maritime Security", Discussion Paper 5th Berlin Conference on Asian Security, Berlin September 30- October 1, 2010.
4. Gopal Sum, Case for a Regional Maritime Security Construct for the Indo Pacific, Occasional Paper, January 2010, Vivekananda International Foundation New Delhi.
5. Vice Admiral Mihir Roy, "Maritime security in South West Asia", Society for Indian Ocean Studies.
6. The Hague Institute for Global Justice, Netherland.

ISSN 0970-0377

RNI MAHARAJA 0280N/2010/33481

International Registered & Recognized
Research Journal Related To Higher Education for all Subjects



(Refereed & Peer Reviewed Research Journal)

Year-IX, Issue - XVII, Vol. - X

Impact Factor - 4.55
(GRID)

Jan. 2018 To June 2018

INTERLINK RESEARCH ANALYSIS

Editor In Chief
Dr. Balaji Kamble

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Akkumabad Tal. Akkum Dist. Nanded



www.interlinkresearch.com

Interlink Research & Analytics

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0177

Issue XVII, Vol. X, Jan 2014 To June 2014

INDEX

Sr. No	Title for Research Paper	Page No.
1	The Role of Credit Rating in Capital Market Investment Decision Making Dr. A. J. Raju	1
2	Frustration and Anger of Jimmy Porter in John Osborne's Look Back in Anger Ankush V. Shinde	8
3	India: Strategic Challenges and Responses Dr. Bharatbhusan V. Balbude	10
4	Legal Validity of Buddhist Marriages Dr. K.S. Waghmare	23
5	'जान से प्यारे' एकाकी में विनित वर्तमान समाज की वास्तविकता डॉ. प्रविण कांबळे	29
6	स्त्री वर्गचे आर्थिक व सामाजिक प्रश्न डॉ. टी. ए. मोरे	32
7	महाराष्ट्रातील पाण्याची समस्या आणि उपयुक्त जलसाठा - एक अभ्यास डॉ. बालाजी ग्यानोबा कांबळे	37
8	हैदराबाद मुक्तिसंग्राम भारत माधवराव मुस्कावाड	43


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mumbai-40, Maharashtra



India: Strategic Challenges and Responses

Dr. Bharathbharan V. Balbude
Military Sciences,
Swami Vivekanand Mahavidyalaya,
Mulumabad, Dist. Nanded

3

Research Paper - Military Sciences

Introduction :

The above subject has been primarily dealt from the foreign policy and security point of view. Many believe that strategic challenges should now include those relating to energy, environment, population, food, health, climate change and the like. With the end of the Cold War and the perception that all-out conflict between the principal powers is now out of the question as everyone has too much to lose, attention has shifted to non-military challenges. The phenomenon of globalisation has contributed to this changed perspective. Countries have got tied together increasingly through global economic integration and therefore their prosperity has become intertwined. Nothing is to be gained by capturing territory and acquiring resources through the use of force. It is better to capture markets and acquire control over resources through investment.

Economic prowess and technological innovation enable countries and corporations to exercise global power without the burden of governing foreign lands and peoples. That is why so much importance is being given to innovation for survival in what is becoming a highly competitive world. Some of this may be true, but this is looking at the world from the perspective of the West. The collapse of the Soviet Union ended the military challenge to the US, leaving it as the only global power. It also ended a military threat to West Europe.

With the incorporation of East Europe into the European Union and the dismembering of Yugoslavia, Europe has secured peace within its frontiers. Consequently, the West stresses non-military threats or threats by non-state actors as the real strategic

challenges to
affairs. India
India
quite apart from
system are to
today is a strong
West faces. V
is to bring into
high levels of
economic power
population, to
burden biggest
security challenge
largely set by
channeling to
the most.
India's Unique
India
biggest economic
natural and its
nuclear weapon
country with
also globally
determination
one of the world
can enable us
by them is the
The
expected to
and reputation

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mulumabad To Mulumabad Dist. Nanded



challenges to its security, prosperity and traditional dominance of international affairs. **India's Perspective:**

India's perspective has to be different. We are still vulnerable to traditional threats, quite apart from those emanating from non-state actors. The structures of the international system are biased against countries like India. Changing them to reflect the realities of today is a strategic challenge for us. This is exactly the opposite of the challenge that the West faces. We are a country still ravaged by poverty, and, consequently, our challenge is to bring modest levels of prosperity to all sections of the population. It is not to protect high levels of prosperity already reached from being threatened by the shifts in global economic power. Of course, all the other challenges pertaining to energy, environment, population, food, health, climate change etc face us too, and this makes the totality of our burden bigger and more complex. Worse, we have to confront these broader, non-security challenges in a position of disadvantage, as the terms of debate on these issues is largely set by the West, again with a view to preserving its privileged positions and channeling decisions by the developing countries in directions that suit western interests the most.

India's Unique Strategic Challenges:

India's strategic challenges are in many ways quite unique. We are among the biggest countries demographically and geographically; we are endowed with considerable natural and human resources; our industrial and technological base is sizable; we are a nuclear weapon state with impressive space capabilities; we are an old civilization. A country with these attributes cannot but play an important role, not only regionally, but also globally. Even if we seem to lack a thirst for power and do not pursue it with determination and a clear sense of purpose, we will not be able to survive without being one of the world's foremost powers. Only growing political, economic and military strength can enable us to confront the challenges we face, as otherwise we will be overwhelmed by them in the years ahead.

The focal point of each and every international activity conducted by a state is expected to enhance the best image of the nation to achieve the maximum possible benefits and reputation among the global community. Thus interactions among the states, bilateral,

PRINCIPAL
Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mubramat Te Mahad Dist Nashik



trilateral or multilateral whatever is the nature it must be systematic and based on certain well defined principles to achieve the specific objectives or desired goals. That national goal is provided by a nation's foreign policy by using different mechanisms or diplomacies including negotiations, dialogues and even sometimes war etc. While determining their principles the states are required to work within the limits of their strengths and realities of the internal and external environment. Keeping in mind such limitations and realities, statesmen and diplomats hardly can dare to go against the prevailing domestic and global situation that impose limitations upon their planning and, to a considerable extent, predetermine their course of action. In fact, foreign policy of any nation is determined by so many factors, some of them are relatively stable than others and be regarded more basic and unchangeable determinants of foreign policy. It does not mean that other factors are not considerable and have no importance during the formulation of foreign policy of any nation, because foreign policy is never determined by one factor or set of factors, but it is the result of interplay of a large number of factors which affect foreign policy in different ways in different circumstances.

Geographical and strategic position of a nation is one of the most important factors in international politics. For example, strategic condition of Israel -very close to Africa, Asia and Europe- compels the Western powers to have an amiable relationship with farmer and many analysts even account the establishment of Israel in the region as to influence the Middle East full of liquid wealth and the Suez Canal which provides a shortest sea route linking Asia Africa and Europe. With this geo-strategic understanding and background an attempt has been made to highlight the India's place in international politics, more specifically: (a) How should India behave with the international community to maximize the national interest and (b) What should be the proper place of India among the nations of the world.

India's Geopolitical Imperatives:

The geography of the subcontinent constrains the behavior of governments that arise there. If there is to be an independent India, and if it is to be a stable and secure nation-state, it must do the following things:

Achieve suzerainty in the Ganges River basin. The broad, braided plains of the

Gang
popu
not
coalit
as Ba
or sec
Expas
Fores
that li
infor
only t
the G
Adva
basin
only
acces
has re
With
a cent
any fi
acts a
subcc
These
regardl
as a country,
imperatives d
foreign that w
The Emergh
The i
and was pred

(Signature)

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidya
Mukramabad To Mukhed, Dist. Nanded



Ganges basin are among the most fertile in the world and guarantee a massive population. India must become the premier power in this heartland. This does not

coalition of powers can be functional, and even somewhat hostile powers such as Bangladesh can be tolerated so long as they do not challenge India's authority or security.

Expand throughout the core of the subcontinent until it reaches all natural barriers. Forests, hills and rivers aside, there is little else in the confines of the subcontinent that limits India's writ. "Control" of the additional territories can be a somewhat informal and loose affair. The sheer population of the Ganges basin really requires only that no foreign entity be allowed to amass a force capable of overwhelming the Ganges region.

Advance past the patch of land separating the Ganges basin from the Indus River basin and dominate the Indus region (meaning Pakistan). The Indus Valley is the only other significant real estate within reach of India, and the corridor that accesses it is the only viable land invasion route into India proper. (Modern India has not achieved this objective, with implications that will be discussed below.)

With the entire subcontinent under the control (or at least the influence) of a centralized power, begin building a navy. Given the isolation of the subcontinent, any further Indian expansion is limited to the naval sphere. A robust navy also acts as a restraint upon any outside power that might attempt to penetrate the subcontinent from the sea.

These imperatives shape the behavior of every indigenous Indian government, regardless of its ideology or its politics. They are the fundamental drivers that define India as a country, shaped by its unique geography. An Indian government that ignores these imperatives does so at the risk of being replaced by another entity whether indigenous or foreign that understands them better.

The Emerging International Security System and India:

The international security system during the Cold War was based on bipolarity and was predictable. During this period, the world survived without major wars in a


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhed. Dist. Nanded



highly competitive security regime between the United States and the Soviet Union. Most of the Third World aligned with either the US or the Soviet Union camp. But many of the Third World countries could not secure themselves from the threats of intra-regional rivalry as in South Asia, West Asia and the Korean peninsula. For these countries, management of national security became a highly challenging task. However, India managed its national security in a satisfactory manner during this period. Its policy of non-alignment and strategic understanding with the Soviet Union paid off. Due to the predictability of the strategic patterns during the Cold War, India was in a position to objectively assess the intensity as well as the direction of threats to its security. That helped India in exercising proper policy postures and responses. The end of the Cold War has brought about major consequences for the international security system, and hence new policy problems for various states in the developing world. Now the predictability of the Cold War has given way to uncertainty and complexity. Many of the strategic assumptions of the past have changed.

India's Internal Security Situation:

The challenges to internal security in India can be categorized into four broad threats viz. cross border terrorism in Jammu & Kashmir, militancy in the North East, Left Wing Extremism (LWE) in certain states and terrorism in the hinterland. The Government has been making systematic and unrelenting efforts to counter these threats and, as a result, the internal security situation in the country is firmly under control. There is steep decline in terror attacks in the hinterland and the violence perpetrated by LWE. However, developments in Jammu & Kashmir and Punjab have been a cause of concern, especially the cross-border terror attacks and trafficking of arms & narcotics.

The overall security situation in J&K remains stable in spite of the focused efforts of separatists and terrorist *tanzeems* to disrupt the prevailing peace. This was primarily due to the protracted operations of the Security Forces in the hinterland and effectiveness of the counter infiltration grid on the Line of Control/International Border. However radicalization and fresh recruitment in South Kashmir is a cause of concern. External factors, including the changing situation in Pakistan and Afghanistan, may also impact the internal situation in Jammu & Kashmir.

The :
terms of redia
of violent inc
civilians kille
Mizoram and
incidents, the
increase in va
of unilateral i
able to contac
for Peace bet
(Issac-Murva
country's side
of Front of A
encouraging
Government o
against the N
Garro Nationa
to the fighting
and (RD) fac
Left's
security of the
various effort
LWE affecte
desertions, be
Maoist cadre
The Backdr
India
sustained gro
China's One
transformati

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist Nanded



The security situation in the North Eastern States has been gradually improving in terms of reduction in number of violent incidents and lower civilian casualties. The number of violent incidents has come down from 1025 in 2012 to 574 in 2015 and the number of civilians killed has come down from 97 to 46 in the same period. The states of Tripura, Mizoram and Sikkim are by and large, peaceful. In Arunachal Pradesh, barring a few incidents, there is general atmosphere of peace. In Manipur and Nagaland there was increase in violence against Security Forces by the extremist groups in 2015 in the wake of unilateral abrogation of ceasefire by NSCN-IM. In Meghalaya, security forces were able to contain the violent activities of the militant groups. The signing of the Framework for Peace between the Government of India and the National Socialist Council for Nagaland (Issac-Muziah) [NSCN (I-M)] in August 2015 was a positive step towards ending the country's oldest insurgency. The extradition of Anup Chetia, a prominent United Liberation of Front of Assam (ULFA) leader, by Bangladesh to India in November 2015 was an encouraging development that may help in the success of peace talks between the Government of India and ULFA (pro-talk) leaders. Successful counter insurgency operations against the National Democratic Front of Bodoland - Songibit [NDFB (S)] and the Garo National Liberation Army (GNLA) by the security forces have dealt a severe blow to the fighting capabilities of these insurgent groups. Talks are continuing with NDFB (P) and (RD) factions to resolve Bodo issues.

Left Wing Extremism (LWE) continues to be an area of concern to the internal security of the country. However, LWE violence has been declining over the years due to various efforts of the Government such as greater presence of security forces across the LWE affected States, loss of cadres/leaders on account of arrests, surrender and desertions, better monitoring of development schemes and insurgency fatigue among Maoist cadres.

The Backdrop: India Strategic Environment:

India's strategic environment is turbulent. China's rise has supported a decade of sustained growth in Asia, but has also placed unprecedented stress on the security order. China's One Belt One Road (OBOR) initiative for westward connectivity is potentially transformative, but likely to worsen those pressures. The American pivot to Asia is in its


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Tal. Akhmed. Dist. Nanded



RNI MAHMUL02805/2010/33461

Interlink Research Analysis

IMPACT FACTOR
4.55

ISSN 0976-0377

Issue : XVII, Vol. X, Jan. 2018 To June 2018

16



RNI. M

Interli

nascent stages, but Asia's hub-and-spokes alliance system is evolving as middle powers question Washington's commitment, grow more active, and forge deeper ties with one another. India fits this trend of internal and external balancing against China, moving steadily closer to the United States and Japan and so deeper into the security system of maritime Asia. In contrast to these slow-moving processes, an emerging power vacuum in Afghanistan could threaten Indian power and security much sooner. The space from the Mediterranean to the Arabian Sea is undergoing even more rapid state breakdown, with Saudi Arabia and Iran competing in the interstices.

India, then, is uniquely situated between state-centric great power competition to the east and state-fragmentation to the west. Each places divergent demands on Indian defence posture, at a time when India's leaders are increasingly embracing the prospect of new security responsibilities farther from Indian soil. Yet India faces these challenges with more partners and suitors than ever before, with its domestic security environment the calmest in decades, and from a position of economic strength.

The Broader Strategic Environment:

This survey should not be taken to mean that Africa, Europe, or Latin America are unimportant to India. But in the context of defence preparedness, India's strategic environment is most powerfully shaped by South Asia, Asia-Pacific, and West Asia. These regions present radically different challenges, with fragmentation to the west and great power competition to the east, but common to both is that older US-led security architectures are under strain from a changing balance of power and changing threats. Seapower will be crucial in both directions, but much more so to the east, indicating greater long-term resource allocations to the Indian Navy. India's ability to shape outcomes in these places will depend on how deeply it wishes to become involved. For now, particularly in maritime Asia, it has secured influence without intervention largely as an expanding force-in-being. The extent of India's future influence will be shaped by continued economic growth, economic and military reforms, Indian signaling around foreign and security policy, and potentially social and political stability at home.

More broadly, India also faces an environment in which the "global commons" air, sea, space, and other domains like cyberspace are perceived to be under stress,

weakening
Pessimists p
lanes of the
space debris
up, and the i
the world be
environmen
zones.

A r
military suk
challenges.
military is n
terrorism ar
strategic gu
National S

Wit
threat', the r
defence pol
Mar
Def
spa
Phy
ter
earl
Ma
dur
Ena
war
Pre
civ

PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabod Ta. Mukher. Dist. Nanded




weakening the liberal international order on which India depends for stability and trade. Pessimists point to, inter alia, China's militarisation of reclaimed islands in the crucial sea-lanes of the South China Sea, the development of anti-satellite weaponry and problem of space debris, competition in resource-rich Arctic waters as the Northwest Passage opens up, and the intensification of cyber-espionage from India's partners and adversaries. As the world becomes more networked, these domains are as much part of India's strategic environment – and therefore considerations for defence policy – as traditional geographic zones.

A 'national defence policy', in the Indian context, would majorly have to be a military sub-set of the national security strategy for dealing with external threats and challenges, taking into account the specific components of internal security which the military is mandated to deal with, namely, counter-infiltration, counter-insurgency, anti-terrorism and disaster management. Thus, to start off with, one would have to look at strategic guidance for the possible formulation of India's national security strategy.

National Security Strategy Guidance: For Military-Related External Threats:

With regard to 'defence of India's national territory and resources from an external threat', the related national security strategy issues which must be addressed by a national defence policy, are as follows:

- Maintain credible military deterrence against potential adversaries.
- Defend our national and territorial interests on land, sea, air, space and cyber space.
- Physical guarding and/or surveillance of land, air and maritime borders, island territories, off-shore assets and trade routes, especially disputed borders, for early detection of intrusions or threats, if any.
- Maintain a tri-Service rapid response capability to respond to security challenges during war and peace.
- Ensure a fool-proof and well coordinated intelligence mechanism to provide early warning of threats, both external and internal.
- Prevent attacks in the cyber and information domains against own defence and civilian networks and capabilities.


PRINCIPAL
Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Muramba Te. Muramba, Dist. Muramba



Build up/ strengthen a strong military technology base and related indigenous capability for manufacture of arms/ ammunition/ equipment to enhance self-reliance and prevent external pressures during crises.

National Security Strategy Guidance: For Internal Security Threats:

Other aspects related to India's national security where the military is mandated to take necessary action are as follows:

Protect national interests against internal threats like terrorism (including nuclear terrorism), insurgency and militancy with a view to negate secessionist and related destabilizing efforts.

Promote and protect the core values of democracy, secularism, freedom, unity and human rights as enshrined in our Constitution by value-based ethics and practices as well as providing aid to civil authority, when requisitioned.

Maintain close surveillance and monitoring of the internal security situation in areas of heightened threat.

Maintain rapid response capability against terror strikes/ hostage taking, involving multiple agencies, both police and military, including the National Security Guard (NSG) and Special Forces (SF).

Promote peace and stability in the region through cooperative economic development backed by diplomatic initiatives for resolution of disputes and conflicts.

Promote regional cooperation and coordination for early detection of regional/ transnational cross-spectrum threats, to neutralise the same in a timely and proactive manner.

Provide Humanitarian Assistance and Disaster Relief (HADR) support in the region, when required/requested.

Contribute towards selective capacity-building in the military domain among neighbouring and other friendly countries.

Neutralize anti-Indian efforts/propaganda by potential adversaries/ inimical elements.

Promote/protect diaspora interests in the region and the world. Establish strong

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad Ta. Mukhad. Dist. Nanded



The Context

With

and high exp

economic gro

a major turni

struck a chor

unfulfilled as

denied earlier

enormous cha

new path. Wl

It is

policies and c

a more secure

again a turbuk

are changing

India is no lon

external deve

to survive are

it must then s

capabilities a

comprehensiv

In ord

posture and re

annual defen

signing a plet



and mutually beneficial relations/strategic partnerships with other countries, and regional/global security groupings, including the United Nations, through defence cooperation, anti-piracy, counter-terrorism and peacekeeping activities.

Promote security interests at the global level, including coordination of security, intelligence and cyber issues.

The Context:

With a new government in place since India in May 2014, there are fresh hopes and high expectations. The last few years and more had seen a sharp decline in India's economic growth and along with it, much of its global promise. The elections represented a major turning point. Prime Minister Modi's call for good governance and development struck a chord amongst the people. They felt that instead of subsidiary sops, their many unfulfilled aspirations at last had a promise of realisation. They gave Modi what they had denied earlier governments in Delhi a clear majority in Parliament. In turn, this has put an enormous challenge on the new government to deliver, but also an opportunity to strike a new path. What then are the implications for Indian security in the decades ahead?

It is in this backdrop that we need to look afresh at our defence and security policies and chart a pragmatic course to allow the pursuit of India's national interests of a more secure, prosperous and fulfilling life for all its citizens. The world is entering once again a turbulent, complex and unpredictable phase of global competition. Power balances are changing, new power centres are emerging and fresh alliances are being formed. India is no longer a nation that responds to the will of others and adjusts its policies to fit external developments. Today, it is an autonomous actor on the world stage and in order to survive and prosper, must carefully carve for itself an independent space. A space that it must then secure, not as much with military force, as with a complex web of national capabilities and strategic coalitions. Simultaneously, India must utilise this time to build comprehensive national strength.

In order to achieve this, it will be imperative that it reviews and realigns its defence posture and reorients its foreign policy. This is a task larger than altering priorities in the annual defence budget, or building force structures to counter yesterday's threats, or signing a plethora of often meaningless 'strategic partnerships' with countries far and


PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To. Mukhod. Dist. Nanded



near. A fundamental review of security and foreign policy is required based on revolutionary changes taking place all around us. This is reflected by the changes in global geo-politics, with the sudden rise of China and the emergence of "radical Islam" in West Asia. Revolutionary developments are taking place in science and technology, which, in turn, is altering fundamentally the role of force in international relations. Future wars will differ dramatically from the ones fought in the 20th century. In addition, the India of tomorrow will have to prepare for new threats in the maritime environment. From kinetic weapon systems, we will have to acquire space-based systems, knowledge warfare capabilities and cyber Defence potential.

National policies will also have to be long-term, focusing on synergizing the whole of government effort. For a large country like India, securing national interests calls for close coordination among all government departments and establishments. Silo-based responsibilities will no longer suffice. There has to be greater integration of policies under an expanded executive office, which many countries define as a National Security Council or the Office of the Head of State. These will function increasingly as already doing in many other countries as planning and monitoring offices overseeing all government functions, bringing each into harmony under a single executive authority.

CHANGING REALITIES: A NEW SENSE OF URGENCY:

Over the last few years, a greater sense of urgency has prevailed in India's strategic environment. Several factors account for this new urgency.

India At Odds With Pakistan, and the China Factor:

For a number of years, conflict between India and Pakistan has caused a South Asian arms race of great proportions. However, more recent events, such as the 1999 Kargil conflict and the November 2008 Mumbai terror attacks, have heightened India's quest to stockpile arms. In the decade that has followed Kargil, the value of India's arms purchase deals has crossed U.S. \$50 billion, with every sign indicating that this figure will surpass U.S. \$100 billion over the coming decade. India's arms acquisitions have more than doubled between 1999 and 2004 (U.S. \$15.5 billion) and 2004 and 2009 (U.S. \$35 billion). In fact, the defense ministry has inked over 450 arms contracts worth over U.S. \$30 billion in just the last three years.

Pakistan military agencies partner in the aid, including prowess is far and a half time
The India-C

For q
China have be
influence has
for both coun
neighborhood
neck, which c

How
China is dev
Chinese nucle
projects in Ne
deep-water p
two naval bas
East Africa, a
officers spea
western Paci
SECURING

Even
years, it will
of millions of
compounde
and energy).

Due
likely to dee

PRINCIPAL

Swami Vivekananda Mahavidyalaya
Mukramabad-To Mukherjee, Dist. Haridwar



Pakistan and China, the two countries that concern India the most, have large military agendas in place. Pakistan, a former Cold War ally of America's and now a partner in the U.S. war against terror, has continued to receive large amounts of military aid, including state-of-the-art F-16 fighters. Pakistan is assisted by China, whose military prowess is far ahead of India's. China's officially declared defense budget is nearly two and a half times India's.

The India-China Indian Ocean Region Tussle :


For quite some time, and particularly as their economies have grown, India and China have been eyeing each other's influence in the Indian Ocean Region (IOR). Such influence has significant strategic, military, transport, energy, and commercial implications for both countries. India has long been wary of the bases being set up by China in India's neighborhood—a policy that has been described as a "string of pearls" around India's neck, which can easily be tightened should the need arise.

How is this string of pearls strategy being implemented? First, in Gwadar, Pakistan, China is developing a deep-water harbor that could be used by an expanding fleet of Chinese nuclear submarines. Second, China is developing ports and other infrastructure projects in Nepal, Sri Lanka, Myanmar, and Bangladesh. Third, China is helping build a deep-water port in Hambantota on Sri Lanka's southern coast. Fourth, China is building two naval bases in Myanmar. And fifth, major Chinese investments are being made in East Africa, and particularly in Kenya and Tanzania. Over the long term, Chinese naval officers speak of developing three ocean-going fleets to patrol Japan and Korea, the western Pacific, the Strait of Malacca, and the Indian Ocean.

SECURING INDIA'S FUTURE:

Even as India works assiduously to safeguard its national security in the coming years, it will increasingly need to take steps to strengthen human security as well. Hundreds of millions of Indians are malnourished, impoverished, illiterate, and ill. Such suffering is compounded by the country's rampant resource shortages (particularly those of water and energy).

Due to population growth and climate change, India's resource constraints are likely to deepen in the years ahead. Such shortages have major implications for both


PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist Nanded



national and human security. The risk of tensions between Indian states over groundwater distribution, as well as of regional tensions with Pakistan over Indus Basin river water resources, could be significantly heightened. Additionally, with less water for irrigation, existing food insecurity could worsen. In fact, even now, many of India's internal and external security concerns are intertwined with natural resource issues. The Maoist insurgency exploits resource misallocations suffered by tribal communities. Residents of electricity-deficient Jammu and Kashmir seethe at New Delhi's refusal to develop more power projects, and decry the paltry proportion of electricity they receive from the state-owned facilities that do exist there.

References :-

- 1) Philij Compose, "India's National Security Strategy", Imperative of Integrating Defence Policy, CLAWS Journal, Winter 2016
- 2) Dipankar Banerjee, "India's Defence and Security in the 21st Century", CLAWS Journal, winter 2014.
- 3) Shashank Joshi, "India's Strategic Environment and Adversaries", Defence Primer India At 75, Sushant Singh & Pushpen Das (ed.) Observer Research Foundation, 2016.
- 4) Rajpal Budania, "The Emerging International Security System : Threats, Challenges and opportunities for India", Strategic Analysis, Vol. 27, No. 1, Jan-Mar 2003.
- 5) Siddharth Srivastava, "India's Strategic and Political Environment, New Delhi.
- 6) Michael Kugelman, "Looking In Looking out : Surveying India's and External Security Challenges. India's Contemporary Security challenges
- 7) Michael Kungelman (ed.) Woodrow wilson International Center for Scholars, Washington D.C. 2011.
- 8) India : Strategic Challenges and Responses, "Vivekananda International Foundation, New Delhi, 2013.
- 9) Zafar Alam, "Geo-Strategic dimensions of India's Foreign Policy, www.ijsr.net.
- 10) Ministry of Defence, Government of India, Annual Report 2015-16
- 11) Dr. George Friedman, "The Geopolitics of India: A shifting self-contained word," Dec. 16, 2008, www.wikileaks.org.

PRINCIPAL

Swami Vivekanand Mahavidyalaya
Mukramabad To Mukhed, Dist Nanded

Dr. ...
1956. Dr. ...
followers ...
and adopt ...
1936. The ...
was in the ...
social equa ...
fraternity ...
Dr. Ambed ...
broken ma ...
accepted a ...
economic ...
system. Dr. ...
from unjust ...
Dalit's of ...
tied in vari ...
were conti ...
This total ...
Dr. ...
slave ment ...
for modern